अर्द्धांगिनी

(लघु कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-४२-६

गाम- बेरमा, पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया
जिला- मधुबनी ८४७४१०

मूल्य : भा. रू. २००/-
पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन :
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com
मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२
अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल
डिस्ट्रिब्यूटर:
पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल) मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

***Ardhangani** : A collection of maithili short story*
by
Jagdish Prasad Mandal.

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन- कृषि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन

संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-कविता-नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ ई अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहला अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ व्याख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीवनक यथार्थकेँ यथावत् चित्रित कऽ मानवीय संवेदनाकेँ उद्बुद्ध करब हिनक रचना सबहक प्रधान विशष्टता रहलनि अछि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास ऐ तीनू कारकसँ सम्बलित हिनक रचनावलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तेकर समाधानक दिशा भेटैत अछि। वर्त्तमान जीवनमे होइत नित्य नूतन परिवर्त्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करब हिनक कथाक विषय-वस्तु रहलनि अछि जेकरा ई सहज रीतियें प्रस्तुत करैत रहल छथि।

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा छी। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा-निराशा, सुख-दु:ख, हर्ष-उल्लास आ जीवन-संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक ओ राजनीतिक जीवनमे होइत परिवर्त्तन सभकेँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा ई अपन कथा सभकेँ प्रवाहमयता, रोचकता ओ विश्वसनीयताक संग प्रस्तुत करबामे सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेला अछि।

हिनक कथासंग्रह अर्द्धांगिनी बीस गोट कथाक समुच्चय छी। ऐ कथा सभमे नोकरीहाराक जीवनक संत्रास, परिश्रमी कृषकक उल्लास, सांस्कृतिक पावनि-तिहारमे पैसल अन्धविश्वासक प्रति जुगुप्सा, ग्राम्य जीवनमे जातीय बेवसायक महत्व, क्रमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्या आदिक सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक लोकमंगलक कामना देखि पड़ैत अछि। युगीन समस्या ओ समस्याक कारण एवं तेकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता हिनक वस्तु-विन्यासकेँ प्रेरक-प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जइमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।

ऐ संग्रहक पहिल कथा छी दोहरी मारि। ऐ कथामे पुरुख पात्र गुलाबक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि। अवकाश प्राप्त प्रोफेसर गुलाब केतेको वर्षसँ डाइबीटीज ओ ब्लड-प्रेसर सदृश बिमारी सभसँ ग्रस्त छथि। गामक घर-घराड़ी पर्यन्त बेचि शहरमे बनौल मकानमे पति-पत्नी एकाकी रहै छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहै छन्हि तँए हिनकालोकनिक सुधि लेनिहार कियो नै छन्हि। नागर जीवनक चाकचिक्यसँ सम्मोहित भऽ ई शहरी जीवनमे बसि तँ गेल छथि, मुदा चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गंदगी आदि समस्यासँ ग्रस्त शहरी ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण वातावरणक प्रति आकर्षण जगै छन्हि। हद तँ तखनि भऽ जाइत अछि जखनि पुत्र द्वारा ई समाद भेटै छन्हि जे पौत्रक मूड़न घरपर नै भऽ कऽ वैष्णो देवीमे हेतनि, जइ लेल हुनकोलोकनिकँ ओहीठाम एबाक आमंत्रण भेटै छन्हि आ ओ अपनाकँ अशक्य बूझै छथि।

ऐ कथाक माध्यमे मण्डलजी साम्प्रतिक जीवनमे उपकल विस्थापनक समस्याक कारणे अवस्था दोषग्रस्त बुजुर्ग पीढ़ीक बेथाकँ अभिव्यक्ति प्रदान केलनि अछि। ऐ समस्याक कारणे नोकरी-चाकरी भेला उत्तर लोक शहरमे बसि ग्राम्यजीवनक सौहार्दसँ तँ वञ्चित होइते छथि संगहि वृद्धावस्थामे जखनि परिवारोक लोक हुनक संग छोड़ि दइ छथिन तँ अपनाकँ वंचित अनुभव करए लगै छथि।

अही समस्याकँ संग्रहक दोसर कथा "केना जीब" मे सेहो उठौल गेल अछि। एकर पुरुख पात्र सेहो अवकाशप्राप्त प्रोफेसर छथि। ई बेटाकँ पढ़ा-लिखा कऽ विदेश पठयबामे सफल तँ होइ छथि मुदा बेटा विदेशी सभ्यता ओ संस्कृतिक रंगमे रमि जाइ छन्हि आ हिनकालोकनिक खोजो-पुछारि नै कऽ पबै छन्हि। परिणामत: दुनू परानी एकाकी जीवन बितेबाक हेतु बाध्य होइ छथि। एहेन स्थितिमे हिनकालोकनिक लग एकमात्र अवलम्ब बचि जाइ छन्हि-जिजीविषा ओ संघर्ष। यएह जिजीविषा ओ संघर्ष करबाक मानसिकता ऐ कथाक युग जीवनक अनुकूल संदेश छी जे एकरा पूर्व कथासँ भिन्न आ स्तरीय बनबैत अछि। ऐ कथाक वृद्ध दम्पत्ति कखनो हताश आ निराश नै देखि पड़ै छथि।

संग्रहक तेसर कथा ग्राम्य जीवनक परिश्रमी कृषकक गाथा छी जे अपन परिश्रमक बलेँ अपन भाग्यविधाता बनल अछि। नवान शीर्षक ऐ कथामे मिथिलाक लोक जीवनक विभिन्न खण्डचित्र उपस्थित कएल गेल अछि यथा वृक्ष-लतादिक पहिल फड़ देवताकेँ चढ़ाएब, गाए बिआएलापर महादेवकेँ दूधसँ अभिषेक करब आदि। ग्राम्य जीवनमे पसरैत जातीय ओ साम्प्रदायिक विद्वेष दिस सेहो ऐमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा ऐ कथामे मिथिलाक लोकजीवनक आर्थिक स्थितिकेँ बदहाल करएबला जइ समस्यापर विशेष दृष्टिनिक्षेप कएल गेल अछि, से छी बाढ़िक समस्या। ऐ समस्याक कारणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक बेवस्था अस्त-व्यस्त भऽ जाइत अछि। तथापि ऐ कथाक नायक आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नव किस्मक धान उगबए लगैत अछि, तीमन-तरकारीक नगदी फसिल उपजाबए लगैत अछि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीवनकेँ खुशहाल बना लइए, वस्तुत: ऐ वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक कृषक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उसेद छन्हि।

संग्रहक चारिम कथा छी ''तिलासंक्रान्तिक लाइ'' ऐ कथामे ग्राम्यजीवनमे पसरल अन्धविश्वासपर प्रहार कएल गेल अछि। तिलासंक्रान्तिक एकटा एहेन पर्व छी जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनौल जाइत अछि। ऐ दिनसँ सुरूज उत्तरायण भऽ जाइ छथि आ क्रमश: शीत ॠतु वसन्त आ गृष्म दिस बढ़य लगैत अछि। मिथिलाक प्रशस्त भोजन चूड़ा-दही ऐ दिन गरीबो-गुरबा धरि खाइते अछि। चूड़ा ओ मुरहीक लाइ, तिलबा आदि देवताकेँ चढ़ाय प्रासाद रूपेमे ग्रहण करब ऐ पावनिक कृत्य होइ छै। शीत ॠतु रहलाक बादो मिथिलाक ग्राम्यजीवन ऐ पर्वक ओरियौनमे मास दिन पूर्वहिसँ लगि जाइत अछि। मुदा ऐ पर्वक प्रसाद ग्रहण करैक हेतु प्रात: स्नान जरूरी बूझल जाइ छै। मिथिलामे ई अपवाद सेहो पसरल छै जे ऐ दिन जे कियो भोरे नदी वा पोखरिमे डुम दइ छथि हुनका नदी-देवता तत्काले लाइ धरा दइ छथिन। अही अपवादपर विश्वास कऽ गोपाल नामक एकटा नेना बारहे बजे रातिमे नदीमे डुम देबए चलि जाइत अछि आ ठंढसँ ग्रस्त भऽ जाइत अछि। ग्राम्यजीवनक अन्धविश्वासी समाजकेँ ऐ कथाक माध्यमसँ ई संदेश देल गेल अछि जे वस्तुत: ई पावनि प्रकृति-परिवर्त्तनपर आधारित अछि आ ऐमे बिनु

पाखंड कएने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समैपर स्नान करैक चाही, नै कि अन्धविश्वासमे पड़ि रोगग्रस्त भऽ जेबाक चाही। हड़ीवालीक उक्ति-

''अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसिऔने छेलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब'' अन्धविष्वासक प्रति बेस प्रहार कएलक अछि। कथामे ऐ पावनिक तैयारीमे जुटल लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि।

पाँचम कथा ''भाइक सिनेह'' भाए-भैयारीक आपसी कलह ओ आत्यीनक प्रेमक कथा छी। शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू भाँइ एक दोसराक प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति ओ बन्धुत्वक भाव रखै छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारमे भिन्न-भिनाउज भऽ जाइ छन्हि। भिन्न-भिनाउजक मूलमे अर्थसत्तापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखनि दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भाव जगै छन्हि तँ दुनू एकदोसराक दु:ख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइ छथि। ऐ कथामे कृषक जीवनमे पारस्परिक सहयोग, सद्भाव ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन देखि पड़ैछ।

संग्रहक छठम कथा ''प्रेमी'' वस्तुत: प्रेमकथाक रूपमे लिखल गेल अछि मुदा ऐ कथामे रचनाकारक उसेद समाजिक जीवनमे व्याप्त दहेज प्रथाक कुरीतिकेँ समाप्त करैक संदेश सएह अभिव्यक्त भेल अछि। पक्षधर आ ज्ञानचन्द दू गामक छथि। दुनूमे प्रगाढ़ दोस्ती छन्हि। ज्ञानचन्दक पौत्र परीक्षा देबाक हेतु पक्षधरक गाम अबै छथिन जेतए परीक्षावधि धरि ज्ञानचन्दक पौत्र लोचन आ पक्षधरक पौत्री सुकन्याक बीच संवाद होइ छन्हि आ दुनू परस्परानुरक्त भऽ जाइ छथि। लोचनकेँ विदा करैक क्रममे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घर धरि चलि जाइत अछि जे ओइ गाममे गुलझरक वस्तु भऽ जाइ छै। विजातीय रहलाक बादो पक्षधर आ ज्ञानचन्द पारस्परिक मैत्रीकेँ सम्बन्धमे बदलि एकटा आदर्शक स्थापना करै छथि। पक्षधरक उक्ति-

''जइ समाजमे मनुखक खरीद-बिक्री गाए-महिंस, खेत-पथार जकाँ होइए ओइ समाजकेँ पञ्च तत्तवक बनल मनुख कहल जा सकैत अछि? जौं से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो ऑंगरी देखौत तँ ओकर ऑंगरी काटि लेबै।'' मे दहेज प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-बिआह, विजातीय बिआहक

अवरोधक तत्वपर प्रहार कएल गेलैक अछि।

संग्रहक सातम कथा ''बपौती सम्पति'' कृषक जीवनमे जातीय बेवसायक महत्तवक अवधारणापर आधारित अछि। सम्प्रति कृषक-मजदूरक पलायनसँ जे गामक अर्थ-बेवस्था चरमरा गेल अछि तकरा सुधारबाक हेतु ऐ कथामे चिन्तनक एकटा दिशा भेटैत अछि। कथानायक गुलटेन अपन पिताक सिखौल बेवसायसँ नीक जकाँ परिवारक परिपालन करबामे सक्षम अछि। तँए कथाकारक उसेद ग्राम्य स्वावलम्बनकँ पुन: स्थापित करैक हेतु मार्गदर्शन करब बुझना जाइत अछि।

आठम कथा ''डंका'' लोकजीवनक अवमूल्यनकँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य पात्र भैयाकाका गामक रक्षा करैक संकल्प लऽ अपनो गाममे अखड़ाहाक प्रचलन शुरू करै छथि जइसँ पास-पड़ोसक गाम किंवा जमीन्दारक पहलमान हुनकालोकनिकँ अबल बूझि प्रताड़ित नै कऽ सकनि। ऐ तरहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका व्यग्रता छन्हि मुदा साम्प्रतिक जीवनमे स्वार्थक प्रवेशसँ ओ ई जानि विचलित भऽ जाइ छथि जे आब गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ दूर, लोक अपनो सर-संबन्धीक खोज-पुछारि करबासँ कतरेबाक मूल्य रहित संस्कार पालए लगल अछि। हिनक उक्ति-

''माए-बाप, भाए-बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार ऐ रूपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधनाभूमिकँ मरूभूमि बनब अनिवार्य छै'' मे समस्त कथासार अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

नवम कथा ''संगी'' शिक्षा जगतमे भेल अद्य:पतनक कथा छी जइमे स्कूल-कौलेजमे शिक्षाक बेवसायीकरणक फलस्वरूप सामान्य जनसँ छीनल जाइत शिक्षाक समस्यापर विमर्श भेल अछि, जेकर समाधानक हेतु दूटा संगी पारस्परिक परिणयपूर्वक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ै छथि। कथाक घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जाइछ, जे प्रभावान्वतिकँ कमजोर करैत अछि।

ठकहरबा पूर्णत: राजनीतिक कथा छी। ऐमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे पुलिस ओ नेतालोकनिक भ्रष्ट चरित्र, मतदानमे गड़बड़ी आदिक चित्रण करैत लोकजगतमे क्रमश: पसरैत भ्रष्टाचारक अतिरेकक चित्रण भेल अछि जइसँ कोनो वस्तुक विश्वासनीयतापर प्रश्नचिन्ह लगि गेल अछि। ई कथा लोकतंत्रमे

लोक आ तंत्र दुनूक स्खलनपर सोचबाक हेतु विवश करैत अछि।

"अतहतह"मे मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे बरियाती पक्ष द्वारा सरियाती पक्षकेँ देखार करैक हेतु खाद्य वस्तुपर जोर देबाक परिष्कारक रूपमे सरियाती पक्ष द्वारा तेकर बदला लेबाक कथा कहल गेल अछि। ऐ कथामे बरियाती पक्षकेँ पानिक संग दबाइ पिआ ओकरा सभकेँ देखार करैक प्रयास कएल गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल होएबाक कारणे प्रतीयमान नै भऽ सकल अछि। अवश्ये ऐमे बर पक्षमे शराब पीब कऽ बरियाती जेबाक आधुनिक प्रचलनक विरुद्ध आक्रोशक अभव्यक्ति भेल अछि। मण्डलजीक ई कथा कन्यादान-वरदानमे दुहू पक्षक सम्मान रक्षाक पारस्परिक दायित्वक प्रति कान्तासम्मित उपदेश दैत अछि।

बारहम कथा "अर्द्धांगिनी" ऐ पोथीक नामकरणक आधार बनल अछि। ऐ कथामे अवकाशप्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण भेल अछि। अपन कमाइक बलें ओ आजीवन अपन पत्नीक दासीसँ आगू बुझबाक हेतु तैयार नै होइ छथि मुदा जखनि नोकरी समाप्त भऽ जाइ छन्हि तखनि पत्नीक आवयकतापर धियान जाइ छन्हि आ अर्द्धांगिनीक महत बूझि पबै छथि। लेखक नारीक सेविका स्वरूपकेँ मर्यादित कऽ ओकरा पुरुखक समानान्तर मूल्य प्रदान करैक पक्षपाती छथि, जेकर अभिव्यक्ति ऐ कथाक लक्ष्य बुझना जाइत अछि।

तेरहम कथा छी "ऑपरेशन" ऐ कथामे मइटुग्गर नेनाक सामाजिक स्थितिपर विमर्श कएल गेल अछि। जखनि कोनो नेनाक माए असमए कालकवलित भऽ जाइ छै, तँ समाज ओकरा अलच्छ करि कऽ बूझए लगै छै आ केकरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक विकासक चिन्ता नै रहै छै। मुदा जौं ओइ बच्चाक पिता दोसर बिआह कऽ ओकर प्रतिपालनक हेतु स्थानापन्न माताक बेवस्था करै छथि तँ वएह समाज बेर-बेर ई जनबाक प्रयास करैत अछि जे सतमाए ओकर पालन नीक जकाँ कऽ रहल छै वा नै। समाजक ई बेवहार ओकर क्रूर मानसिकताक परिचए दैत अछि जइसँ नेना आ ओकर पिता आहत होइले बाध्य होइ छथि। लेखक समाजक ऐ विरूपित मानसिकतापर व्यंग्य करब ऐ कथाक उसेद रखलनि अछि। अही माध्यमसँ

अस्पतालक दुर्व्यवस्था तथा प्राइवेट प्रैक्टिसक कारणपर सेहो विमर्श कएल गेल अछि।

चौदहम कथा ''धर्मनाथ'' ढहैत जमींदार परिवारक गाथा छी। ऐमे दहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक जागरण कथाकारक उसेद बुझना जाइत अछि। एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ पिताक अमलदारीमे धरि हुनक परिवार देहेजक संतोष्क रहल अछि आ खेत बेचि-बेचि कन्यादान करैत अपन कुलाभिमानक रक्षा करैत रहल अछि। मुदा ई मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ क्षत-विक्षत भऽ गेल छै आ धर्मनाथ ऐ स्थितिमे नै रहि पबै छथि जे पुत्रीक बिआह जमीन्दारे परिवारमे करैक हेतु धन जुटा पाबथि। अन्तत: ओ प्रोफेसर रामरतन सन दहेजविरोधी व्यक्तिक सहायतासँ एकटा कर्मयोगी बालकसँ अपन बेटीक बिआह ठीक कऽ लइ छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ चुनौती दइ छथि। परिणामत: हुनक पिता अपन कुलाभिमानपर प्रहार होइत देखि मृत्युकेँ प्राप्त कऽ लइ छथि। धिया-पुताक थपड़ी बजा-बजा ई कहब जे-

''बाबा मुइला, पूरी-जिलेबीक भोज खाएब...'' वस्तुत: परम्परा आ अन्धविश्वासँ जकड़ल सामाजिक बेवस्थाक विनाशक प्रति उत्सव छी जे दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ सकेतित करैत ई ईंगित करैत अछि जे जौं लोक मिथ्याभिमानक तियाग नै करता आ दहेज देब-लेबकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक मानदंड बनौने रहता तँ अद्य: पतन अवश्यम्भावी अछि।

''सरोजनी'' प्रेम बिआहपर आधारित कथा छी। नायिका सरोजनी जमीन्दार घरक कन्या छथि। हिनक भाय हृदयनारायण बिलैतिन कन्यासँ प्रेम बिआह कऽ लेने छथिन। ईहो अपन बालसखा रमेशक संग बिआह कऽ लइ छथि। रमेश हिनके नोकर घूरनक शिक्षित पुत्र छथि। आर्थिक ओ सामाजिक दुनू स्तरपर असमान लोकक विजातीय बिआहक समर्थनक ई आधार जे ''अपन मालिक हम स्वयं छी। अखनि धरि जातिक पहाड़ जे अपना समाजमे बनल अछि, ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ ने पेट भरै छै, ने नांगटकेँ वस्त्र दइ छै, ने बेघरकेँ घरे। एतए धरि जे मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैत अछि, लुटैत इज्जतकेँ बचा नै सकैत अछि, ओइ समाजकेँ विरोध करैक कोन अधिकार?''

उपदेशात्मक ओ असहज तथा सिने जगतक वस्तु जकाँ असहजतासँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। तथापि कथाकार जातीय बेवस्थापर आधारित वैवाहिक पद्धतिकेँ गुण ओ प्रेमपर आधारित करैक समर्थन कऽ ऐ प्रथामे युगानुरूप परिवर्त्तनक आकांक्षी बुझना जाइ छथि। विश्रृंखलित होइत वैवाहिक बेवस्थाक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करब ऐ कथाक उसेद बुझना जाइत अछि।

संग्रहक सोलहम कथा सुभद्रा विधवा बिआहक समस्यापर आधारित अछि। दैवयोगसँ सुभद्राक पतिक देहान्त हवाइ दुर्घटनासँ भऽ जाइ छन्हि। ओ अभिशप्त जीवन बितेबाक हेतु बाध्य भऽ जाइ छथि। एकर कारण ई अछि जे ओ जइ जातिसँ अबै छथि तइमे विधवा बिआहकेँ मान्यता नै छै। कथाकार रूपलाल बाबा नामक एक गोट गाँधीवादी चरित्रक अवतारणा करै छथि जे नारी समुत्थानक प्रति समरपित छथि। हिनक मान्यता छन्हि जे जहिना पत्नीक मुइला उत्तर पतिकेँ दोसर बिआह करैक अधिकार छै तहिना पतिक मुइला उत्तर पत्नीओकेँ दोसर बिआहक अधिकार भेटबाक चाही। रूपलाल बाबा सुभद्राक पिताकेँ मानाय सुशील नामक युवकसँ ओकर बिआह सम्पन्न करबै छथि। ऐ तरहेँ समाजमे विधवाकेँ मान्यता भेटै छै। आदर्शवादी संकल्पनापर आधारित ई कथा वस्तुत: ऐ सामाजिक समस्याक प्रति कथाकारक प्रगतिवादी मूल्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

''सोनमाकाका'' ऐ संग्रहक सतरहम कथा छी। ई कथा मानव धर्मपर आधारित अछि। एकर प्रधान पात्र सोनमाकाका स्वयं पत्नीक बिमारीसँ त्रस्त छथि। ओकर इलाज करा जखनि गाम घूमै छथि तँ रामकिसुन नामक एकटा बिगड़ल बेकतीक मृत्युक समाचार भेटै छन्हि। ओ व्यसनक चक्रमे पड़ि तेतेक निर्धन भऽ गेल छल जे ओकरा कफनो धरिक उपाय नै छेलै। सोनमाकाका समाजक सहायतासँ ओकर संस्कार करबै छथि आ ओकर अनाथ बालककेँ अपन बेटीक संग बिआह करा ओकर जीवनकेँ सामान्य बनेबाक प्रयत्न करै छथि। कथाकार ऐ आदर्श पुरुखक स्थापना कऽ ई सिद्ध' करए चाहै छथि जे जौं समाज चाहए तँ केहनो पैघ समस्याक निदान भऽ सकै छै।

अठारहम कथा ''दोती बिआह'' परित्यक्ताक पुनर्विवाहपर आधारित अछि। एकर प्रमुख पुरुख पात्र उमाकान्त छथि जे पचास वर्षक आयुमे पत्नीक देहावसानक कारणे एकाकी जीवन जीबाक हेतु बाध्य छथि। जीवन संगिनीक अभावमे हिनक दिन काटब पहाड़ भऽ गेल छन्हि। दोसर दिस यशोदिया नामक एकटा युवती छथि जनिक पति दिल्लीमे नोकरी करै छेलखिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यक्त कऽ केतौ पड़ा जाइ छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घूमि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोट सम्भ्रान्त बेकतीक आश्रममे रहि जीवन-यापन करए लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग बिआह करा दइ छथिन जइसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटै छन्हि आ दूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। ऐ कथाक माध्यमे कथाकारक ई उसेद स्पष्ट होइ छन्हि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित रखबाक हेतु पति-पत्नीमे कियो जौं एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक बेथामे पड़ल रहैत अछि जेकर निदानक हेतु समतूल युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उनैसम कथा ''पड़ाइन'' ग्राम्य जीवने पसरल अराजकताक कथा छी जेकरा कारणे बलगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटयबापर लगल रहैत अछि। ऐ कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बेइमानी-शैतानी, चोरि, बलपूर्वक दोसरक जताति नष्ट करब आ माए-बहिनक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतए परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पतिशाली बनि नीक जकाँ गुजर करए लगैत अछि। ऐ कथामे कथाकारक उसेद ग्राम जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि मुदा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे ऐमे स्वाभाविकताक अभाव बुझना जाइत अछि।

''केतौ नै'' कथा संग्रहक अन्तिम कथा छी जे वस्तुत: यात्रा-वृत्तान्त छी। ऐमे जनकपुर यात्राक वर्णन आएल अछि। गामक एकटा टोली जनकपुरमे बिआह पंचमीक मेला देखबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि मुदा बिआह पंचमी दिन ई लोकनि धनुषा दर्शन करैक हेतु जाइ छथि आ ओतए गाड़ी खराब भऽ जेबाक कारणे बिआह पंचमीक रातिमे पुन: जनकपुर घूमि नै पबै छथि जइसँ हुनकालोकनिकेँ जनकपुरक कार्यक्रम देखबाक अवसर नै भेटि

पबै छन्हि। अन्तत: हारि-थाकि कऽ सभ सोचै छथि जे केतए एलौं तँ केतौ ने। दुर्योगवशात् मनोरथपूर्त्तिमे बाधा होएबाक ऐ कथामे वस्तुत: जनकपुर यात्राक एक गोट मनोरम वृत्तान्त भेटैत अछि।

ऐ तरहेँ अर्द्धांगिनी कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य जीवनक विभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तेकर समाधान सबहक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी व्याख्या छी।

ऐ संग्रहक कथा सभ वर्णन-प्रधान देखि पड़ैत अछि। कथाकारक शैली एहेन छन्हि जे ओ कोनो घटनाकेँ प्रस्तुत करबासँ पूर्व ओकर पूर्ववीठिकाकेँ तेतेक सघन कऽ दइ छथि जे पाठक तइमे तल्लीन भऽ जाइ छथि। ऐ प्रकारक वर्णन-विन्यास हिनक औपन्यासिक वृत्तिकेँ स्पष्ट करैत अछि जइमे वर्णनक हेतु पयाप्त अवसर रहै छै।

मनोविश्लेषण मण्डलजीक कथा सबहक अन्यतम विशिष्टता छियनि। ई जइ कोनो पात्रकेँ प्रस्तुत करै छथि तेकर अन्तस्तलमे प्रेवेश कऽ ओकर भावराशिकेँ अभिव्यक्त कऽ दइ छथि जइसँ पात्रक चरित्र स्वत: स्फुट हुअ लगैत अछि। उदाहरणार्थ ''बपौती सम्पति'' कथामे गुलटेनक मानसिक स्थितिकेँ अभिव्यक्त करैत ई पाँती द्रष्टव्य अछि-

''मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठीम फाटल सीने दोसरठाम मसकि जाइत अछि, तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुहेँ नै ससरि रूकि गेलै। चिन्ताक अँटकिते मनमे खुशी भेलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जनम लेबाक सेहन्ता देवी-देवताकेँ होइ छन्हि ओकरा हम मायाजाल किए बुझै छी। ई दुनियाँ ककरा लेल छै? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत। ई दुनियाँ उपयोग करैक छै नै कि उपभोग करैक।''

मण्डलजी कथाक भाषामे मैथिलीक गमैया बोली-वाणीक सहज स्वरूप अभिव्यक्त भेल अछि। ई पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग केलनि अछि जइसँ प्रत्येक पात्रक बौद्धिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट होइत चलि जाइत अछि। हिनक कथा सभमे कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक भाषाहिक

अनुगमन करैत अछि जइमे सहजता अछि। कनेको कृत्रिम प्रयोगसँ ई बँचैत रहल छथि। हिनक भाषामे तद्भव ओ देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक रहलनि अछि। उदाहरणक हेतु माल-जाल, लेब-देब, दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, बाल-बोध, बेटा-पुतोहु, भोज-काज, अन्हर-बिहाड़ि, दार-मदार, सुक-पाक, भूखल-दुखल, चीज-बौस, घुसका-फुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ई अन्यतम विशिष्टता छी जे ई कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिव्यक्त करैक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करै छथि जइसँ वस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाइत अछि यथा-

''जहिना खढ़ाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ै छै तहिना सुशीलक मन समस्याक वोनाएल रूप देखलक। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जा मिलैए तहिना ने टटघरक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत।'' आदि।

एतावता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णनक दृष्टिएँ मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थवादी चित्र, घटनाक दृष्टिएँ आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मनोविश्लेषणक प्रति प्रतिबद्ध तथा उसेदक दृष्टिएँ लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा लेखन हिनक रचना सभसँ सम्बलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्व सभ अनन्त काल धरि मिथिलाक लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत।

डॉ. योगानन्द झा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001 (बिहार)

एकसत्तरि

१. दोहरी मारि

दस सालसँ डायबीटीज आ साढ़े-सात सालसँ ब्लड-पेसरक शिकार सरसठिम सालक प्रोफेसर गुलाब पाँच साल पहिने कौलेजसँ सेवा-निवृत्त भेल छला। सूर्यास्तक समए, सोफापर ओंगठि पाँचो आलमारीक पोथीपर नजरि खिड़बैत रहथि। पत्नी -लालमनि- चाह नेने कोठरीक मुँह टपिते छेली आकि भुक दऽ मड़कड़ी बड़ि उठल। ओना अन्हारक आक्रमण तइ रूपे नै भेल छेलै मुदा किड़ी-फतिंगीक आवाहन बाहरसँ घर (कोठरी) दिस हुअ लगल छेलै। टुटल अगिला दाँतक मुहसँ मुस्की दैत लालमनि पति दिस कप बढ़बैत बजली-

> "कौफी सधि गेल छेलए। पहुलके चाहपत्ती घरमे छेलै सएह बनेलौं। मुदा चाहक गंध केनादन लगल।"

पत्नीक बात सुनि गुलाबक मन अमता गेलनि। मुदा जहिना पाकल अमतीक खट-मधुर सुआद होइए तहिना प्रोफेसर गुलाब अपन चौहु टुटल मुहसँ मुस्कीआ देलनि। मन कलपि उठलनि। एहेन समए भऽ गेल जे एक कप चाहोपर...। ठीके बूढ़-बुढ़ानुसक कहब छन्हि-

> "करनी देखब मरनी बेर।"

पत्नीक हाथसँ कप पकड़ि मुँहमे लगौलनि। मुँहमे चाह अबिते ठोर बिजैक गेलनि। हाँइ-हाँइ कऽ चाह तँ घोंटि गेला मुदा जाकरी पत्तीक सुआद मनकेँ हौंड़ देलकनि। चाहक कप टेबुलपर रखि उठि कऽ ठाढ़ होइते रहथि आकि बूझि पड़लनि जे उल्टी हएत। दुनू हाथसँ छाती दाबि पुन: सोफापर बैस गेला।

चौसठि वर्षीए लालमनि गैस्टिकसँ आक्रान्त। पेटक गैससँ मन अस-बिस करनि। जोरसँ ढेकार भेलनि। मन हल्लुक होइते पतिक पीठ ससारए लगली। रसे-रसे प्रोफेसर गुलाबक मन खनहन हुअ लगलनि। मन खनहन होइते पत्नीकेँ पुछलखिन-

> "मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?"

दुनियाँक रागसँ ऊपर उठि लालमनि चहकि उठली-

"की गड़बड़ आ की नीक, कोनो की तेहैया बोखार छी जे तीन दिन जाइते चलि जाएत, निरकटौबलि भऽ कऽ छूटि जाएत। गोटीक चाह करैए। जाइ छी एकटा गोटी खा लेब, ठीक भऽ जाएत।"

कहि लालमनि दोसर कोठरीक रस्ता धेलनि। प्रोफेसर गुलाबक नजरि चाहक कपपर गेलनि। मुदा चाहक कपपर नजरि नै अँटकि पोथीक आलमारीपर पहुँच गेलनि। अखनुक जे जिनगी अछि से आइ धरि किए ने बुझलौं? जौं अपने नै बुझलौं तँ जिनगी भरि पढ़ौलिऐ की? आकि दिमक बनि पोथीकेँ माटि बनौलिऐ? तैबीच ब्लड-पेसरक जोर पबिते गरजला-

"एकटा गोटी खाइमे केते देरी लगैए।"

पतिक बात सुनि लालमनि बूझि गेली जे ब्लडपेसरक झोंक छियनि। औगताइते कोठरीमे आबि मुस्की दैत आलमारीसँ गोटी निकालए बढ़ली। गोटी निकालि, गिलासमे जगसँ पानि लऽ पतिक हाथमे दैते रहथि आकि सिरमाक बगलमे मोबाइल टनटनाएल। गुलाब हाँइ-हाँइ कऽ गोटी मुँहमे लैत पानि गुलगुलबैत मोबाइलपर हाथ बढ़ौलनि। मोबाइल उठा नम्बर देखलनि। बेटा-लीलाकान्तक नाओं देखि पत्नी दिस मोबाइल बढ़बैत बजला-

"ननुगर बेटाक फोन छी। लिअ...।"

प्रोफेसर गुलाब अपनाकेँ बेटा रूपमे देखलनि। मन पड़लनि माए-बाप। की जिनगी छल, की आइ अछि। जाधरि पिता जीबै छला परोपट्टाक किसानक-समाज रूपी समुद्रमे बसल छला। माल-जालसँ लऽ कऽ बीआ-बालि धरिक कारोबार छेलनि। लेब-देब छेलनि। सोझहे लेब-लेब नै छेलनि। लेब-लेबसँ बेसी देब-देब छेलनि। खीड़ा-झिंगुनी आकि नव कोनो अन्न, फल-फलहरी होइ, बीआक मूल्य कहाँ लइ छेलखिन। मुदा हमरा कोन दुर्मतिया चढ़ि गेल जे एक तँ कौलेजक नोकरी भेटल तैपर सँ पिताक देल घर-घराड़ी धरि उजाड़ि देलौं। की हम दरमाहाक पाइसँ जीवन नै चला सकै छेलौं।

तरे-तर अपन पछिला विचारपर सेवा-निवृत्त प्रोफेसर गुलाब गरमा गेला। मुदा जहिना खढ़-पातक धधरा धुधुआ कऽ उठैत आ लगले पझा कऽ तेहेन छाउर बनि जाइत जेकरा हवाक सिहकीओ उड़िया दैत, तहिना लगले मन खढ़क झोली जकाँ ठंढा गेलनि। मन घुमलनि, किछु मजबुरीओ भेल। एक तँ परोपट्टामे बहरबैया जमीनपर लड़ाइ सुनगि गेल, दोसर अपन पितियौत कारी भायकेँ बटाइ खेत करए कहलियनि तँ कहलनि जे एक बाबाक अरजल सम्पति छी, सेहो किनल नै दान देल, तइ जमीनक उपजा बाँटि बटेदार बनब। अहाँ कियो आन छी। जहिना सभ दिनसँ एक परिवार बनल रहल अछि तहिना रहत। जखने हम बाँटि कऽ देब तखने बटेदार भऽ जाएब। किसान जौं बटेदार भऽ जाए तँ ओकर प्रतिष्ठा बँचलै केना। पावनि-तिहारसँ लऽ कऽ परिवारिक काज-उद्यम धरि जहिया गाममे रहब अपन परिवारक समांग जकाँ रहब। मौका-मुसीबतमे दरभंगा जाएब तँ अपन घर जकाँ हमहूँ रहब। कहलनि तँ विचारणीय बात मुदा से उचित भेल? बाजारक चमक-दमक देखि अपनो मन उधियाएल। महग बूझि घराड़ीओ बेचि मकान बना शेष बैंकमे रखि लेलौं। फेर मन घुमलनि, की आजुक बाजारवादक नींव हमहीं सभ ने तँ देलौं। आइ की देखै छी, भरि मन चाहो नै पीब सकलौं। हुनके (पत्नीए) की दोख देबनि, तीन दिनसँ बाजारमे करफू लगल अछि। दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी सभ बन्न अछि। सौंसे बाजार भकोभन लगैए। बंदूकधारी पुलिस आ पुलिसक गाड़ी छोड़ि सड़कपर अछिए की? पनरहे दिन मेहतरक हड़ताल भेल, गंदगीसँ बाजार भरि गेल। बिमारीक प्रकोप बढ़ि गेल। तहिना पानिक अछि। ताड़ी-दारू, चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण तँ आम भऽ गेल अछि। एक दिस गाम छोड़लौं, दोसर दिस बेटा-पुतोहु राँचीमे सभ बेवस्था कऽ लेलक। दुनू परानी रोगसँ अथबल बनल छी, केना दिन कटत? की अछैते औरूदे पराण तियागि ली? हे भगवान जनिहऽ तूँ?

जहिना पूसक ओस सदति काल प्रकृतिकेँ ठंढ़ बनौने रहैए तहिना हृदए शीतल भऽ गेलनि। पत्नी दिस आँखि उठा कऽ देखली तँ बूझि पड़लनि जे जहिना हमर मन जिनगीसँ निराश भऽ कानि रहल अछि तहिना हुनकर (पत्नीक) मन बेटाक फोन सुनैले कोढ़ी सदृश बिहुँसि रहल छन्हि। मन आरो बेथित भऽ गेलनि। जहिना श्मशानक बरियातीक मन खाएब-पीबसँ हटि

मृत्युक घाटपर बैस गंगा (नदी, सरोवर) मे डुम दऽ पवित्र होइले कछमछाइत तहिना प्रोफेसर गुलाबबाबूक मन जिनगीक घाटपर बौआ गेलनि। पुष्कर (राजस्थान) जकाँ अनेको घाट। उन्मत्त मन आलमारीक पोथी दिस पड़लनि। सतरहम शताब्दी धरि अर्थशास्त्र-राजनीतिशास्त्र सझिया भाए छल। संगे-संग जीवन-यापन करै छल। से भीन भऽ गेल। हम सभ खुट्टा गाड़ि राजनीतिशास्त्रकेँ धेलौं। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिकेँ अधिकार-कर्तव्य सिखबै छिऐ मुदा जइ अवस्थामे अखनि दुनू परानी जीब रहल छी ओ कोन अधिकार-कर्तव्य छी? की बारह बजे रातिमे डाक्टर ऐठाम जा सकै छी? जौं से नै हएत तँ की रोग (बिमारी) हमरा मुकदमाक तारीख जकाँ भरि रातिक मोहलत दऽ देत?

जिनगीक काँट-कूश फानि लालमनि मोबाइल कानमे सटौने पतिसँ फूट भऽ सुनैक विचार केलनि। मुदा मुहसँ निकलि गेलनि-

''बौआ, नूनू।''

''हँ, हँ। पाँचम दिन बौआ- कल्पनाथक मूड़न छी।''

टाबर हटने लाइन कटि गेलनि। मुदा लालमनि से नै बूझि सकली। बूझि पड़नि जे कम जोरसँ बजने नै सुनैए। छातीसँ जोर लगा जोर-जोरसँ बाजए लगली-

''सभ प्राणी नीके छह किने?''

प्राणीक नाओं सुनि कोठीक चाउर जकाँ प्रोफेसर गुलाबक मन गुमसरए लगलनि। जहिना सड़ल आ नीकक बीच अपन-अपन सेनाक बीच रणभूमिक दृश्य होइए तहिना गुलाबोबाबूकेँ भेलनि। मुदा जहिना बेटा-पुतोहुपर खौंझ उठल तहिना पत्नीक अनभिज्ञता (मोबाइल नै बूझब) पर हँसी सेहो लगलनि। पत्नीक हँसी दौगल आबि हृदैकेँ सूतल आदमी जकाँ डोलबए लगलनि। मुहसँ निकललनि-

''सभ प्राणीक कुशलमे अपनो लगा कऽ कहलियनि आकि अपनाकेँ छोड़ि?''

बाजि तँ गेला मुदा लगले मन धिक्कारए लगलनि। पत्नी अज्ञानी रहि गेली, तइमे हमर कोनो दोख नै? दिनमे डेरासँ बाहर रहै छी मुदा बाँकी समए...।

अपने कएल लोककेँ काज अबै छै। जेते अपना दिस देखथि तेते ओझरी लगए लगलनि। एक कालखंडक पढ़ल-लिखल कर्त्ता (परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि) रहितो आइ धरि एकरा (ऐ विषयकेँ) बुझैक कोन बात, जे मनोमे नै उठलनि। मन कानए लगलनि।

अपने रोपल गाछी भुताहि भऽ गेलनि। दलकैत मनमे भाव उठलनि- गाछी तँ फूल-फलसँ लऽ कऽ बगुर धरिक होइए मुदा कहबैत तँ सभ गाछीए अछि। तहिना तँ जिनगीओ अछि। भदबरिया अन्हार जकाँ इजोत केतौ देखबे ने करथि। तैबीच पत्नी मोबाइल बढ़बैत कहलकनि-

"देखियौ ते, की भऽ गेलै। बजबे ने करैए।"

पत्नीक बात सुनि पुन: प्रोफेसर गुलाबक मनमे आशा जगलनि। हाथमे मोबाइल लऽ कहलखिन-

"टाबर चलि गेल। तँए नै अवाज अबैए। फेर टाबर औत तँ अवाजो औत।"

लालमनि टाबर बुझबे ने करथि। बजली तँ किछु नै मुदा जहिना दोकानसँ कोनो वस्तु झोरामे अनैत काल, झोरा मसकि गेलासँ वस्तु गिरए लगैत तहिना मनसँ पतिपर भेल आक्रोश ससरए लगलनि। गुलाबबाबूक मनमे एलनि, पाँचम दिन पोता- कल्पनाथक मूड़न छी। मूड़न की छी संस्कार छी। संस्कार तँ समाजमे भेटै छै, देल जाइ छै। राँची समाज आ मिथिला समाज तँ एक नै छी। तहूमे शहरक समाज तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि। पुन: मोबाइलमे रिंग भेल। रिंग होइते पत्नीकेँ कहलखिन-

"आबि गेल टाबर। लिअ।"

"पाँचम दिन कल्पनाथक मूड़न बैष्णो देवी स्थान (कश्मीर)मे रखने छी। अहाँ दुनू गोटे (माता-पिता) भोरुके गाड़ी पकड़ि चलि आउ। परसूक्का टिकट बनबा देने छी।"

बेटाक फोन सुनि प्रोफेसर गुलाबक छाती छहोछित्त भऽ गेलनि। मुँह मलिन, नोरसँ ढबकल आँखि, देहक पानि उतरल, मन्हुआएल स्वरमे लालमनिकेँ कहलखिन-

“कनी मोबाइल लाउ।”

मोबाइल दइसँ पहिने लालमनि बेटाकेँ कहलनि-

“बाउ, बाबूसँ गप्प करह।”

“बौआ।”

“हँ बाबू। अपने असिरवाद देबै...।”

पोताकेँ असिरवाद देबाक बात सुनि गुलाबकेँ वकार नै फूटलनि। हुचकीक अवाज सुनि लीलाधर पुछलकनि-

“अपने कनइ किए...।”

खखसैत गुलाबबाबू बजला-

“मोबाइल छोड़ि असिरवादो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बाजारमे करफू लगल अछि। सिपाहीसँ सड़क भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना निकलब।”

“कौलेजोमे छुट्टी लऽ नेने छी। टिकटो कटा नेने छी तहन...?”

❍❍

२. केना जीब?

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन, सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल रहथि। दुनू बेकतीक मन खटाएल। दस बजेक करीब दिनेमे सुनने छला जे संगीक संगिनी चूल्हिक गैसक रिसावसँ झड़कि अस्पतालक सीटपर चिकड़ि-चिकड़ि कानि रहल छथिन। सत्तरि बर्खक अवस्थामे संगी अपने दौग-धूप कऽ रहल छथि। मुदा अस्पतालक डाक्टर, नर्स आ कम्पाउण्डरो जी-जानसँ रोगीकेँ बँचबै पाछू लगल छथिन। तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नै छेलनि आ दोसर पहुँचो नीके। संगिनीक घटनाकेँ तँ सरस्वती लगसँ नै देखने छेली मुदा समाचारक रूपमे सुनने छेली। करेज तेना दहलि गेल छेलनि जे साँसक गतिसँ छातीक धुकधुकी तेज भऽ गेल रहनि। नस-नसमे भयक भूत समा गेल छेलनि। अन्हारक वाण जकाँ चारू कातसँ मृत्युक तीर बेधए लगल छेलनि। जहिना वैरागी रागसँ डरैत, जोगी भोगसँ डरैत तहिना सरस्वती मृत्युक भयसँ डरि रहल छथि।

पाँच सए एम.एल.बला ह्विस्कीक बोतल प्रोफेसर शंकर कुमारकेँ बेअसर बूझि पड़लनि। मनक चिन्ता रूपी तीर ह्विस्कीक तीरकेँ रस्तेमे रोकने छल। लग अबै ने दन्हि। कछ-मछ करैत पत्नीकेँ कहलखिन-

"चाह पीबू।"

सरस्वतीक मन चाह पीऐसँ सुरक्षित चूल्हि नै जराएब बुझनि। अपन अज्ञाक उल्लंघन होइत देखि शंकरक मन महुराए लगलनि। जहिना भोज्य-पदार्थक वर्तनमे गिरगिट खसि महुरबैत, तहिना। डेग भरि पाछू घुसुकि मुस्की दैत दोहरा कऽ कहलखिन-

> "चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि। अहाँ देखा-देखा देब।"

जिनगीक अंतिम अवस्थामे पतिपर जीत देखि ढेंग सन देहकेँ उठा सरस्वती कीचेन दिस बढ़ली।

चाह बना कीचेने मे पीबए लगलथि। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको ने होन्हि। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे आबै ने दन्हि। जहिना घीउ नै अरघनिहारकेँ थारीमे देखिते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचार अबिते जीह माने मन पचपचाए लगनि। चाह पीब दुनू गोटे कोठरीमे आबि पुनः सोफापर पड़ि रहला। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्थ होइ छथि तहिना दुनू गोटे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगला।

सरस्वतीक नजरि पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलनि। की छेलए माए-बापक राज? खेनाइ, खेलनाइ, पढ़नाइक संग पावनिमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ, बस। यएह छेलए जिनगी। मनमे सुख-दुखक जनमो कहाँ भेल छल। सोहनगर वातावरणमे बिआह भेल। नैहरसँ सेवा करए नोकरनी आएल। सासुरो सम्पन्ने रहए। कोनो अभाव सासुरोमे नहियेँ रहए। नोकरे पानिओ भरै छल आ भानसो करै छल। अपनो प्रोफेसरे छला। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छला। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छला। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलनि। आब जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि तइसँ इमानदार कमेनिहारक धिया-पुता लेल शिक्षा असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहियेँ मुदा पिताक देल सम्पतिसँ तँ एते जरूर केलनि। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलनि। मुदा अखनि की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतरब-चढ़ब पार लगत? ओहिना तँ हाथ-पएर बिनबिनाइत रहैए। देह भारी बूझि पड़ैए। तैपर परिवारक सभ काज? ऐ उमेरमे बूढ़-कनियाँ बनि जीब रहल छी। तरे-तर पसेना चलए लगलनि। अनासुरती मुहसँ निकललनि-

"ऐ जीवनसँ मरब नीक।"

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क टुटलनि। अखनि धरि हिनकर चेतनाहीन भेल मन देखै छेलनि अपन पछिला जिनगी। गामक स्कूल। केते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा 'सरस्वती माताक जय' कहि आँगनसँ निकलि सरस्वतीक मंदिरमे लऽ गेला। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नै। डेरामे गाड़ल देवता तँ नै अछि मुदा

देबालमे टांगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनौल मुरती तँ अछिए। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नै मुदा मह-मह करैत भकराड़ रूपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छियनि। धुमन-सरड़क धूपक बदला गुगुल आ अगरबत्ती तँ चढ़बिते छियनि। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलियनि। जेतेक पिताजी हमरा पढ़ौलनि, एक सीमा धरि पहुँचा देलनि, तहिना तँ हमहूँ केलियनि। नोकरी भेलापर ताधरि पत्नी गाममे रहली जाधरि बाबू-माए जीबैत रहला। मरितोकाल धरि माए संगे खाइले कहथि। संगे तँ नै खाइ एकठीम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिएसँ कनभेंटमे नाओं लिखेलौं तहिएसँ एके शहरमे रहनौं फूट-फूट रहए लगलौं। समैक संग शिक्षो बदलल। एकाएक नजरि आगू बढ़ि जिनगीक अवस्थापर गेलनि। चारिम अवस्था। जइ अवस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ, अभावकेँ निर्मूल माने नष्ट कऽ परिवारसँ ऊपर उठि समाजमे मिलि जाएब होइ छै। हमर समाज केहेन? जइ समाजमे मनुखक संग-संग जीव-जन्तु, माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसराकेँ नीक-अधला, सुख-दुखमे संग दैत अछि। एकठीम बैस सभ भोज-काजमे खेबो करैए, दसगरदा उत्सवो हँसी-खुशीसँ मनबैए, ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैए, जूरशीतलमे इनार-पोखरि उड़ाहबो करैए, शिव-पार्वती बना बाजाक संग गामो घुमैए।

बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिलि गेल जे अपन सभटा बिसरि गेल। आइ जौं हम अमेरिका जाए रहए लगी तँ ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ केतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा लेल किछु शेष नै बँचल अछि। निराश मनमे एलनि 'करनी देखिहऽ मरनी बेर।' जिनगीमे केतए चूक भेल? जौं चूक नै भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि औगता कऽ उठि प्रोफेसर शंकर कुमार बजला-

"अखनि सुतैबेर अछि जे सुति रहलौं?"

"सूतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।"

"तँ की भुखले रहब।" शंकर कुमार बाजि तँ गेला मुदा मन पाछू

घूमि कऽ तकलकनि। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी तहूमे जे दस-बीस बरख जीबो करितौं से तेहेन रोग भेल जाइ छन्हि जे भुखले मरब। रातिमे खाएब नै तँ नीन केना होएत? जौं नीन नै हएत तँ जीब केतेक दिन?

पत्नी-

''कता दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?''

नोकर सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेला। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नै। मनमे जोर मारलकनि जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहु -दुनू इंजीनियर- अनके नोकरी करैए आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करै छेलौं बेसी तलब उठबै छेलौं, तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छल जे पत्नी थेहगर छेली। बेटा-पुतोहुक आशो छल। सरस्वती थोड़े बुझै छेलखिन जे बुढ़ाड़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर केते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छथिन। तकलीफ हेतनि तँ बजबे करती। भलहिं हमरा बुते पुरौल हुअए वा नै। पहिले जकाँ पाँच-रूपैआ-दस-रूपैआमे नोकर भेटत? तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी-के-देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जौं सिआन राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत? तहूमे कि कोनो स्कूल-कौलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतै। घरमे काज करत तँ खाइले नै देबै से हएत? तहूमे तँ नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तेहेन समए आबि गेल जे कहीं सम्पतिए ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए। जानपर नजरि पड़िते आँखि ढबढबा गेलनि। जाने नै तँ जहान की? जहिना वीणाक तार टुटलापर अवाज खनखना कऽ निकलै छै तहिना टुटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार पत्नीकेँ कहलखिन-

''अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै जोकर टभका लइ छी।''

मने-मन सरस्वती बजली-

''केना जीब?''

❍❍

३. नवान

बाध दिससँ भोरे बड़काकाका आबि नादिमे कुट्टी-सानी लगा, गाए बाहर कऽ केटली नेने कलपर पहुँचला। जइ कलपर आन समए (जाड़-बरसात) हेँक-हेँक भेल रहै छल ओ रुक्ख बूझि पड़लनि। समैक गरमीओ अंतर बूझि पड़लनि। जाड़क मासमे दस बजे दिनक समए पाँचे बजे भोरेमे बूझि पड़लनि। सोहनगर समए बूझि वसन्तपर नजरि गेलनि। वसन्त आमक मंजरक महमही फल रूपमे महमहा रहल अछि। मनमे उठलनि जे वसन्त ॠतु बर्खक पहिल ॠतु (चैत-बैशाख) होइतो शरद-शिशिर सन ॠतु केना आगू अबैत? हाँइ-हाँइ कऽ केटली धोइ लोटामे पानि नेने चूल्हि लग आबि, चाह बनबए लगलथि। केतलीमे चाहकेँ खौलैत देखि मनमे उठलनि जे अहिना समुद्रोमे लहरिक ज्वार-भाँटा उठैए। एते गहींर समुद्र जइमे करोड़ो-अरबो पानिक तह रहैए तइ ऊपरमे किएक एते जोरसँ लहरि अबैए? मन औनाइते रहनि आकि चाहक गंध लगलनि। गिलासमे चीनी दऽ चाह छनलनि। केटली अखारि कऽ रखि चाहक गिलास नेने दरबज्जाक चौकीपर बैस पीबए लगलथि। मन औनाइत रहनि जइसँ चाहो नीक-नहाँति नहियेँ पीऐत रहथि। तखने हहाएल-फुहाएल रविया कनी फड़िक्केसँ टोकलकनि-

"गोड़ लगै छी काका।"

असिरवाद दैत बड़काकाका कहलखिन-

"कनीए पहिने अबितह रबी, तँ चाहो पीऐबितिअ, आब तँ हूसि गेलह।"

"नै काका, हुसलौं नै, नीके भेल। एक चुटकी विष्णु भगवानकेँ चढ़ाइए कऽ मुँहमे पानि लेब।"

विष्णु भगवानक नाओं दिस धियान नै गेलनि। कहलखिन-

"तूँ तँ अनेरे बौआइबला आदमी नै छह। तहन...?"
"काजे एलौं हेन।"
"भोरे कोन काज बजरि गेलह?"
"नोत दइले एलौं।"

नोत सुनि बड़काकाका तारतम्य करए लगला जे अखनि तँ, ने बिआह-मूड़नक दिन अछि आ ने केशे कटौल देखै छिऐ जे बरखीओ-तरखीओ करैत। मुदा चौलो तँ कहियो नै केलक जे आइ करत। सभ दिन शिष्ट बूझि श्रद्धाक नजरिसँ देखैए। मन पाड़लनि- जेठ मास परीव तिथि। आमो पाकब नहियेँ शुरू भेल अछि जे अमैयो भोज करैत। पनरह दिन पछाति अमैया भोज चलत। तहूमे नवको गाछी-कलम तँ केतौ नहियेँ नजरिपर अबैए। तीन दिन रोहणिओकँ चढ़ैमे बाँकीए अछि। खिच्चा आम पाकि कऽ केहेन हएत? धिया-पुता ने चोकर-मोकर खाइए। भोज-काज ओइसँ केना हएत? भोज-काज लेल तँ नीक आम चाही। मन आगू बढ़लनि। तीमन-तरकारीक तँ भोज नै होइए। ओ तँ ओहिना पहिल फड़ महादेवो स्थानमे चढ़बैए आ हितो-अपेक्षितकँ देल जाइत अछि। ओना लोक कटहरोक भोज करैए मुदा ओ तँ आमोसँ पाछू होइए। भऽ सकैए जे गाए बिआएल होइ। गाएक दूध तँ छाँकी देल जाइत अछि। कियो-कियो रक्तमाला स्थानमे चढ़बैए। पाल खेलापर राजाजीकँ गाँजा चढ़बैए आ बिएलापर कुशेश्वर स्थानमे घीउ चढ़बैए। हमरा किएक नोत देत। पुछबो केना करबै? दही-दूधक चर्च तँ खाधुर लोक करैए। हँ-निहसक बीचमे पड़ल बड़काकाका सोचलनि जे हमहीं सवाल पुछिऐ आ वएह ने किए जवाब देत जे अनेरे अपसियाँत होइ छी। मुस्की दैत पुछलखिन-

"आरो के सभ नोतहारी रहथुन?"

बड़काकाकाक प्रश्न समाप्तो नै भेल छेलनि तइ बिच्चेमे रविया बाजि उठल-

"अहींटा छिऐ काका। पहिल नवान छी केते गोटेकँ नोत देबनि। कोनो कि उपनैन छी जे गिनती पुरबए पड़त।"

नवान सुनि बड़काकाका आरो ओझरा गेला। केना ने ओझरैतथि। किछु दिन पूर्व धरि तँ वएह सभसँ पहिने नवानक चर्च करै छेलखिन। जहियासँ बाढ़ि आबि-आबि अगहने उसारि देलक तहियासँ कहब छोड़ि देलखिन। अमती काँट जकाँ एकटा डारि छोड़बथि तँ दोसर लगि जाइन।

मिरचाइक घोँदा जकाँ ओझरी देखि बड़काकक्काक मन असोथकित भऽ गेलनि। आँखि बन्न भऽ गेलनि। आँखि बन्न होइते रविया कहलकनि-

"काका, ओरियान-पाती करैक अछि। अखनि जाइ छी।"

रविया विदा भऽ गेल, मुदा काकाक आँखि बन्ने रहनि। मनमे उपकलनि, भने पतरो कीनब छोड़ि देलौं। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक पतरा समाजमे (गाममे) आबए लगल अछि। सेहो जौं भिन्न-भिन्न लेखक जकाँ एक्के ढंगसँ बुझौल जाइत तँ बड़बढ़ियाँ। मुदा सेहो नै। सभ पतरा कीनि अपनेसँ निर्णए करैक ज्ञाने ने अछि। मनमे खुशी उपकलनि। जे पावनि क्षण-पल गनि निर्धारित होइए ओ तीनदिना हुअ लगल। एकदिना पावनि दुदिना भऽ गेल आ दुदिना तीनदिना। तहूमे तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू छुछुनरि सभ गामे-गाम फड़ि गेल अछि जे एक डारिए समाजकेँ थोड़े चलए देत। समाजो तेहने गँड़िखच्चर अछि जे अपन वर्चस्वक दुआरे उचित-अनुचितक (जायज-नाजायजक) विचारे ने करत। कियो जातिक सिपाही तँ कियो सम्प्रदायक सिपाही बनि मोछ टेढ़ करैत रहैए। केकर के सुनत? एहेन परिस्थितिमे चुप्पे रहब नीक। फेर मनमे उठलनि जे एते ओझरीमे ओझराइक कोन जरूरति अछि। जहन रविया नोत दइए गेल अछि तहन किएक ने स्नान कऽ ओकरे ओइठाम जा बूझि ली। सएह केलनि।

चारिम सालक बाढ़ि रविया दुनू बेकतीक जिनगी मोड़ि देलक। एहेन विकराल बाढ़ि जिनगीक पहिल बाढ़ि छेलै। पाँच बीघा जमीनबला रविया पुरान ढर्राक जिनगी (किसानी जिनगी) बदलैत रहए। लगभग चारि आना बदलि गेल छेलै। उन्नति किस्मक तरकारी आ फल-फलहरीक खेती अपनाए नेने रहए। अन्नक खेतीमे कोनो सुधार नै कऽ सकल रहए। मालो-जाल तहिना (पूर्ववते) रहै। बाधक सभ जजात दहा गेलै। गाछीक बड़का आम-जामुनक गाछ छोड़ि सभ सूखि गेलै। अंगूर, अनारस, नेबो, लताम, धात्री, अनरनेवा इत्यादि सभ नष्ट भऽ गेलै, घरोक सभ समान नष्ट भऽ गेलै। बाढ़िए दिनसँ रविया दुनू परानीक मन टुटए लगलै। जेना-जेना पानि सटकैत जाइ तेना-तेना सूखल गाछ आ घरक सड़ल समान सभ देखि-देखि दुनूक मन टुटब बढ़िते गेलै। मुदा जिनगीक आशा दुनूकेँ अन्हारसँ इजोत दिस धकेलि देलक। नव

उत्साहक संग दुनू परानी आँखि उठा आगू देखि डेग बढ़बए लगला।

सबेरे स्नान कऽ बड़काकाका रविया ऐठाम पहुँचला। आँगन नीपि बुधनी नहाइले गेलि आकि बड़काकाकाकेँ देखलक। हाँइ-हाँइ कऽ गोबराएल हाथ धोइ औगता कऽ आँगन आबि ओसारपर कम्मल बिछा पतिकेँ कहलक-

''काका एलखिन।''

दरबज्जापर आबि बड़काकाका कनडेरिये आँखिए हिया-हिया कऽ आँगन, दरबज्जा, बाड़ी देखए लगलखिन। आँखिपर सँ मनक बिसवास उठए लगलनि जे सत्ते देखै छी आकि फूसि। जइ जेठमे पियाससँ धरतीमे दराड़ि फटि जाइत अछि, हाथ-हाथ भरि जीह बाहर करैत माल-जाल अधसुक्खू भऽ जाइत अछि। ठेहुन भरि मोट गाछक सुखाएल पातक पथार लगि जाइत अछि तैठाम वसन्तक-बहार देखि रहल छी। मनमे ई सभ नचिते रहनि आकि पानक खिल्ली सिक्कीक चंगेरीमे सेरिया कऽ ओसारक चक्कापर रखि रविया आगू आबि कहलकनि-

''अँगने चलू ने काका। अनठिया जकाँ डेढ़ियापर किएक ठाढ़ छी।''

रवियाकेँ मनमे अपन सेहवाल गाए आ दस कट्ठा गरमा धानक बोझ देखेबाक इच्छा रहै। मुदा काकाक मनमे एलनि जे आँगन तँ औरतक होइ छै, पुरुखक नै। पुरुख तँ केबल खाइकाल आ कोनो काजक काल जाइत अछि। मुदा बुधनीओ तँ अँगनेक ओसारपर कम्मल बिछौलक। ओ एना उट-पटांग किएक केलक? ओसारक एक भागमे बुधनी दू कसतारा दही, दु-चंगेरा आम, एक चंगेरा चूड़ा, स्टीलक अढ़ियामे तरकारी इत्यादि भोज्य-पदार्थ रखने रहए। एकरे सभकेँ देखेबाक इच्छा पेटमे रहै। सभ गोटे अपन-अपन विचारमे मगन आ काजोमे लगल। अगहन जकाँ लड़ती-चड़ती देखि बड़काकक्काक मन असथिर होइत रहनि। अस्सीओ बर्खक ओ औरत जिनका पति छन्हि अपनाकेँ केते सुन्दर बुझै छथि मुदा सोलह बर्खक विधवा अपनाकेँ की बुझै छथि? जे जेठ गरमीक विराट मास छी से वसन्ती हवा केना बहा रहल अछि। सालक एक्को दिन ओहन अछि जइ दिन अनेक ॠतु नै भ्रमण करैत

हुअए। चुप-चाप आँखि नचबैत बड़काकाकाकेँ रविया पुन: कहलकनि-

"काका, जहिना पाँच अंग उठलासँ शरीरक वसन्त अबैए तहिना ने वसन्त पंचमीसँ वसन्त ऋृतुक आगमन होइए। आगू-आगू चलू, सभ किछु देखा दइ छी।"

रवियाक बात सुनि बड़काकाकाकेँ खुशी भेलनि मुदा मनमे 'नवान' शब्द घुरियाइत रहनि। मन नचैत रहनि अगहनक नवानपर। बजला-

"पतरा देखब छोड़ि देलौं तँए सभ बात नजरिपर नै अबैए। कनी-मनी मन अछि जे नवान तँ अगहन माने कातिक इजोरिया पखसँ लऽ कऽ अदहा पूसे धरिमे होइ छेलै।"

काकाक बात सुनि रवियाक मनमे खुशी नै भेल, पुछलकनि-

"काका नवान की?"
"नव अन्नक ग्रहण।"
"सएह छी काका।"
"चलह कनी देखा दए।"

धान देखबैत रविया कहलकनि-

"चौरीमे एक बीघा खेत अछि। सत-सत, अठ-अठ बर्खपर हँसुआ खेत पहुँचै छल। सेहो दूध महक डाढ़ीए होइ छल। गोटे साल आध-मनक कट्ठा तँ गोटेबेर तीन पसेरी कट्ठा धान होइ छेलए। तहूमे तेते चिलमिल, कोढ़िला आ करमी लत्ती भऽ जाइ छल जे ऊपरका खेतीसँ दोबर खर्च होइ छेलए। उपजा देखि मनमे उठै छल जे बेचिए लेब नीक होएत। मुदा लेबालो नै। के अनेरे पूजी दूरि करितए। सबहक एक्के गति। गामक अदहा हिस्सा जमीन एहने अछि। बरख दसम मनमे उठल जे चौथाइ खेतमे डबरा खुनि माछ पोसब। नवका-नवका माछक थर सभ हेचरीमे बिकाइत अछि। ओकरे पोसब। सदिकाल रेडियोओसँ आ अखबारो-पत्रिका सभमे माछ पोसैक लाभ देखौल जाइ छै। खूब लाभकारी अछि। सएह

केलौं। दू कट्ठा ऊपरका खेत बेचि डबरा खुनेलौं। हेचरीसँ थर आनि देलिऐ। ले बलैया, कोसी नहरिमे पानि एलै। फाटकक खुजले मुँह छोड़ि देलक। भरि मुँहखर पानि चौड़ीमे पसरि गेलै। बीच बाधमे खेत अछि। डबराक महारोपर जाएब कठिन भऽ गेल। एक दिन नहाइबेरमे केरा थम्हक बेरही बना कऽ गेलौं तँ देखिलिऐ जे सौंसे चौरीक सलाढ़ लगल अछि। एक्कोटा थरक दर्शन नै भेल।''

''देखि कऽ बड़ दुख भेल हेतह?''

''एँह, काका की कहब, अपनेटा होइत तहन ने, तेहने तँ सौंसे बाधे झलकैत रहए।''

''तब तँ निचला खेतक संग दू कट्ठा ऊपरको चलि गेलह।''

''ओतबे गेल। साले-साल मलगुजारीओ भरए पड़ैए। तेहेन पाहीपट्टीक पट्टी छी जे अग्गहसँ बिग्गह भरए पड़ैए। गामक खेतक कोनो एक्के रंग मलगुजारी अछि। अन्हरा राज छै। जइ खेतमे उपजा नै होइए ओकरे मलगुजारी बेसी अछि। हँ, तँ कहै छेलौं जे ओइ एक बीघा चौरी खेतमे डबरा भरा देलापर तेसराँ आ पौरुकाँ पच्चीस क्वीन्टल आ सताइस क्वीन्टल धान भेल। उपजबैक ढंगो नै छल। थोड़े-थोड़े आब सीखने जा रहल छी। ऐबेर दुनू सालसँ नीक धान अछि। अखनि काटि-काटि अनिते छी। तैयार पछाति करब। चलू, गाएकेँ देखियौ।''

सेहवाल गाए। ललौन-कारी। केतौ-केतौ चितकाबर। पतरकी नांगरि। साढ़े चारि फूट खड़ाइ आ आठ फूट नमती। निच्चाँसँ ऊपर धरि काका तजबीज केलनि मुदा नजरिपर चढ़बे ने करनि जे कोन किस्मक गाए छी। थने कहै छै जे भरि बाल्टीन खुआउ आ भरि बाल्टीन दूहि कऽ लऽ जाउ। गाम दिस नजरि दौगेलनि। कहाँ केतौ ऐ कटिंगक गाए छै। कियो-कियो जे अनबो केलनि तँ महिंसक खाँढ़क जरसी छन्हि। सेहो तँ गनले-गूथल अछि। पहुलका गाए सभ जे अछि ओकर खाँढ़े बिगड़ि गेलै। तेहेन-तेहेन दानी सभ

साँढ़ दान केलनि जे टाएरक बड़दक वंश कोल्हुक रस्ता धेलक।

रविया-

''काका, की सभ देखै छिऐ?''

बड़काकाका-

''हौ, कोन चीज नै देखैबला अछि। केतएसँ अनलह?''

''चारिम साल जे बाढ़ि आएल से मालो-जालकेँ नष्ट कऽ देलक। खुट्टेपर बान्हल गाए-बड़द मरि गेल। धिया-पुता मात्रिकमे रहए तँए बँचि गेल। बाढ़ि पछाति सासु भेँट करैले समाद पठौलनि। हमर मन नै मानलक। ओकरे -पत्नीकेँ- कहलिऐ जाइले। एक तँ नैहर दोसर धियो-पुताकेँ देखना साल भरि भऽ गेल छेलै। गेल। ओतै एकटा गाए आ खेती करैले बड़दो आ मन तीनेक अन्न देलखिन। किछुए दिन पछाति गाए उठल...।''

मुस्की दैत पुन: बाजल-

> ''जहिना बाढ़ि एने मूस पतरा गेल तहिना अनेरुआ साँढ़ो सभ। मन भेल जे साँढ़ लग लऽ जाइऐ। मुदा मनमे भेल, अनेर खाइत-खाइत तँ बुधियारो लोक सनकि जाइत अछि, साँढ़-पारा तँ जानिए कऽ पशु छी। साँढ़ लग नै लऽ जा डाक्टरकेँ बजा अनलियनि। वएह पाल (सिम) देलखिन तकरे बच्चा छी। गाए तेहेन दुधगरि जे अपन जीह दागि बच्चाकेँ पोसलौं। वएह गाए छी। पाँचम दिन बिआएल हेन।''

पाँचम दिन सुनिते बड़काकक्काक मन फेर ओझरा गेलनि। मनमे नाचए लगलनि जे गाए तँ नअ दिनपर शुद्ध होइए। अशुद्ध दूधक दही खुऔत आकि केकरोसँ दूध आनि पौरने अछि। पुछबो केना करबै? ओहन खाधुर थोड़े छी जे खाइसँ पहिने पता लगा लेब। शुद्ध-अशुद्धक विचार मनमे संघर्ष करए लगलनि। एक दिस देखै छथि जइ गाएक दूध, गोंत, गोबर सभ शुद्ध होइए, एते तक जे दूधक लाटमे छुतहर घैलो शुद्ध भऽ जाइत अछि, दूध तँ अमृतोसँ पैघ होइए। दोसर दिस देखै छथि जे सभ अशुद्ध गाएक दूधसँ परहेजो करैए। ओना देस-देसक आ कोस-कोसक चलनि सेहो एक-दोसराक

विपरीतो चलैए। विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देखि निर्णए केलनि जे पुछनहि शुद्ध-अशुद्ध। जौं बुझले नै रहत तहन शुद्ध-अशुद्ध की होएत। मनमे खुशी एलनि, पुछलखिन-

"दूध केते होइ छह?"

दूधक नाओं सुनि रवियाक मन, फूलक पहिल सुगंध जकाँ महकि उठल। बाजल-

"काका, की कहू! दुहैत-दुहैत आङुर भरा जाइए। बेराबेरी दुनू बेकती दुहै छी। ओना अखनि पाँचे दिन भेल अछि। तहूमे दू दिन अदहे-छिदहे दूहलौं। पहिलौठ रहने थनमे गुदगुदीक चलते हरपटाए लगए। मुदा परसूसँ दूधो फाटब बन्न भऽ गेल अछि आ गाएओ असथिर भऽ गेल।"

"दूध बेचबो करै छह?"

"अखनि तक तँ नै बेचलौं हेन मुदा एते दूध दुइए गोटे बुते केना सठत।" कहि आगू बढ़ल। आमक कलम। चारू कातक हत्तापर लताम, दारीम, नेबो, शरीफा रोपल। गाछक बीचमे अनारस, हरदी-आदी सेहो रोपल देखि खुशीसँ गद्-गद् होइत बड़काकाका बजला-

"रबी, तेहेन वृन्दावन सजौने छह जे एत्तएसँ जाइक मने नै होइए।"

काकाक खुशी देखि रविया हँसैत कहए लगलनि-

"काका, बाढ़िक नोकसानसँ मन टूटि गेल। आगू नाथ ने पाछू पगहा देखि मनमे आबि गेल जे सभ खेत-पथार बेचि गामसँ चलि जाइ। मुदा फेर मनमे आएल जे गामसँ केतए जाएब। गाम-घर बाढ़िमे दहाइत अछि, रौदीमे जरैत अछि। मुदा शहरो-बाजारक दशा तँ सएह देखै छी। दिन-दहाड़े डकैती, हत्या, अपहरण, सदिकाल होइते रहैए। तेतबे नै, केतौ भाषाक तँ केतौ सम्प्रदायक जहर वायुमंडलकेँ दुषित केने अछि।"

रवियाक बात सुनि मुड़ी डोलबैत काका कहलखिन-

''हँ, ई तँ लाख रूपैआक बात कहलह। हम तँ बुढ़ा गेलौं। दू-चारि सालक मेहमान छी। भने भगवान आँखिक इजोत लए लेलनि। ने किछु देखब आ ने दुख हएत। छोड़ह दुनियाँदारीकेँ, अपन कहअ।''

बड़काकक्काक जिज्ञासा देखि रविया बाजल-

''काका, घर-सँ-बाहर धरि एक्के रंग बूझि पड़ल। की करी की नै करी! मनमे एबे नै करए। बड़ीकाल पछाति मन पड़ल अपन देश आ पूर्वज। जहिएसँ मनुख ऐ धरतीपर अछि तहिएसँ ने हमर-अहाँक वंश सेहो छथि। जौं से नै रहितथि तँ अखनि केना रहितो। तहिना तँ अपन देशो (मिथिला) अछि। अदौएसँ मिथिलाक चर्च वेद-पुरानमे अछि। तैबीच लाखो भुमकम, अन्हर-बिहाड़ि, पानि-पाथर, बाढ़ि आएल होएत। केना अपन पूर्वज सहलनि? की अपनो सभमे ओइ वंशक खून नै अछि? मनमे उत्साह जगल।''

बड़काकाका-

''वाह! अच्छा, ऐ बगीचाक विषयमे कहअ?''

रविया-

''काका, तेसर साल मद्रासी वेपारी ट्रकपर फल-फलहरीक गाछ बेचैले आएल। हमहूँ पनहरटा गाछ कीनि कऽ रोपलौं। वएह छी। परुँकों-तेसरों मोजरल रहै मुदा मोजर तोड़ि देलिऐ। एकटा-दूटा आम फड़ै मुदा गाछक सेखीए चलि जाइ छेलै। बड़हनमो खूब अछि। तीने सालक गाछ छै, सए-सवा-सए कऽ फड़ल अछि। अपने ऐठामक गुलाबखास जकाँ अछि मुदा पकैए ओइसँ पहिने। यएह आम खुआएब। आब आगू चलू तरकारीक खेत दिस।''

खेतक आड़िपर अबिते कक्काक नजरि चोन्हरा गेलनि। तरहत्थीसँ आँखि पोछि देखलनि तँ मनमे शंका भेलनि। जइ जेठमे धार-पोखरि-इनार सूखि जाइत अछि, बाध-वोनमे लू चलैत रहैए, खेतसँ धधड़ा जकाँ ताव

उठैत रहैए ओइ खेतकँ हरिअर वस्त्र पहिरा गहना-जेवरसँ सजा नायिका जकाँ मलड़बैत अछि, ई नान्हिटा काज नै छी। मुदा काजो ओहन अछि जे सोझहे स्वर्ग बनबैए। जिज्ञासा भरल नजरिसँ काका पुछलखिन-

"रबी, की सभ लगौने छह?"

रविया कहलकनि-

"केते कहब काका, एकबेर घूमिए कऽ देखि लियौ। सुरुजो बारहसँ निच्चाँ उतरैपर छथि। चलू भोजन कऽ लिअ।"

"मन भरि गेल। खाइक छुधा मेटा गेल। होइए जे जहिना कृष्ण वृन्दावनमे रहथि तहिना हमहूँ एतै रहि जाइ।"

❍❍

४. तिलासंक्रान्तिक लाइ

धानक लड़ती-चड़ती पतराइते गमैया विद्यालयमे तिलासंक्रान्तिक पढ़ाइ शुरू भऽ गेल। विद्यालय लेल ने जगहक कमी आ ने पढ़ौनिहारक। इनार-पोखरिक घाट सन पवित्र स्थान आ बिनु आरक्षणवाली महिला शिक्षिका। शिक्षिको सभ इमानदार। ने ट्यूशन फीस लैत आ ने दरमाहा। पढ़बैले एते उताहुल जे खेनाइओ-पिनाइक चिन्ता नै। छोट दिन होइतो भानस-भातक कौड़ीओ भरि ढेकार नै। पावनिक विषय नम्हर तँए पूरा विषयक शिक्षक तँ नै मुदा टुकड़ी-टुकड़ी करि कऽ अपना-अपना ढंगसँ अपन हिस्साक विषय पढ़बए लगली।

पाँच दिन पहिनहि केदार कलकत्तासँ गाम आबि गेल। ओना ओ दुर्गोपूजामे सभ साल एबे करै छथि, तिलोसंक्रान्ति सेहो नहियेँ छोड़ै छथि। केना छोड़ता? आब कि कलकत्ता ओ कलकत्ता रहल जे तीन-तीन दिन गाड़ीमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकड़ि जाएत। आब तँ छह घंटाक रस्ता अछि। तहूमे केदार अपन गाड़ी रखने छथि, चाह-नास्ता कलकत्ताक डेरामे करै छथि आ कलौ गाममे। हुनके सबहक तँ ई दुनियाँ आ देश छी। एक तँ बैंकक मैनेजरक दरमाहा दोसर कुरसीक कमीशन आ तैपर सँ अपनो बैंकक शाखा खोलने छथि। कमीशने वेतन तँए स्टाफोक कमी नै। शहरे कलकत्ता सन जैठाम भीखमंगो करोड़पति अछि।

''गाममे जौं कियो मरद छथि तँ केदारे छथि। गाममे आँखि उठा कऽ हुनका दिस के तकतनि। तिलासंक्रान्तिमे अखनो सतरहटा अँचार, बीकानेरक पापड़ केदार छोड़ि के खाइत अछि? विधिपूर्वक जौं पावनि करैए तँ केदार छोड़ि दोसर के?'' -पोखरिक घाटपर दतमनि करैत जगदरवाली कछुबीवालीकेँ कहलखिन।

साड़ी-साया रखि कछुबीवाली घाटपर बैस झुटकासँ पएर मजै छेली। मन चिन्तामे बाझल छेलनि। काल्हिए पावनि छी। ने चूड़ा कुटलौं हेन आ ने मुरही भुजलौं। जाबे चूड़ा-मुरही नै हएत ताबे लाइ कथीक बनाएब। गलती अपनो भेल जे अगते-ओरियान नै केलौं। फेर मनमे उठलनि- एक दिनक पावनि लेल मास दिन पहिनेसँ ओरियान करए लागब। एतबे काज अछि?

काजक दुआरे एक्को दिन ने समैपर नहाइ छी आ ने खाइ छी। जेकरा काज नै छै सालो भरि पावनिए करए। कोनो की हम जनै छेलिऐ जे पनरह दिन पहिनेसँ शीतलहरि लादि देतै? चूड़ा-मुरहीक ताड़ल धान भारलो ने जाएत? जइ देवताकेँ पावनि करबनि हुनका एतबो बुत्ता नै छन्हि जे अपनो पावनिक ओरियानक चिन्ता करतथि। फेर मनमे एलनि जे चूड़ा-मुरही तँ दोकानो-दौरीमे बिकाइत अछि। कीनि लेब। मुदा लाइ केना हएत? चूड़ा-मुरही तँ अखड़ा होइए। अमैनियाक जरूरति नै अछि। मुदा लाइ? केहन-कहाँ हाथे, केहेन-कहाँ वर्तनमे बनौने हएत? तहूमे आइ-काल्हिक बनियाँ सभ तेहेन गैखोर भऽ गेल अछि जे गुड़क बदला छुएमे बना पाइ टलिया लैत अछि। दिनेमे मुरही-चूड़ा लऽ आनब आ रातिमे खएला-पीला पछाति बना लेब। मन असथिर होइत रहनि आकि जगदरवालीक बात मन पड़लनि। क्रोध फेर आपसी रस्तासँ घूमि गेलनि। तुरुछ भऽ उत्तर देलखिन-

> ''सतरह रंगक आकि पचासे रंगक अँचार जे केदरबा खएत तइमे कछुबीवालीक जीहोक पानि मेटेतै?''

श्यामाकाकी चुपचाप नहा कऽ घर दिसक रस्ता धेली। अपना धुनिमे श्यामाकाकी। ने समाजसँ कोनो मतलब आ ने समाजक काजसँ। समाजक काजे बेढंग अछि। केकरो कोनो ठेकान नै। की बाजत आ की करत तेकर कोन ठेकान। एक्के मुँह जेते लोकसँ गप करत, एक्के गपकेँ तेते रंगसँ बाजत। लगले किछु लगले किछु। तहूमे आब तेहेन-तेहेन अगिमुत्तू सभ भेल हेन जे, जूरशीतलक मुइल नढ़ियाकेँ जहिना कुत्ता सभ अपना-अपना दिस दाँतसँ पकड़ि-पकड़ि घिचैत अछि, तहिना भऽ गेल अछि नै तँ केतौ एना हुअए जे एक्के गाममे एक्के पावनि दूदिना, तीनदिना दुनू होइ। तहन तँ जेकरा जे मन फुड़ै छै से करैए। सभ करत अपना मने आ हम करब लोकक मने। अपन जिनगी अछि अपन दुख-सुख अछि। अपनासँ पलखति हएत तँ दोसरो बच्चा दिस देखब। नै तँ अपन के सम्हारि देत? यएह विचार सभ श्यामाकाकीक मनमे नचैत रहनि। चूड़ो-मुरहीक लाइ भइए गेल। तिलबो बनाइए लेलौं। कुरथीओ-तेबखाक दालि ऐछिए। लोको सभ जीहक चसकी दुआरे कियो खेरही तँ कियो राहड़ि तँ कियो बदामक दालिक खिच्चड़ि

बनबैए। एते बात मनमे उठिते काकीक विचार रूकि गेलनि। कुरथीक तुलना राहड़ि, खेरहीसँ करए लगली। पूसक संक्रान्तिक दिन पावनि होइए। राहड़ि चैत-बैशाखमे जहनकि बदाम फागुन आ खेरही जेठ-अखाढ़मे होइए, तइ हिसाबे कुरथीए ने नवकी कनियाँ बनि घर एली। ई बात मनमे अबिते काकीक मन आगू बढ़लनि। हमरा सन दही केकर हेतै? कियो लोहा महिंसक दूध पौरने हएत तँ कियो पोखरिक पानिक। मुहसँ हँसी निकललनि। जेहने लोक सभ ठक भऽ गेल अछि तहने देवीओ-देवता सभ। अनदिना कियो दूधमे पानि फेंटि कऽ बेचैए तँ बेचैए, पावनिमे जे हुनको सभकेँ खुअबै छन्हि से ओ नै बुझै छथिन। किएक ने हड़हरी बज्जर खसा दइ छथिन। एते दिन हुनको सभकेँ शक्ति छेलनि आब ओहो सभ डलडाक मधुर खा पेट बिगाड़ि लेलन्हि अछि। फेर मन अपना दिस घुमलनि। खिच्चड़िमे जम्बीरी नेबो नीक आकि घीउ। मुदा ऐ प्रश्नपर मन नै अँटकलनि। खाइबेरमे बूझल जाएत। फेर मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत आँखि उठा कऽ तकलनि तँ दिनकरपर नजरि पड़लनि। मने-मन प्रणाम कऽ कहए लगलखिन-

> ''एहनो जाड़मे अहाँ चास-वासकेँ भरि देने छिऐ। अपना लेल कोठी माल-जाल लेल टाल, खेतक-खेत तरकारी, बाधक-बाध गहुम, दलिहन-तेलहनसँ सजल खेत। हे दिनकर बहुत जाड़ सहि जीब रहल छी, कल्लह फेरू।''

आँखि निच्चाँ होइते मनमे एलनि। आइए ने सीमापर (मकर रेखा) जेता। काल्हिसँ तँ तिले-तिल बढ़बे करता।

पावनिक छुट्टीमे ज्योतिषीकाका गाम नै एला कि काकीकेँ आफद भऽ गेलखिन। ओना साल भरिसँ काकीओक मन बदलि रहल छन्हि। काकी जेते बुधियार भेल जाइ छथिन तेते काकासँ मन-भेद भेल जाइ छन्हि। ज्योतिषीकाकाकेँ काकीक ओइ किरदानीसँ हृदैमे चोट लगलनि। जइ दिन काकी काकाक कमाएल रूपैआ चोरा कऽ बुइधिक सर्टिफिकेट कीनि लेलखिन, ओही दिनसँ काकीक आफद काका आ काकाक आफद काकी भऽ गेलखिन। विद्यालयसँ अबैतखिन बाटेमे पावनिपर नजरि गेलनि। कनीकाल गुम्म भऽ उत्तर-दछिनक सीमापर आँखि रोपलनि। आँखि रोपिते हृदैमे हँसी

उठलनि। जे लोक दक्षिणायणमे मरैत अछि तँ नर्क जाइत अछि आ उत्तरायणमे मुइलापर स्वर्ग। स्वर्ग तँ मनुख निर्मित छी जहनकि मकर संक्रान्ति ग्रह-नक्षत्रक प्रक्रिया छी। दुनू एकठीम केना भऽ गेल। बाटेसँ ज्योतिषीकक्काक मनकेँ हौंड़ने रहनि। आँगनमे पएर रखिते काकी टोकि देलखिन-

"तलब भेटल कि नै? अखनि धरि कोनो ओरियान नै भेल अछि।"

काकीक बात सुनि काकाक मन लहरि गेलनि। आँखि गुड़रि काकीकेँ देखि ओसारक चौकीपर झोरा रखि हाथ-पएर धोइले कल दिस बढ़ला। काका मने-मन सोचथि जे सभ काजक बेर फँड़बन्ही करती आ टाका बेरमे काका मन पड़ै छन्हि। काका अप्पन धुनिमे आ काकी पावनिक धुनिमे। तिलासंक्रान्ति सन पावनि दंगलक अखाड़ापर उतरैबला अछि, ओइ लेल अखनि धरि हाथ-पर-हाथ जोड़ि बैसल छी...। मुदा पहुलके नजरि काकीकेँ डोला देलकनि। करेज काँपि गेलनि। मन निर्णए कऽ लेलकनि जे परिवारक गारजन पुरुख होइ छथि, मान-अपमान पुरुखक कपारपर चढ़त। हम तँ अनेरे तबाह छी। जे आनि कऽ देता ओ बना कऽ आगूमे धऽ देबनि।

कलपर पानि पीब, आँगन आबि ज्योतिषीकाका चौकीपर बैस तमाकुल चुनबए लगला। अपन भलाइ सोचि काकी बाड़ी दिस टहलि गेली। मुँहमे तमाकुल लैत काका आँखि घुमा कऽ पत्नी दिस देखलखिन। मन खुट-खुट करनि जे फेर ने किम्हरोसँ आबि किछु फरमा देथि। मुदा सोझमे नै देखि मन असथिर भेलनि। मनमे उठलनि, काल्हि मकर संक्रान्ति छी। जैठामसँ सुरूज दछिन मुहेँ नै बढ़ि उत्तर मुहेँ घुमता। सुरूजकेँ उत्तरायण होइते जीव-जन्तुमे सुरूजक प्रकाश नव स्फूर्ति पैदा करैए। मौसमक बदलाव हुअ लगैए। ऐसँ परिवर्त्तनक रूप देखि पड़ैए मुदा लोकमे परिवर्त्तन की औत? जे दछिनपंथी विचार बेवहारिक रूपमे पर्वत सदृश अपन रूप बनौने अछि से चूड़ा-लाइ खेने भेट जाएत?

संक्रान्तिक पहिल संध्या अबैत-अबैत भोरमे नहेबाक कार्यक्रम तैयार भऽ गेल। ऐ प्रश्नपर विद्यालयक सभ शिक्षिका एकमत भऽ गेली। ऐ कार्यक्रममे एकटा फनिगा आबि गेल। फनिगाक गंधसँ वातावरणमे गंध पसरि

गेल। गंध ई जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी (कमलेश्वरी) महरानी चुड़लाइक छिट्टा रखने छथिन। जे पहिने नहाइले जाएत ओकरा देथिन।

टेल्हुक धिया-पुतासँ लऽ कऽ ढेरबा धरि अपन दावा ठोकए लगल जे पहिने हम नहाएब आ कमलेसरी महरानीक चुड़-लाइक छिट्टा आनब। अपन-अपन शक्तिकेँ जगबैत संकल्पित सभ हुअ लगल।

जारनि तोड़ि कऽ अबैकाल अझप्पे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरीक चुड़लाइक छिट्टा गोपला सुनलक। मुदा किछु दोहरा कऽ नै बुझए चाहलक। माथपर ठहुरीक बोझ रहै। मुदा भार मनसँ हटि चूड़ा-लाइक छिट्टापर पड़लै। बड़का छिट्टा, जेहेन भत-भोजमे भात झँकै लेल होइ छै। भरिए दिन ने पावनि छै। केते खाएब। मनमे खुशीक अँकुड़ा उगलै। घरपर आबि जारनिक बोझ रखि मने-मन संकल्प केलक जे सभसँ पहिने हम घाटपर जाएब। गहींर गोपला, विचारकेँ गोपनीय रखलक। माएओ-बापकेँ नै कहलक।

बारह बजे रातिमे नीन टुटिते गोपला माए-बापकेँ बिनु किछु कहनै पोखरि दिस विदा भेल। माए बुझलनि जे लघी-तघी करए निकलल। बुधू (पिता) नीनभेर, तँए बुझबे ने केलनि। जहिना प्रेमीकेँ अपन प्रिय छोड़ि दुनियाँमे किछु नै देखि पड़ै छै, तहिना लाइक छिट्टा छोड़ि गोपला किछु नै देखैत। दुलकी मारैत पोखरि दिस बढ़बो करै आ आँखि-कान उठा-उठा आगुओ ताकै जे क्यो दोसर ने तँ बढ़ि गेल। ने कानसँ कोनो भनक बूझि पड़ै आ ने अन्हारमे किछु देखए। किछु काल देखि माए बान्हपर आबि तकलक तँ गोपलाकेँ नै देखलक। मनमे टराटक लगए लगलै, जे एते अन्हारमे केतए चलि गेल। भरिसक भकुआएलमे किम्हरो चलि ने तँ गेल। मुदा अन्हारमे देखबे केते दूर करब। ओह! से नै तँ हुनको (पति) उठा दुनू गोटे चोरबत्तीक हाथे तकबै। सएह कैलक।

पनरह-बीस दिनसँ शीतलहरी चलैत। लागल-लागल पछबो संग दैत। घूरक आगिओ मैलमुँह भेल। गोपलाकेँ ने रस्ता अन्हार बूझि पड़ै आ ने पोखरि दूर, ने जाड़ बूझि पड़ै आ ने पोखरिमे पानि। साक्षत् ब्रह्ममे लीन भक्त जकाँ गोपलो लाइमे लीन भऽ गेल। पोखरि पहुँच घाटक तरमे गोपला हँथोरिया दिअ लगल। जाधरि लाइक आशा मनमे रहै ताधरि खूब हँथोड़लक। होंथरैत-होंथरैत देह बर्फ जकाँ जमि गेलै। जाड़ बूझि पड़ए

लगलै। सौंसे देह थरथर काँपए लगलै। गोपालक मन मानि गेलै जे मरि जाएब। पोखरिसँ ऊपर भऽ घर दिसक रस्ता धेलक। ताधरि चोरबत्तीक हाथे आगू-आगू माए आ दू लग्गा पाछू पिता पेना नेने अबै छेलखिन। फड़िक्केसँ माए थर-थर कँपैत गोपलाकेँ पुछलक-

"गोपाल।"

गोपाल सुनि बुधबाकेँ खौंझ उठलै। बाजल-

"मिरगी उठल छलौ जे पोखरि आएल छेलँह?"

थरथराइत गोपलाकेँ माए अपन आँचरसँ देह पोछए लगली। बेटाक दशा देखि पिताक मन पघिलए लगलनि। जहिना गंगा स्नान पछाति नीक विचार मनमे उपकैए तहिना बुधूक मनमे उपकलै। सोचए लगल, आइ जौं मरि जाइत तँ दिनमे केकरा तिल-चाउर दितिऐ, के तिल बोहैत? दछिनबारि टोलमे सबहक बेटा-पुतोहु बाप-माएकेँ छोड़ि परदेश चलि गेल अछि। बुढ़िया सभ नवकी कनियाँ जकाँ अपनेसँ तिलकोर तड़ै जाइ छथि। तिलकोरक तरुआ केहेन होइ छै ई तँ बुढ़िए कनियाँ सभ बुझै छथिन। जिबठ बान्हि बुधबा गोपलाकेँ पजिया कऽ पकड़ि कोरामे लए डेगगरसँ आँगन दिस बढ़ए लगल। आँगन आबि पुआर धधकौलक।

जहिना गोपलाक देह भीजल तहिना देहमे सटल गंजी-पेन्टो। मुदा कपड़ा बदलैक साहस नै भेलै। देह कठुआएल, हाथ बिधुआएल, ओंगरी ठिठुरल। मुदा कनीएकाल पछाति टनकल। दुनू परानी बुधबो जाड़सँ ठिठुरल रहए। तीनू टनगर भेल। टनगर होइते गोपाल माएकेँ कहलक-

"आंडी-पेंट आनि दे।"

गोपाल पेंट-शर्ट पहिरए लगल। तीनूक सिरसिराएल देह आगिक गरमी पाबि वसन्ती हवामे टहलए लगल। बुधबा पत्नी दिस देखि हाथ पकड़ि, पहुँचल फकीर जकाँ बाजल-

"आइ, गोपला हाथसँ चलि जाइत। सबहक आँगनमे पावनिक उत्साह रहितै आ अपना दुनू गोटे बेटाक सोगमे कनैत दिन

बितबितौं।''

पतिक बात सुनि आशा चौंकि गेली। जेना भुमकमक धक्का धरतीकेँ लगैत तहिना आशाक हृदैमे धक्का लगल। औगता कऽ उठि कोठीपर रखल मुजेलासँ दूटा गोल-गोल लाइ लेने गोपलाक हाथमे देलक। हाथमे चूड़ाक लाइ अबिते गोपाल हबक मारलक। मुदा तेहेन सक्कत जे ठोर चँछा गेलै, मगर दाँतसँ लाइ नै कटलै। माएकेँ कहलक-

''लाइ कहाँ टुटैए।''

बेटाक बात सुनि आशाक मनमे खुशी उपकल। अपन कारीगरीकेँ परीक्षामे पास देखि मुस्की दैत पति दिस देखि बजली-

''तेहेन पाकमे लाइ बनौने छी जे बिना सिलौट-लोढ़ीसँ सुनत?''

बेटाकेँ बुधू पुछलक-

''आइ तँ केतौ नाचो-ताँच ने होइ छै तखनि किए तूँ रातिमे एते दूर चलि गेलेँ।''

बिच्चेमे आशा बजली-

''लघी-तघी करैले उठल हेतै, भकुआएलमे बौआ गेल हेतै।''

हाँइ-हाँइ गोपाल मुँहक लाइकेँ चिबा कऽ घोंटि माए दिस देखि बाजल-

''लोक सभ साँझमे बजै छेलै जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी लाइ रखै छथिन। उहए अनैले गेल रहौं।''

गोपलाक बात सुनि बुधूक मन महुरा गेलै। मने-मन बाजल जे अपना कमेने नै हएत ओ भोला बाबा बड़दक...। मुदा क्रोधकेँ ऐ दुआरे मनमे दबने रहल जे गामक लीला सभ आँखिक सोझहामे नाचए लगल रहै। जे सभ जुआनीमे, मद-मस्त भोम्हरा जकाँ जिनगी बितौलनि, बेटा-पुतोहुक अछैत मुहसँ धुँआएल चूल्हि फूकए पड़ै छन्हि, जइसँ दुनू आँखिमे नोर टघरैत रहै छन्हि। मुदा ओ सभ तेकरा हृदैक बेथा नै, धुँआ लागब बुझै छथि। बुधूक हृदए पसीज गेलै। मुरखो अछि तैयो तँ बेटे छी। बरखे ने चौदहटा भऽ गेलै मुदा

भरि दिन तँ असकरे लग्गी लऽ कऽ वोनाएल रहैए। ने खाइक ठेकान रहै छै आ ने नहाइक। तहन बुधिसँ भेँट केना हेतै?

बेटाक बात सुनि माएक मन उमड़ि गेलनि। बुझबैत बजली-

> "रौ बौआ! अपना की कोनो चीजक कमी अछि। जेते रंगक धान गिरहतकेँ होइ छै तेते अपनो ने होइए। सतरियाक चूड़ा कुटने छी, लाइ बनौने छी आ ओकरे खिच्चड़िओ रान्हब।"

पछुआरक रस्तापर गल्ल-गुल्ल सुनि आशा घरसँ निकलि डेढ़ियापर पहुँचली कि महरैलवालीक बाजब सुनलनि। डेढ़िएपर ठाढ़ भऽ सुनए लगली। महरैलवाली हर्ड़ीवालीकेँ कहलखिन-

> "हम तँ आध पहर रातिए नहेलौं। अखनि धरि अहाँ पछुआएले छी।"

हर्ड़ीवाली कहलकनि-

> "अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसिऔने छेलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब।"

दुनू गोटेक गपकेँ दबैत तमोरियावाली जोर-जोरसँ पुतोहुकेँ कहैत रहथिन-

> "तीन दिनसँ बोखार छेलह तहन एहेन समैमे भोरे किए नहेलह?"

मुदा पुतोहु उत्तर नै देलकनि। आशाकेँ मन पड़लनि जाड़सँ कँपैत गोपाल।

❍❍

५. भाइक सिनेह

बारहसँ बेसी राति ढहि चुकल मुदा एक नै बजल छल। अगहन मासक अन्हरियाक चतुर्दशी। एक तँ डम्हाएल अन्हार तैपर झक्सी जकाँ ओस खसैत। आँखिक रोशनी एते दुबरा गेल जे अपनो देह भरि नै देखि पबै छेलौं। जाड़क राति, तँए लोक सबेरे सीरक सेरिया कऽ ओछाइन पकड़ि लइ छल। पहिल नीन पूरि कऽ टुटिते शिष्टदेवक मन छोट भाए विचारनाथपर पहुँचल। सभ तरहेँ श्रेष्ठ रहितो आँखिक सोझहेमे परिवार टूटि गेल। जिनगी तँ ओहन जाल नै, जइमे ओझराएब अनिवार्य अछि। विधाता तँ सभ किछु दऽ मनुखकेँ पठबै छथिन तहन किए लोक मकड़ा जकाँ अपने करनीसँ ओझरा जाइत अछि। विवेकमे केना भूर भऽ जाइ छै जे हंस नै बनि कऽ कार-कौआ बनि जाइत अछि। परिवार भलहिं फूट भऽ गेल हुअए मुदा विचारनाथ तँ छोटे भाए छथि। पितातुल्य छिऐ। कियो बुझै वा नै बुझै, अपने तँ जरूर बुझै छी। अखनि धरि जेते दुनियाँ आ उगैत सुरूजक दर्शन हमरा भेल अछि ओतेक तँ विचारनाथकेँ नहियेँ भेलैहेँ। परिवार टुटैक दोख केकरा लगतै। पितातुल्य तँ पिरवारमे हमहीं छिऐ। मनुखक जिनगीक गाड़ी समैक संग चलैत आएल अछि आ आगुओ चलिते रहत। सोचैत-विचारैत शिष्टदेवक हृदए बर्फ जकाँ पिघलि-पिघलि पानि हुअ लगल। पिपनीमे अँटकल नोरक बून सरस्वती नदीक धार जकाँ पहाड़पर सँ समतल भूमिमे बहए लगल। नोरक संग भाइक सिनेह सेहो निकलल। जिनगीक सभ बाटमे विचारनाथ पाछू अछि तँए ओकर बाँहि पकड़ि आगू खिंचबाक अछि। पाँच समांग कमेन्हिारक परिवार अछि। ओ दुइए परानी अछि। घरक कोनो वस्तु निकालि कऽ देलासँ पत्नी देखि लेती मुदा खड़िहाँनक धानक बोझ तँ नै ने देखती।

बिनु ठेकानल रातिमे विचारनाथक नीन सेहो टुटल। नीन टुटिते मनमे उठलै जे जइ भैयाक संग चंदेसर, विदेसर, जागेसर महादेव स्थान संगे जाइ छेलौं। की बेटो-भातिज संगे जाएत? एहेन टूट परिवारमे केना। भेल? जहियासँ ज्ञान-पराण भेल तहियासँ जहिना भैयाक संग रहैत एलौं, भीन होइसँ पहिनो धरि तँ ओहिना रहलौं। मुदा कोन रोग परिवारमे केम्हरसँ घुसि आएल

जे दुनू भाँइ महिंसक सींग जकाँ भऽ गेल छी। मुदा भैयाक दोख कहाँ केतौ छन्हि। दू परिवारसँ दुनू दियादिनी आबि दुनू भाँइकेँ दू दियाद बना देलक। दुनू भाँइमे जेठ-छोटक बेवहार कहाँ अछि। दुनू भाँइ तँ भैये-बच्चा छी मुदा दियादिनीमे से कहाँ छै? माएतुल्य भौजीक दोख केना लगेबनि मुदा की ओ छोट दियादिनीकेँ छोट बहिन बुझै छथिन...?

मनुक्खोक अजीब गति अछि। जाधरि सम्मिलित परिवार रहैए ताधरि दुनियाँक सभ रोग परिवारकेँ पकड़ने रहै छै मुदा परिवार टुटिते रोग पड़ा जाइ छै। खैर जे होउ, जाधरि जीबै छी ताधरि भैयाकेँ भैये बुझबनि भलहिं ओ जे बुझथि। जहिना आमक वंश बढ़ैक दू रस्ता अछि। डारिसँ गाछ जोड़ि जे कलम बनैए से पुन: वएह आम रहैए मुदा आँठीक जनमल गाछ दिनानुदिन रूप बदलैत, सभ किछु बदलि लैत अछि। एक हिस्सा रहितो भैयाकेँ पाँच गोटे खेनिहारो छन्हि आ तीनू भाए-बहिनकेँ पढ़बैओमे खर्च होइ छन्हि। हमर तँ नापल-जोखल अढ़ाइ गोटेक परिवार अछि। एक सम्पतिमे भैयाक दोबर खर्च छन्हि। सहोदर रहैत जौं भैयाक दुख हम नै बुझबनि तँ आन थोड़े बुझतनि? जइ धरतीपर राम-लक्ष्मण सन भैयारी भऽ चुकल अछि, की हम ओइ धरतीपर जनम नै लेने छी।

चुपचाप ओछाइनपरसँ उठि खड़िहाँन जा धानक जाकमे सँ एक बोझ उठा भाइक खड़िहाँन दिस विदा भेल। तैकाल शिष्टदेवो अपना खड़िहाँनसँ धानक बोझ उठा विचारनाथक खड़िहाँन दिस चलल। दुनू भाँइक खड़िहाँनक मुँह दू दिस रहने किछु क्षणक रस्ताक दूरी बनि गेल। बीच बाटपर दुनू दिससँ दुनू भाँइ बोझ उठौने एक दोसराक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मुदा अन्हार रातिक दुआरे कियो केकरो चिन्हलक नै। दुनूक मनमे चोरक शंका भेल। मुदा हल्लो केना करत? अखनि तँ दुनू चोरे छल। भलहिं अपने धान किए ने छेलै। मक्खन चोर कृष्ण तँ नै छल जे चोरा कऽ खाइयौ लैत आ झूठ बाजि छिपाइओ लितए। खरहोरिक कड़ची जकाँ दुनू भाँइ सजीव रहितो निर्जीव आ निर्जीव रहितो सजीव ठाढ़ रहल। मुँहमे बोल नै, आँखिमे नोर नै। अमरलत्ती जकाँ दुनूक हृदए ओझरा कऽ लटपटा गेल। एक क्षण लेल जेना सरस्वती नदीक धार बहब छोड़ि असथिर भऽ मोटाए लगल।

मुड़ी उठा शिष्टदेव अकास दिस तकलक। उतरे-दछिने डगहर आ

माथसँ कनेक निच्चाँ सतभैंयाकेँ पच्छिम दिस हिया-हिया कऽ देखए लगल। सतभैंयापर सँ नजरि निच्चे ने उतरैत। तैकाल उतरबरिया गाछपर चकबी-चकेबाक झुण्ड देह डोलबैत भोरक इशारा करैत बोली देलक। चकवीक अवाज सुनिते शिष्टदेवक मनमे आएल, हो-ने-हो, कहीं पत्नी जागि नै गेल होथि। मुड़ी निच्चाँ करिते मुहसँ फूटलै-

''के?''

बोलीक अवाज अकानि विचारनाथ उत्तर देलक-

''हम।''

''हम'' सुनि शिष्टदेवक मन कहलकै भाय विचारनाथ छी मुदा- तर्क कहलकै एत्ती राति कऽ बोझ उठौने केतए जाइए? ताड़ीओ-दारू तँ नहियेँ पीबैए जे पसिखाना जाइत होएत आकि भट्ठीखाना। सामंजस्य करैत मुहसँ बाजल-

''बौआ।''

''भैया।''

दुनूक मुँह एक्केबेर बाजल-

''हँ।''

शिष्टदेव दोहरौलक-

''एहेन काजर सन कारी रातिमे बोझ केतए नेने जाइ छहक?''

जहिना कारिखकेँ सिनेह हृदए लगा चमक आनि दैत आ आँखिक गुण बढ़बैत तहिना विचारनाथक हृदए चमकल-

''भैया, अहाँक खर्च देखि मन कहलक जे पाँच बोझ धान दए अबहुन।''

दुनू भाँइक मनमे उठल-

''भीन किए...?''

जाधरि सदनदेव आ श्रद्धावती जीबैत रहथि ताधरि स्वर्गक परिवार छेलनि। अपन अमलदारीएमे सदनदेव दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा बिआह-दुरागमन करा जिनगीक लीलासँ निचेन भऽ गेल छला। सोलह बीघा जमीनक किसान परिवार, बाढ़ि-रौदीक बीच रहितो दोसराक सेवाकेँ कर्ज बूझि अपन परिवारकेँ सालक आमदनीक भीतरे खर्च कऽ रखि उगरल आमदनीसँ कातिक मास भागवत आ भोज कऽ अगहनसँ नव जिनगीमे पएर रखै छला। ने बेटाकेँ किछु अढ़बै छला आ ने पत्नीकेँ। अढ़बैक प्रयोजने नै रहनि। परिवारकेँ संस्था बूझि अपन-अपन समैक उपयोग शक्तिक अनुकूल सभ कियो काजमे लगबैत रहै छला। अपने अनुकूल परिवार देखि सदनदेव दुनू भाँइक बिआह केने छला। शिष्टदेवक बिआह बीस बीघाबला लालबाबूक परिवारमे आ विचारनाथक बारह बीघाबला श्रमदेवक परिवारमे भेलै।

तैसमए महिला शिक्षा अबैध रहने कैकेयी सेहो निअमक पालन करैत रहली। जइसँ पितो -लालबाबू- खुश भेला। माल-जाल पोसैले एकटा नोकर छेलै आ खेती जने-हरबाह हाथे होइ। अँगनाक मालिक पत्नीए रहनि। खाइ-पीऐक चहटि पत्नीकेँ नैहरेसँ लगल रहनि जइ दुआरे बेटी-पुतोहुकेँ रहितो भानस अपने करै छेली। गठुलासँ बेटी जारनि आनि दइ छेलनि आ घरसँ वर्तन-बासन आनि पुतोहु चूल्हि लग दऽ दन्हि। अपने तँ तरकारीए बनबए, चाउरे फटकए आ दालिएक खोंइचा बीछैमे पसेना पोछैत रहै छेली। चूल्हिक एक भाग पुतोहुकेँ आ दोसर भाग बेटीकेँ बैसा बीचमे अपने बैस सभ दिन नैहरक खिस्सा सुनबै छेली जेकरे चलैत, ने बेटी परबाबाक नाओं आ ने ददिया ससुरक नाओं पुतोहु बुझै छेलनि।

बाढ़िक उपद्रवसँ परिवार चलब कठिन बूझि श्रमदेव पितियौत भायकेँ सातो बीघा खेत सुमझा परिवारक संग कलकत्ता चलि गेल। माए-बापक संग साते बर्खक दमयन्ती सेहो चलि गेली। रिसरा जूट मिलमे श्रमदेव नोकरी ज्वाइन केलक। पक्का आठ घंटाक ड्यूटी। रस्ताक समए श्रमिकक। डेराक बगलेक स्कूलमे दमयन्तीक नाओं लिखा देलक। संगी-साथी सभसँ पँइच रूपैआ लऽ कऽ दस किलो दूधवाली गाए कीनि पत्नी लेल सेहो काज ठाढ़ कऽ लेलक। बच्चेसँ माने साते बर्खसँ दमयन्ती थैर-गोबर करैत-करैत गाए पोसनिहारि भऽ गेली। आठ बरख नोकरीक उत्तर मिलमे वेतन लेल श्रमिक

सभ हड़ताल केलनि। मिलमे ताला लटकि गेल। नोकरीक डगमगाइत स्थिति देखि श्रमदेव अपन अर्जल सभ किछु बेचि पुन: घर घूमि गेल। सस्त जमीन रहने पाँच बीघा जमीनो आ तीनटा गाएओ कीनि दोहरी काज ठाढ़ केलक।

समैक संग चलि दुनू भाँइ शिष्टदेव सेहो परिवारक गाड़ीकेँ पटरीपर चढ़ा अपन गतिए चलबैत रहल।

अँगनाक मालिक कैकेयी आ सहयोगीक रूपमे दमयन्ती रहए लगली। जेठ होइक नाते कैकेयी मुँहक बले जुइतो चलबए लगली आ हाथ-पएरकेँ आरामो दिअ लगली। यएह आराम काल भऽ भीन करौलकनि। से केतेक उचित? मुदा दुनू भाँइक बीचक सिनेह पुन: एकाकार कऽ देने छल।

❍❍

६. प्रेमी

फगुआक दिन। मुर्गाक बाङ सुनिते ओछाइन छोड़ि पक्षधर बाबा परिवारक सभकेँ उठबैत टोलक रस्ता धेने गौआँकेँ हकार दिअ विदा भेला। मनो गद्‌गद्। खुशी भीतरसँ समुद्रक लहरि जकाँ उफनैत रहनि। गौआँकेँ फगुआक भाँग पीबाक हकार दए दरबज्जाक ओसारपर बैस गर अँटबए लगला जे दस किलो चीनी, मसल्ला आ भाँगक पत्तीक ओरियान तँ कइए नेने छी। आब खाली बाजा-गाजा संग लोककेँ एबाक छन्हि। एते बात मनमे अबिते उठि कऽ भाँगक पत्ती आ मसल्ला -मरीच, सौंफ, समतोलाक खोंइचा, गुलाब फूलक पत्ती, काबुली बदाम- लऽ आँगन जाए पुतोहुकेँ कहलखिन-

''कनियाँ, बुरहीकेँ पुआ-मलपुआक ओरियान करए दियनु आ अहाँ भाँग पीसू। खूब अमैनियासँ पत्ती धुअब। तिनसलिया पत्ती छी, जल्ला-तल्ला लगल अछि।'' कहि ओसारपर सभ सामान सूपमे रखि दरबज्जा दिस घूमि गेला। हँ-हूँ केने बिना गांधारी मसल्लाक पुड़िया निच्चाँमे रखि पत्तीकेँ सूपमे पसारि आँखि गड़ा-गड़ा जल्ला ताकए लगली। मनमे उठलनि जे आइ बूढ़ा सनकि-तनकि तँ ने गेला हेन। एते भाँग लऽ कऽ की करता। मुदा किछु बजली नै। आँखि उठा कऽ देखि बिहुँसि कऽ नजरि निच्चाँ कऽ लेलनि। ओना मिथिलाक नारी आँखिमे गांधारी जकाँ पट्टी बान्हि घरती सदृश सभ किछु सहैत एली। दरबज्जापर बैस पक्षधर सोचए लगला, जिनगीक एकटा दुर्गम स्थान दुर्गा टपा देलनि। मने-मन दुनू हाथ जोड़ि हृदैसँ सटा हुनका गोड़ लगलनि। सुकन्या अपना विचारसँ जिनगीक प्रेमी चुनलक। केना नै आनन्दसँ जीबैक असिरवाद दैतिऐ। जइ फुलवाड़ीकेँ लगबैमे साठि सालक श्रम लगल अछि ओइ श्रमकेँ, जहिना छोट-छोट बेदरा-बुदरी टिकुली पकड़ि पुनः उड़ा दइए तहिना हमहूँ उड़ा देब? कथमपि नै।

रूपनगर हाइस्कूलक बोर्ड परीक्षाक सेन्टर प्रेमनगरक हाइस्कूल भेल। देहाती स्कूल रहितो परीक्षार्थीकेँ डेरा लेल मनमे कोनो चिन्ता नै। सबहक मनमे एते खुशी जे डेरापर धियाने ने जाइत। सभ निश्चिन्त जे गाम-घरमे अखनो विद्याकेँ देवी स्वरूप बूझि सभ मदति करए चाहै छथि। जौं मधुबनी

सेन्टर होइतए तहन ने डर होइतए जे मेहता लौजमे सभ सामान चोरीए भऽ जाएत तँए असुरक्षित अछि आ प्रोफेसर कौलनीक भाड़े तेते अछि जे ओतेमे तँ विद्यार्थी परीक्षाक सभ खर्च पूरा लेत। ओना प्रेमनगरक सएओसँ ऊपरे कुटुमैती रूपनगरमे अछि, तँए किएक केकरो मनमे रहैक चिन्ता होइतै। तहूमे प्रेमनगर हाइस्कूलक हेडमास्टर तेहेन छथि जे स्कूलक समैमे स्कूलक काज करै छथि बाँकी बारह बजे राति धरि विद्यार्थीक खोज-पुछाड़िमे लगल रहै छथि जे केकरो कोनो तरहक असुविधा तँ ने भऽ रहल छै। तहूमे आनन्दी बाबाक दरबज्जा तेहेन छन्हि जे इलाकाक लोक अपन रहैक ठरे बुझैए। घर्मशल्ले जकाँ। धैनवाद यशोदियादादीकेँ दियनि जे बुढ़ाड़ीओमे अभ्यागत सबहक अँइठ-काँठ बारह बजे राति धरि उठबिते रहै छथि।

परीक्षासँ एकदिन पहिने लोचन सभ समान शूटकेशमे लऽ साइकिलसँ प्रेमनगर पहुँचल। लोचनक परिवारकेँ पक्षधरक परिवारसँ साठिओ बरख ऊपरसँ दोस्ती अबैत रहनि। आजादीक हूर-बरेड़ाक समए रहए। जहिना गामक धिया-पुता गुल्ली-डंटासँ क्रिकेटक मनोरंजन करैए तँ शहरक धिया-पुता जगहक अभावमे खेलक स्कूलमे नाओं लिखा मनोरंजन करैए, तहिना पक्षधरो आ ज्ञानचन्दो आजादीक लड़ाइमे पढ़ाइ छोड़ि समाजक बीच आबि हूर-बरेड़ामे शामिल भऽ गेला। समाजक काजमे हाथ बँटबए लगला। समाजमे केकरो ऐठाम बेटीक बिआह होइ आकि बरियाती अबैत तँ अपन बहिन बूझि, बिनु कहनौं पाँच दिन निश्चित समए दिअ लगल। तहिना आरो-आरो काज सभमे हाथ बँटबए लगला। मुदा अस्सी बर्खक उपरान्तो पक्षधर पक्षधरे आ ज्ञानचन्द ज्ञानचन्दे रहि गेला। कहियो कियो नेता नै कहलकनि। हँ एते जरूर भेलनि जे भाए-भैयारी भेने गाममे तेते भौजाइ भऽ गेलनि जे वसन्त छोड़ि ग्रीष्मक रस्ते घेरि देलकनि। आब तँ सहजे बुढ़ाड़ीमे धिया-पुताक संग रंगो-रंग खेलै छथि आ जोगीरो गबै छथि। गाम स्वर्ग जकाँ लगि रहलनि अछि।

किएक नै मन लगितनि जइ गाममे कालिदास सन विद्वान भेला जे जही डारिपर बैसब ओही डारिकेँ काटब मुदा ने तँ कुड़हरिक धमक लगत, ने डारिए डोलत, ने दुनू हाथे कुड़हड़ि भाँजब तँ देह डोलत आ ने दुनू पएरक बाइलेंस गड़बड़ाएत। निश्चिन्तिसँ जखनि डारि खसए लगतै तखनि ओइपर बैसले-बैसल धरतीपर चलि आएब, एहेन विद्वान् सभसँ तँ गामे भरल

अछि। एते दिन, अपराधीक संख्या कम रहने ओकरा सबहक नजरि निच्चाँ रहै छेलै मुदा आब केकरा कहबै अपनो घरवाली धमकी देती जे माए-बाप आ भाय-भौजाइक पाछू लगल रहै छी आ अपना धिया-पुताले किछु करबे ने करै छी। ऐ जिनगीसँ जहर-माहुर खाए कऽ मरब नीक। हौ बाबू, हमरा एहेन भ्रममे नै दएह। ऐ दुनियाँमे ने कियो अप्पन छी आ ने बिरान। सीता जकाँ लक्ष्मणक रेखाक भीतर रहअ। नै तँ रावण औतह आ लऽ कऽ चलि जैतह। अपन-अपन पएरपर ठाढ़ भऽ गंगोत्रीसँ निकलैत गंगाक पानि जकाँ, जे साथीक संग ऊपर-निच्चाँ होइत प्रशान्त महासागरमे मिलैए तहिना समैक संग चलैत रहअ।

पक्षधर बाबाक घर-दुआर लोचनकेँ देखले। केकरो पुछैक जरूरते किएक होइतै। साइकिल हड़हड़ौने दरबज्जापर पहुँच साइकिलसँ उतरि घरक देबालक पजरामे साइकिल ठाढ़ कऽ दुनू हाथे बाबाक पएर छूबि गोड़ लगलकनि। बाबाकेँ बुझले रहनि, कहलखिन-

> ''भने अखने चलि एलह। सभ सामान सेरिया सेन्टरपर जा कऽ देखि-सुनि अबिहऽ।''

कहि पोती सुकन्याकेँ सोर पाड़लखिन। मुदा लोचनो तँ आँगन-घर जाइते-अबैत रहए। सुकन्याकेँ लोचन आँगनसँ बजा अनलक। भाए-बहिन जकाँ दुनूकेँ देखि पक्षधर सुकन्याक कहबाक बात बिसरि दुनू गोटेकेँ कहलखिन-

> ''बाउ, आब तँ हम चलचलाउ भेलिअ। तोरे सबहक पार ऐ दुनियाँमे एलह हेन। दुनियाँमे जेते मनुख अछि ओ अपना समैक जिम्मा लऽ जीबैए। अखनि तूँ सभ सुकुमार कोमल किसलय सदृश छह। मनुख बनि जिनगी जीविहऽ। हम दुनू संगी -पक्षधर आ ज्ञानचन्द- दू जातिक रहितो संगे-संग जिनगी बितेलौं, जे समाजोक लोक बुझै छथि। मुदा हुनको धैनवाद दइ छियनि जे संगीक महत अदौसँ बुझैत आएल छथि। एकरे फल छी जे जाति-कुटुमसँ कनीओ कम दोस्तीकेँ नै बूझल जाइ छै। संगे-संग जहलो कटलौं आ एक्के ओछाइनपर सुतबो करै छी। मिथिलांचलक कोनो

> राजनीतिक आकि सामाजिक संगठनक बात होइ मुदा की ऐ संस्कृतिकेँ आँखिक सोझहामे नष्ट होइत देखि सकै छी।''

मन पड़लनि गाड़ीक ओ दिन जइ दिन जहल जाइत काल दुनू गोटेकेँ पैखाना लगि गेल आ हाथमे हथकड़ी छल। ट्रेनक पैखाना-कोठरीमे पानि नै। की कएल जाए? जेबीसँ रुमाल निकालि दू टुकड़ीमे फाड़ि दुनू गोटे शुद्ध भेलौं। आँखि ढबढबाए गेलनि। भरल आँखिसँ पोतीकेँ कहलखिन-

> ''बुच्ची, दरबज्जापर रहने बौआकेँ पढ़ि नै हेतै। एक तँ पढ़बह कि खाक। बहुत लिलसा छल जे परिवारमे इंजीनियर-डाक्टर देखिऐ मुदा से हमरा सन-सन परिवारबला लेल सपना नै तँ आरो की अछि। एक दिस पनरह-बीस लाखक पढ़ाइ आ दोसर दिस दुइओ हजार मासक आमदनीक परिवार नै। मुदा अखनि बच्चा छह, आशासँ जीबैक उत्साह मनमे जगबैक छह।''

जहिना जनकजीक फुलवाड़ीमे राम आ सीताक प्रथम मिलन भेलनि तहिना सुकन्या आ लोचनक बदलल रूपक बीच भेल। अखनि धरि जे बच्चा सदृश परिवारमे खेलौना छल ओकरा कानमे एकाएक जिनगीक बात पड़लै। जिनगी लेल प्रेम भरल संगीक जरूरति होइत अछि। जिनगीक बात सुनि दुनूक देह सिहरि गेलै। सिहरैत देह देखि पक्षधर कहलखिन-

> ''बुच्ची, लोचन तोहर पाहुन भेलखुन। अँगनेक ओसारक कोठरी दऽ दहुन। सभ देखभाल तोरे ऊपर। कोनो तरहक असुविधा पढ़ैमे नै होइन।''

पक्षधरक बात सुनि सुकन्या शूटकेस माथपर उठा लोचनक पाछू-पाछू विदा भेल। कोठरी खुजले रहै, अँटकैक केतौ जरूरते नै पड़लै। एकजनियाँ चौकी, कपड़ा लेल अलगनी, एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी। कुरसीपर शूटकेश खोलि लोचन कपड़ा निकालि चौकीपर रखलक। चौकीपर रखिते सुकन्या ओही अलगनीपर लोचनक कपड़ा रखलक जैपर पहिनेसँ ओकर अपनो रखल कपड़ा छेलै। सौनक झूला जकाँ दुनूक कपड़ा झूलए लगल। किताब, कॉपी, कलम निकालि टेबुलपर रखलक। एक्के कोर्सक पोथी दुनूक।

लोचन मैट्रिकक सेनटप केंडीडेट आ सुकन्या मैट्रिकक विद्यार्थी। टेबुलक बगलमे लोचन लग ठाढ़ भऽ सुकन्या पोथी फुटा कऽ नै रखि, सभकेँ जोड़ा लगा-लगा रखलक। दुनूक नजरि दुनूक किताब-कॉपी-पेनक जोड़ापर अँटकि गेल। पहिनेसँ दोबर पोथीक थाक भऽ गेल। ऐना जकाँ एक-दोसराक हृदैमे अपन-अपन रूप देखए लगल। पोथीक लिखाबटि प्रेसक होइ छै। तहूमे एक्के प्रेसक पोथी छेलै। मुदा कॉपी तँ अपन-अपन हाथक लिखल होइ छै। एक दोसराक कॉपी उलटा-उलटा देखए लगल। देवनागरी लिखाबटि लोचनक सुन्दर मुदा रोमन लिखाबटि सुकन्याक सुन्दर। एना किए भेल? एक्के हाथक लिखाबटि दब-तेज केना भऽ गेल। मुदा उत्तर केकरो मनमे नै अबै छेलै। अनासुरती सुकन्याक मन नाँचल। एते काल भऽ गेल, अखनि धरि पानिओ नै अनलौं। औगता कऽ कोठरीसँ निकलि छिपलीमे जलखै आ लोटामे पानि नेने आबि चौकीपर छिपली रखि हाथ शुद्ध करैले लोटा बढ़ा, चौकीक गोड़थारी दिस पलथा मारि बाबाक पाहुनकेँ खुआबए बैस गेली। खाइकाल पुरुख चुप रहैत अछि, नोन-अनोनक प्रश्न किए उठितै। समदर्शी मिथिला छिऐ किने?

एक बजेसँ लऽ कऽ चारि बजे धरि परीक्षाक कार्यक्रम रहए। पहिल दिन लोचन दुर्ग टपैले जाएत तँए सुकन्याक मन मृगा जकाँ नचैत। भिनसरेसँ सुकन्या लोचनपर नजरि अँटकौने...। समैपर अपन काज पुरबैक अछि। हमरा चलते जौं शुभ काजमे बाधा होएत तँ भगवानक ऐठाम दोखी हएब। मास्टर साहैबक सिखौल बात सुकन्याकेँ मन पड़ल। काजक भार तँ लोचनक ऊपरमे छन्हि। हम तँ हुनकर मदतिगार मात्र छियनि। तँए नीक हएत जे हुनकेसँ पूछि लियनि। चंचल मनमे उठलै, पूजाक तैयारीमे सभ किछु फुलडालीमे सजबैत होएत। बीचमे बाधा देब उचित नै। हो-ने-हो फूल-पत्तीक जगहे बदलि जाइन। अनासुरती पुन: मनमे उठलै- हाय रे बा, घड़ी तँ देखबे ने केलौं। अगर बारह बजि गेल हेतै तँ खुएबाक दोखी के हएत? मन व्याकुल, अव्यवस्थित वस्त्र, केश छिड़ियाएल, कर्मक भारसँ भादबक अन्हरिया जकाँ सुकन्याक आँखिक आगू अन्हार पसरि गेलै। केतए जाउ, केकरा पुछिऐ? गाछो-बिरिछ नै अछि जे पूछि लितिऐ। अस्त-व्यस्त अवस्थामे सुकन्या माए लग पहुँच पुछलकनि-

“भानस भेलौ?”

“अखने। अखनि तँ आठो नै बाजल हएत।”

“जलखै भेलौ?”

“बच्चा कहलक एक्केबेर खा कऽ सबेरे जाएब।”

जहिना केचुआ छोड़ैत समए साँपकेँ कष्ट होइ छै, भले ही नव जीवन किएक ने प्राप्त करत, मुदा दर्द तँ हेबे करै छै। मीरा जकाँ सुकन्या राजस्थानक तँ नै। मिथिलाक बाला। परिवार आ समाज लेल अदौसँ समरपित। बम्बइक गीतक धून बहुत मधुर होइए तहिना तँ समबेत स्वरमे माए-बहिनक चैताबर, बारहमासा आ समदाउनो तँ मधु सदृश अछि। जहिना मधुमाछी उड़ि-उड़ि कखनो आमक गाछपर चढ़ि सोझहे अपन प्रेमी मंजर लग पहुँच जाइत अछि, तँ लगले माटिपर ओँघराएल चमेलीक रसकेँ आमक रसमे महामिश्रण कऽ घोल बनबैए, तहिना ने हम आ लोचनो छी।

कोठरीसँ निकलिते लोचनक आँखि सुकन्यापर पड़ल। हजारो रश्मि रूपी तीर दुनूक बीच टकराए लगल। मुदा दू रंग। जहिना लड़ाइक मैदानमे वीर असीम बिसवासक संग मरैले नै बलिदान लेल बढ़ैए, तहिना लोचनोक हृदैमे होइत। कलीक खिलैत फूल जकाँ मुँह। मुदा सुकन्या मने-मन भगवानसँ आराधना करै छलि जे-

“कुरुक्षेत्रसँ लोचन हँसैत आबए।”

उचंगल मन फेर उचंगि गेल। ओसारसँ निच्चाँ उतरिते सुकन्याक हृदए लोचनकेँ पाछूसँ ठेलए लगल। जहिना बच्चा सभ माटिक पहिया, कड़चीक गाड़ी बना धनखेतीक माटि उघि-उघि अँगनाक ओलतीमे दऽ खुशी होइत जे आँगन चिक्कन बनत, तहिना आगू-बढ़ैत लोचनकेँ देखि सुकन्याकेँ खुशी भेलै। मुदा खुशी अँटकलै नै। लगले चारि बाजि गेलै। मनमे उठलै-भूखल भायकेँ जलखै कहाँ खुएलौं। जहिना किसानक खेत दहा गेलासँ, व्यापारमे मंदी आबि गेलासँ, बेरोजगारी बढ़लासँ भीखमंगोकेँ कियो भीख देनिहार नै रहैत तहिना जे धरती करोड़ो पतिव्रता नारी पैदा केलक वहए धरती पतिहत्यारिनकेँ जनम दऽ ओकरा जहल कटबै छै।

साढ़े चारि बजे बेर-बेर देखला पछाति सुकन्याक नजरि मौकनी

हाथीपर चढ़ल गणेशजी जकाँ लोचनकेँ अबैत देखि लोटामे पानि, थारीमे जलखै परसि अँगनाक ओलतीमे ठाढ़ भऽ देखए लगल। अखनि धरिक लोचनक सएओ मनोहर रूप मनमे नाचए लगलै। कोठरी आबि लोचन गरमाएल देहक कपड़ा बदलि जलखै करए लगल। विस्मित भेल सुकन्याक मुँह बाजि उठल-

"केहेन परीक्षा भेल भाय?"

"बहुत बढ़ियाँ। जरूर पास करब।"

'जरूर पास' सुनि सुकन्याक हृदए लोचनकेँ सीताक राम जकाँ गुण देखलक। मनमे आशाक सिहकी उठलै। संगीए तँ जिनगीक जीत दियबैए। अपन सुखद जिनगीक मनोहर रूप लोचनमे देखि सुकन्या मोहित होइत बाजलि-

"औझुका पेपर तँ नीक भेल मुदा आन दिनक जौं अधला हुअए, तहन?"

"ओ ओइ दिनक मेहनतिपर निर्भर अछि। एकर जवाब हँ-नइमे नै देल जा सकैए।"

आइ सातम दिन परीक्षाक अंत भेल। स्कूलसँ आबि पक्षधरकेँ गोड़ लगि लोचन बाजल-

"बाबा! परीक्षा समाप्त भऽ गेल। गाम जाइ छी।"

असिरवाद दइसँ पहिनहि बाबाक मनमे उठलनि, जहन ऐठाम काज सम्पन्न भऽ गेलै तहन रोकब उचित नै। सबेर-अबेर भेनौं अपन घर तँ पहुँच जाएत। बात बदलैत बाबा पुछलखिन-

"केहेन परीक्षा भेलह?"

मुस्की दैत लोचन बाजल-

"पास करब, बाबा।"

लोचनक मुस्की पक्षधरक हृदैकेँ, सलाइक काठी जकाँ, आनन्दक कोठरीकेँ रगड़ि देलकनि। मन पड़लनि जनकपुरक धनुष यज्ञ। ठहाका मारि

कहलखिन-

"भाग्य केकरो लिखल नै होइ छै, बनौल जाइ छै बौआ।"

अँगनाक ओलती लग ठाढ़ सुकन्याक मन मृगा जकाँ व्याकुल भऽ नचै छेलै। जहिना अपने नाभिक सुगंधसँ मृगा नचैए तहिना सुकन्याक मन परीक्षाक समाचार सुनैले नचैत। मुदा दरबज्जो तँ दोसराक नहियेँ छी, सोचि आगू बढ़ल।

दुनू गोटे माने सुकन्या आ लोचनकेँ देखि पक्षधर बाबा कहलखिन-

> "आइ तोँ विद्याध्ययनसँ गृहस्ताश्रममे प्रवेश कऽ रहल छह। तँए बाबाक लगौल फुलवाड़ीक सूखल-मौलाएल डारिकेँ कमठौन कऽ खाद-पानिसँ सेवा करिहऽ। ओइमे नव-नव कलश चलतै, जइसँ हँसैत-खेलाइत जिनगी चलतह।"

मुड़ी गोंतने लोचन आँगन आबि पानि पीब पोथी सेरियबैक विचार केलक। पोथीपर पोथी गेंटल देखि हाथ काँपए लगलै। सुकन्याक मन कानि उठलै। जहिना कोनो धारक दुनू महारपर बैसल यात्रीकेँ होइए तहिना सुकन्याक मनमे दुरीक भाव उठए लगल। लोचन सफलताक जिनगीमे पहुँच गेल आ हम? आशा-निराशाक क्षितिजपर लसकि गेल सुकन्या।

सुकन्या लोचनकेँ सीमा धरि अरियातए विदा भेल। गामक सीमा बिला गेलै। ने लोचन सीमा ठेकानि सकल जे घुमबाक आग्रह करितै आ ने सुकन्या बूझि सकल जे अंतिम विदाइ दैतै। अजीब गामोक सीमा अछि। एक्को परिवारकेँ गाम मानल जाइए -जेना भोजमे- तहिना दसोगाम माला बनि गाम बनि जाइत (दस गम्मा जाति) अछि। अरियातने-अरियातने सुकन्या लोचनक घर धरि पहुँच गेल।

पनरह दिन बीतैत-बीतैत अनेको मौगियाही कचहरीमे फैसला लिखा गेल जे 'सुकन्या पक्षधरक घरसँ निकलि अजाति भऽ गेली।' कचहरीक फैसला सुनि सुकन्याक माए-बाप दुनू गोटेक करेज दड़कए लगलै। कनैत मन बाजए लगलै, मनो ने अछि जे कहियासँ दुनू परिवारमे दोस्ती अछि। सभ तुर हमहूँ जाइ छी आ ओहो सभ आबि जाइ छथि। मुदा आइ की देखि

रहल छी। जाधरि पिता जीबै छथि ताधरि ऐ परिवारक हमसभ के? समाजक लोकक जवाब ओ देथिन। पिताकेँ गामक लोकक बात कहलखिन। बेटा-पुतोहुक बात सुनि गरजि कऽ पक्षधर कहलखिन-

> “जइ समाजमे मनुखक खरीद-बिक्री गाए-महिंस, खेत-पथार जकाँ होइए की ओइ समाजकेँ पंच तत्वक बनल मनुख कहल जा सकैए? जौं से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो आँगरी देखौत तँ ओकर आँगरी काटि लेबै। आइए दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देखि-सुनि अबै छी।

जखनि भाँग पानिमे अलगि गेल तखनि पुतोहु बुझलनि जे भाँग पिसा गेल। पोछि-पाछि सिलौटकेँ धोइ बाटीमे रखलनि। दरबज्जापर बैसल पक्षधरक मनमे उठलनि जे नअ बाजि गेल, अखनि धरि किए ने कियो आएल। फेर मन उनटि कऽ भाँगपर गेलनि। भाँगपर नजरि पहुँचिते मनमे उठलनि जे बिनु भाँग पीनहि तँ ने सभ निशाँए गेल अछि। तहन भाँगक जरूरते की? किछु दिन पहिने धरि सभ गाममे एकदिना फगुआ होइ छेलै मुदा आब तीन दिना भऽ गेल। ओना तीन रंगक पतरो आबि गेल अछि। मुदा अपना गाममे तँ एकदिने अखनो धरि होइत आएल अछि आ जाधरि जीब ताधरि होइत रहत।

कीर्तन मंडलीक संग-संग आनो-आन पक्षधर ऐठाम पहुँचला। अनगिनित थोपरी बजौनिहार आ अनगिनत गबैयाक समारोह। चीनीमे घोड़ल भाँग। सभसँ उमेरदार रहितो पक्षधर भाँग परसिनिहारकेँ कहलखिन-

> “पहिने नवतुरिया सभकेँ पिआबह। वएह सभ ने बेसी काल गेबो करतह आ नचबो करतह।”
>
> मुदा एक्कोटा नवतुरिया बाबाक बात नै सुनलक। सबहक यएह कहब रहै जे बाबा गाममे सभसँ श्रेष्ठ छथि, अनुभवी सेहो छथि। तँए जौं ओ गोबरखत्तोमे खसता तैयो हम सभ नै छोड़बनि। नवतुरियाक बात सुनि पक्षधरक मनमे उठलनि अखनि आँगनमे कहाँ छी दरबज्जापर छी। दस गोटेक बीच छी। तहन के छोट के पैघ?

सभ तँ ब्रह्मेक अंश छी। तहूमे एते टुकड़ी एकठीम एकत्रित छी। दू गिलास भाँग पीब पक्षधर उठि कऽ ठाढ़ होइत फगुआ शुरू केलनि-

"सदा आनन्द रहे ऐ दुआरे मोहन खेले होरी हो।"

ढोलक, झालि, कठझालि, हरिमुनियाँ, मजीरा, खजुरी, डम्फा, गुमगुमाक संग सएओ जोड़ थोपड़ीक महामिश्रणक धूनक संग कोइली सन मधुर अवाजसँ लऽ कऽ टिटहीक टाँहि धरिक बोल अकासमे पसरि गेल। ओना जमीनो खाली नै रहल। इंगलिश डान्ससँ लऽ कऽ जानी धरिक नाच आ मेल-फीमेलक जोगीरा जोर पकड़नहि रहए। बजनियाँ सभ अपन-अपन बजो बजबैत आ कुदि-कुदि नचबो करैत। गोसाँइ डुमैबेर फेर पक्षधर भाँग बनबौलनि। अपन शक्तिकेँ कमजोर होइत देखि दोबरा-दोबरा सभ पीलक। उत्साहो दोबरेलै। पुरनिमाक राति। हँसैत चान। फागुन मास रहने अकासमे केतौ बादल नै। मुदा तरेगन मलिन भऽ अपन जान लऽ झखैत। किएक ने तरेगन अपना जान लेल झखत? आखिर वसन्त-वसन्तीक समागमक दिन छेलै किने।

गामक दछिनबरिया सीमापर समन जरए लगल। समनक धधड़ाकेँ पक्षधर उत्तरसँ दछिन मुहेँ कुदला। बाबाकेँ देखिते सभ एका-एकी कूदए लगल।

धधड़ा मिझा गेल। मुदा जारनिक आगि चकचक करिते रहल। समदाउन गबैत सभ घरमुहाँ भेला।

❍❍

७. बपौती सम्पति

आसिन अन्हरिया चौठ। गोटि-पंगरा खाएन-पीन शुरू भऽ गेल। मातृनवमी-पितृपक्ष साझीए चलि रहल अछि। कियो-कियो बापो, दादा, परदादाक नाओंसँ तँ कियो-कियो माएओ, दादी, परदादी इत्यादिक निमित्ते नोति-नोति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीवे दिनसँ शुरू भऽ गेल। मुदा ईहो गोटि पंगरे। किछु गोटे ठेकियौने जे एकादशीकेँ जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्ष लेल नवमी आ पितृपक्ष लेल एकादशीकेँ नोतहारी नोति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होइए जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन खुअबैए। जेकरा ढढक कहैए किछु गोटे मातृपक्ष लेल महिलाकेँ आ पितृपक्ष लेल पुरुखकेँ नोत दऽ सेहो खुअबैए। पक्षक भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष मातृनवमी आ दोसर पितृपक्ष। नवमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल अछि। दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक आकि तमाकुल खाइक मन भेलै। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते रहै आकि पत्नी मुनिया आबि कहलकै-

> ''घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि, भनसा बेर भऽ गेल, कखनि आनब?''

''अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमनि बनाएब ताबे हम दौगले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबै।''

हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लइते, मरचूनक दुआरे, केनादन लगलै कि थुकड़ि कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौड़ि देलकै दोसर, काज (टेंगारी पिजेनाइ) पछुआइत देखि आरो मन घोर भऽ गेलै। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठीम फाटब सीने दोसरठाम मसकि जाइ छै तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुहेँ नै ससरि रुकि गेलै। चिन्ताकेँ अँटकिते मनमे खुशी एलै। अपनापर

ग्लानि भेलै जे जइ धरतीपर बसल परिवारमे जनम लेबाक सेहन्ता देवीओ-देवताकेँ होइ छन्हि ओकरा हम माया-जाल किए बुझै छी। ई दुनियाँ केकरा लेल छै? केकरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत। ई दुनियाँ उपयोग करैक वस्तु छी ने कि उपभोग करैक।

गुलटेनकेँ देखि आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना कहलक-

"तमाकुल खा लैह काका, तखनि जइहऽ।"

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक-

"बौआ, अगुताएल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी काल नै अँटकब।"

"एह काका, तोहूँ सदिखन अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नै रहै छह।" कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल दैते रसगर लगलै। सुआद पाबि गुलटेन बाजल-

"बड़ टिपगर खैनी खुऔलैँ भुखन। एहेन टिपगर माल कोन दोकानक छियौ?"

"काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक वेपारी साइकिलपर एक बोझ तमाकुल लऽ बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीम रहल। एह काका, भरि राति ओ वेपारी एक हिसाबे जगौनहि रहल। जेहने खिस्सक्कर तेहने महरैया रहए। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला पछाति एक्केटा तेहेन खिस्सा, रजनी-सजनीक, उठौलक जे ओरेबे ने करए। जखनि डंडी-तराजू पच्छिम चलि गेल तखनि हमहीं कहलिऐ जे आब छोड़ि दियौ। बड़ राति भऽ गेल। तखनि जा कऽ छोड़लक। भिनसर भेने पोखरि-झाँखरि दिससँ आएल तँ चाह पिआ देलिऐ। दलानपरसँ साइकिल निकालि तमाकुल सेरियाबए लगल। हमहूँ गिलास धोइ चक्कापर रखि एलौं आकि जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल, कहलिऐ-

"ई की दइ छी।" ओ कहलक हम वेपारी छी कोनो अभ्यागत नै। तँए खेनाइक पाइ दइ छी। आब तोंही कहऽ काका ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत। की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ

बपौती सम्पति छी किने? एकरा केना आँखिक सोझहामे मेटाइत देखब।''

थूक फेक गुलटेन कहलक-

''एहनो कियो बूड़िबक्की करए। पाभरि खेने हएत कि नै खेने हएत, तइले लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छूलह।''

अपन बड़प्पन देखि मुस्की दैत भुखना बाजल-

''ऐँह की कहिअ काका, ओहो बड़ रगड़ी रहए, कहए लगल जे से केना हएत। हम कि कोनो भूखल-दुखल छी, आकि वेपारी छी। मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐ। तखनि ओ दस-बारहटा पात निकालि कऽ दैत कहलक, जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइएले दइ छी। सएह छी।''

आगू बढ़ैत गुलटेन बाजल-

''बौआ, अखनि औगुताएल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोने रहि जाएत।''

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। गुलटेनकेँ देखिते झिंगुरकाका कहलखिन-

''अखनि धरि माथमे केश लगले देखै छिअ।''

माथ हसोथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल-

''अखनि कटबै जोकर कहाँ भेल हेन। जखनि कानपर केश लटकऽ लगत तखनि ने कटाएब।''

''बिसरि गेलह। काल्हिए ने बाबूक बरखी छिअ। हमरो चच्चा साहैबकेँ छियनि। दुनू गोटे एक्के दिन ने मरल रहथि।''

झिंगुरकक्काक बात सुनि गुलटेनकेँ धक् दऽ मन पड़ल। बाजल-

''हँ, ठीके कहलौं काका। आइ जौं अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छूटिए जाइत।''

“अखनो किछु नै भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहेन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोटे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लगल हेन।”

“अखनि तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर वेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैमे। अपने केश कटाएब ओरियान बात करब आकि ओकरा सभकेँ बजबैले जाएब।”

“असली कर्त्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरूरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बर्षी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैत अछि आ कम-सँ-कम एगारह गोटेकेँ खाइओले दैत अछि। तोरा सेहो एकटा आरो हेतह। खाएन-पीन माने मातृनवमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजीकेँ तीर्थेपर वर्षी पड़ि गेलनि, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझटे नै रहलनि। मुदा तूँ सभ तँ एकादशीकेँ खुअबै छहक तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलनिओ तँ अपन महत रखैए किने।

झिंगुरकक्काक बात सुनि दोकानदारकेँ गुलटेन कहलक-

“हेहौ घोघन साहु, झब दऽ एक टकाक नून दए।”

गमछामे नून बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस चलल। मनमे पिता नाचए लगलखिन। हृदए पसीझ गेलै। स्मरण भेलै, बाबू अनका जकाँ नै छला। आगू-पाछूक बात जनै छला। जौं से नै तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीनि देने रहितथि। कोनो कि कमाइ-खटाइ नै छला। जौं से नै छला तँ कातिक मासमे ओते खरचा करि कऽ भागवत केना करबै छला। तैपर सँ भोजो-भनडारा करिते छला। हमरे लेल की कम केलनि? घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलनि। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नै होइत अछि। कमाइ छी, खाइ छी, ठाठसँ जिनगी बितबै छी। जौं खेते रहैत आ खेती करैक लूरिए नै रहैत तँ छुच्छे खेते लऽ कऽ की होइत। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअए आकि दाही अछैते खेते हाट-बाजारसँ मोटा उघै छथि। हमरा तँ घराड़ी छोड़ि एक्को धूर नै अछि। तँए कि केकरोसँ अधला

जीबै छी। अपन खुशहाल जिनगीपर नजरि अबिते आनन्दसँ हृदए ओलड़ि गेलनि। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नै, अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। केना लोक बजैए जे जेकरा अ आ नै लिखए अबैए ओ मुरुख अछि। बाबू तँ औंठे-निशान दऽ कोटासँ मोटीओ तेल आ चिन्नीओ अनै छला। बड़का-बड़का सर्टिओफिकेटबला सभकेँ देखै छियनि जे दारू पीब लेता आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंग्रेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छथि। तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छला। खाइबेरमे आँगनमे नै रहै छेलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छला। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छला आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बूझि पड़ै छेलनि तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दइ छेलखिन नै तँ ओते छोड़ि कऽ उठै छला। आ हा-हा एहेन बाप होएब की अधला छी। जखनि काज करए जाइ छला तँ संगे नेने जाइ छला आ काजक लूरि सिखबै छला। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करए लगलौं। हुनकर सालो भरिक हिसाब केहेन छेलनि। आसिन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धनकटिया, नारबन्हिया, दाउन केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। किए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नै ने जे कहत काजे ने अछि। रस्तापर बालु उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलनि जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समए होइ छै। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदति कऽ सकैए। जेकरा लूरिए ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकतै तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत? अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकलै। मुहसँ हँसी निकललै। ओगरवाहिबला गाछीक मचकीपर नजरि गेलै। की हमरा सबहक दुनियाँ अछि? बड़क गाछपर सँ बर्डू काटि बरहा बनबै छी। मुठबाँसीक बल्ला, पिढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झूलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छहमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना होएत? असकरे कृष्ण राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करै छला, बौसरीओ बजबै छला आ आसो लगबै छला। मुदा अखनि तँ देखै छी जे बाजा कियो बजबैए, नाच कियो करैए आ गीत कियो गबैए।

तेहने ने देखिनिहारो छथि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैए तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैए तँ कियो ओकर कानक झूमकाकेँ। गौनिहारक अवाज सुनैए, ने कि ओकर मुँह देखैए।

नूनक मोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन कहलक-

> ''बाबूक बरखी काल्हिए छी। बिसरि गेल छेलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी लेल जे चाउर रखने छी ओकरा निकालि रौदमे पसारि दियौ। राहड़ि सेहो उलबए पड़त। बेरू पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइए पौरल जाएत। ओना अमहौरपर सँझुको दूध जनमि जाएत।''

पतिक बात सुनि मुनिया बजली-

> ''एहेन अहाँ बिसराह छी जे, सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत। ने कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाएकेँ खबरि देलियनि।''

''अच्छा सभ हेतै। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहथि जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छथि आ पारो लगौता।''

कहि गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना नोत दऽ चोट्टे घूमि गेल।

काजमे गुलटेन जेहने होशगर माने लूरिगर तेहने बिसराहो। सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महिंस दूहब, डरबुकसँ डरबुक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोड़ब, सुरुंगवा शीशो पांगब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांझिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डाक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटकि नाथब, हर लगाएब इत्यादि काज समाजमे केकरो कऽ दैत। केना ने करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पति बुझैए।

वर्षी भोजक चर्चा जनीजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसरि गेल। अपन दायित्व बूझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लगली। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइए तहिना समाजोक लोक आबए लगला। रवियापर नजरि पड़िते गुलटेन कहलक-

> “रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइए लेल छेलौं। भने आबिए गेलह। बहुत दिन जीबह।”

रविया पुछलकनि-

> “किए भैया? अखने फोकचाहावालीकाकी आँगनमे बजली; तब बुझलौं।”

“ठीके बुझलहक। बिसरि गेल छेलौं। दोकानपर झिंगुरकाका मन पाड़ि देलनि। मुदा काज तँ कल्हुका बदला परसू नै हएत।”

“हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।”

“चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइओ कौर दही नै खुऐबनि से नीक हएत?”

“सँझुका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। केते दूध पौरबहक?”

“दू मन चाउर रान्हब। आधोमन तँ दही चाही।”

“अदहा मन सँ हेतह?”

“अपना सभमे दहीए केते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आकि फल-फलहरी खाएओ चाहत से आनत केतएसँ।”

“हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारीओ किए हाटपर सँ अनबह। अखनि तँ सबहक चारपर सजमनि कदीमा आ बाड़ीमे भट्टा अछिए। तइले पाइ किए खर्च करबह। औगताइमे अदौरी बनौल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहेन हएत?”

“मन होइए जे बड़-बड़ीक ओरियान करी।”

“तों सनकि गेलह हेन। बड़-बड़ीक घाटि केते मेठनियाँ होइए से बुझै छहक।”

''हँ, से तँ ठीके कहलह।''

''अखनि जाइ छिअ। दहीसँ निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह। आकि पुजौनिहारो औथुन।''

''अपना सभमे केते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छै।''

भगिन-पुतोहु दालि दड़ैले अबै छलि। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजरि पड़िते मुँह बिजकबैत बाजलि-

''बुढ़ा, अपनो मरता आ दोसरोकेँ जान मारथिन। काल्हि-परसू ई सभ काज होइतै।'' कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़लि।

गोसाँइ डुमिते भाए भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भजनाक माथपर चाउर-दालिक। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आँगन पहुँच सिंहेसरी कानल नै। माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइ छै। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खुट्टापर लघैर महिंस अछि, बरखी सन काजमे जौं एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहेन हएत? ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरू केलक-

''अँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपए नै यअ जे काल्हि बाबाक बरखी छियनि आ आइ तूँ अबैले कहलँ?''

तैबीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेल। माथपर मोटरी रहबे करै तखने मुनिया सिंगहेसरीकेँ कहलक-

> ''दाइ, हमर कोन दोख अछि मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहेन बिसराह छथुन जे बिसरि गेलखुन। आइए बुझलौं।''

माएक जवाब सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नै बूझि माएकेँ अगुअबैत बाजलि-

> ''जाबे बाबा जीबै छला ताबे केते मानै छला। आब जखनि ओ नै छथि तखनि हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबनि। एगारहो गोटेक तँ ओरियान करि कऽ अबितौं।''

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत रहल। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइ छै। मुदा हम तँ बिसरि गेल छेलौं। सामंजस्य करैत गुलटेन बाजल-

“पाहुन किए ने एलखुन?”

सिंहेसरी कहलकनि-

“से तूँ नै बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखनि तँ एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महिंसकँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।”

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजलि-

“ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि। तोरा लिए जेहने ई तेहने उ। अहूठीम तँ दहीक ओरियान भइए रहल हेन। तइले तोरा किए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइएक छिऐ कि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस किए होइ छौ। मोटरी सभकँ खोलि-खोलि चीज-बौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पएर धोइ गोसाँइकँ गोड़ लगहुन।”

पत्नी आ बेटीकँ शान्त होइत देखि गुलटेन मुस्की दैत बाजल-

“गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। केते भारी काजे अछि।”

घरक गोसाँइकँ गोड़ लगि सिंहेसरी पिताकँ गोड़ लगैले बढ़ल आकि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने पुछलक-

“बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ तँ ने होइ छह?”

हँसैत सिंहेसरी कहलकनि-

“बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पएर लड़बै छी, सुखसँ दिन

कटैए।''

भोजमे खूब जश गुलटेनकेँ भेल। भरि-दिन एम्हर-दौड़ तँ ओम्हर-ताकमे दुनू परानी रहल। मुनियाक छाती केराक भालरि जकाँ कँपैत। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहली। जेना भुख-पियास केतौ पड़ा गेलै। मुदा भोजक जश दुनू परानी गुलटेनकेँ, जहिना ऊसर खेतमे कूश लहलहाइत तहिना लहलहा देलक। पिताकेँ सिंहेसरी कहलक-

''सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लए।''

खेला-पीला पछाति गुलटेनक मनमे सिनेमाक रील जकाँ नाचए लगल- ठीके ने लोक कहै छथिन जे जेहेन करत से तेहेन पओत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छेलनि तहिना ने हेतनि। आ-हा-हा ओँगरी पकड़ि-पकड़ि घर बन्हैक लूरि सिखौलनि। जीबले बारहो मासक काज सिखौलनि। मने-मन गुलटेन पिताकेँ गोड़ लगलक।

❍❍

८. डंका

चुड़लाइ, तिलकुट आ चूड़ा-मुरही गमछाक एक भागमे बान्हि दोसर भाग दहिना हाथे पकड़ि लटकौने जीवानन्द उत्तर मुहेँक रस्ता डेग झाड़ने जाइत रहए। दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया अखड़े चौकीपर बाँहिक सोंगरक कान्हपर माथ अड़कौने भैयाकाका रस्ते दिस देखैत रहथि कि नजरि पड़िते जीवानन्दकेँ किछु पुछए चाहलनि मुदा मन रोकए लगलनि। सोगाएल मन। मुदा जीवानन्दक आकर्षित रूप देखि मन धिक्कारलकनि जे सभ दिन एकठीम बैस नीक-बेजाए, गप-सप्प करैत एलौं। आइ तँ सहजे तिलासंक्रान्ति सन पावनि छी। तहन जौं नै टोकब तँ केहेन हएत। गंभीर मन मुदा मुस्की दैत पुछलखिन-

“केतए एते हड़बड़ाएल जाइ छह जीवानन्द?”

भैयाकाकाक टोकबकेँ अनठा आगू बढ़ि जाएब जीवानन्द उचित नै बूझि रस्तेपर ठाढ़ भऽ कहलकनि-

“की कहौं काका! ऐबेरक पावनि रीब-रीबेमे रहि गेल।”

जीवानन्दक परेशानी मिलल बात सुनि भैयाकाकाक मनमे गुदगुदी लगलनि। जहिना आत्मा खुट्टा आकि रस्सी सदृश ब्रह्मसँ मिलैत तहिना भैयाकाकाक मन जीवानन्दक बेथा-कथा सुनैले सुरसुरेलनि। चौअन्नियाँ मुस्की दैत पुछलखिन-

“तिलासंक्रान्ति सन खाइ-पीऐबला पावनि, तहन तोरा केना रीब-रीबेमे जा रहल छह?”

भैयाकाकाक बातमे जीवानन्द ओझरा गेल। मनमे उपकलै नीक काज भेने खुशीसँ हँसी लगैए मुदा अधला काज भेने की हँसी नै लगै छै। रस्तापर ठाढ़ भेल जीवानन्दकेँ किछु फुडबे ने करै। जहिना खेतमे हाल कम रहने अँकुड़ नै जनमैत तहिना जीवानन्दोकेँ भेल। असमंजसमे पड़ल मन सोचलकै जे भोरसँ अखनि धरिक अपने बात सुना दियनि। जौं किछु

कहबनि नै तँ मनमे हेतनि जे कोनो उकडू काज केने अछि। मुस्कीआइत कहए लगलनि-

''काका, की पुछै छी। चारि बजे भोरे पोखरिक घाट परहक पी-पाह सुनि निन्न टूटि गेल। उठैक विचार करिते रही आकि पत्नी आबि कऽ कहलनि जे रतुपारवाली दीदीकेँ भरिसक दर्द उपकि गेलनि। पूर मासो छियनि। भरिसक वएह कुहड़ै छथि। सुनिते मन खुशी भऽ गेल जे खूब पावनि हएत? मुदा अपन दियाद नै रहने असथिर भेलौं। उठि कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जनानी सभ घेड़ने। मुदा हमरा देखिते सिबावालीकाकी कहलनि जे बौआ गामपर नै सम्हरतह, डाकडर लग लऽ जाहक। डाक्टरक नाओं सुनि लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे गाए-महिंस जकाँ देहो-टाँग छिड़ियौने आ अड़ऽ-बोऽऽऽ करैत। एक्को क्षण विलंब करब उचित नै बूझि खाटक ओरियान केलौं आ तमोरिया लए गेलौं। केकर मुँह देखि कऽ उठलौं जे अखनि धरि दू कप चाहेटा पीने छी। दतमनिओ पछुआएले अछि।''

''की भेलनि?''

''बेटा।''

''बेसी तबाही ने तँ भेलह?''

''एह की कहूँ काका, जनीजाति तेहेन भौनी होइए जे एकबर हेतै आ सातबर भभटपन करत। जखनि खाटपर चढ़बैत रहियनि तखनि तेना ने हाथ- पएर कठुआ लेलनि जे बूझि पड़ल दाँती लगि गेलनि। मुदा मुँहमे बोल रहबे करनि। पकड़ि-पकड़ि हाथ-पएर सेरियौलियनि। मन तेहेन लहरि गेल जे हुअए दू एँड़ ऊपरोसँ लगा दियनि। मुदा फेर भेल जे अधिक दर्द भेने लोकक बुधिओ बाइत जाए छै। हो-ने-हो कहीं सएह भऽ गेल होइन।''

मुस्की दैत भैयाकाका-

''डाक्टर लग ने तँ बेसी भँगठी लगलह?''

''नै। संयोग नीक रहल जे एकमुहरी काज सुढ़ियाइत गेल। साते बजे निकास भऽ गेलनि। मुदा तेते ने काजक ओझरी रहए जे सम्हारैत-सम्हारैत डेढ़ बजे विदा भेलौं।''

''पवनौट केतए लऽ कऽ जाइ छह?''

“तीन पुश्तसँ यूनूसक परिवारसँ आवाजाही अछि। आइ भोरे हुनकर छोटकी बेटी एक मुजेला तरकारी दऽ गेल छेलए। सभ साल दइ छथि। अपने कारोबार छन्हि। ओना पावनि सभमे सेहो पवनौट दइ छथि। तहिना हमहूँ दइ छियनि। सएह छी। आन बेर आठे-नअ बजे दऽ अबै छेलियनि। मुदा आइ तँ दोसरे भाँजमे पड़ि गेलौं।”

“हमर तिल-चाउर कखनि खेबह, आकि अपने ताले-बेताल रहबह?”

“की कहूँ काका, मरैओक पलखति नइए। निचेन भऽ कऽ आएब। अखनि ओहो बच्चा सभ बाट तकैत हएत। सभ भोरे नहाएल आ हम दतमनिओ नै केलौं हेन।”

“अच्छा जाह। बाट तकबह?” कहि भैयाकाका चुप भऽ गेला।

जीवानन्द फुसफुसाइत विदा भेल-

“तेहेन माया-जालक झमेल अछि जे विचारकेँ घुसका-फुसका दैत अछि, जइसँ समैक झुट्ठा बनि जाइ छी। काजक अपन गति छै। समैक गतिसँ मिलि कऽ चलैले ओकरा केना छोड़ब?”

रस्तेपर जीवानन्दकेँ यूनूसक कोरैला बेटा आ छोटकी बेटी देखलक। देखिते दुनू दुआरपर सँ आँगन जाए माएकेँ कहलक-

“जीवानन्द काका अबै छथिन। बड़ीटा मोटरी हाथमे छन्हि।”

हाटक कोबी सेरियौनाइ छोड़ि यूनूसक पत्नी अँगनाक मुहथरिपर आबि, देखलनि। तैबीच भाए-बहिनकेँ कहलक-

“बड़का लाइ हम लेबौ।”

बेटाक बात सुनि माए किछु बाजलि नै। मुस्कीआ कऽ रहि गेल। जीवानन्दकेँ पहुँचिते माए बेटीकेँ कहलक-

“काका एलखुन, प्लास्टिकबला ओछाइन बैसैले ओछा दहुन।”

हाथक गमछा दैत जीवानन्द कहलक-

“नै दाइ, अखनि नै बैसब। झब दए गमछा अजबारि कऽ लाबह।”

जीवानन्दकेँ गेलोपर भैयाकाकाक नजरि जीवानन्देक बात ‘मरैओक पलखति नै अछि’ पर नचैत। पावनिओ रहने दतमनि करैक पलखति जेकरा नै छै, ओकरा लेल पावनिए की? मन आगू बढ़लनि, ई दुनियाँ विचित्र रंगमंच

छी। जेहने कलाकार तेहने ई रंगमंच। सुपात्र लेल जौं इन्द्रासन सदृश अछि तँ कुपात्र लेल गंध करैत नर्क जकाँ सेहो अछि। वीर लेल वीरभूमि, तपस्वी लेल तपोभूमि, साधक लेल साधना भूमि तँ चोर-डकैत लेल सोनाक चिड़ै। मधु चढ़ौनिहार लेल मधुशाला तँ इज्जतखोर लेल वेश्यालय सेहो छी। पार्ट खेलेनिहार सेहो अजीब अछि। केतौ पुरुख महिला बनि कलाप्रदर्शित करैए तँ केतौ महिला पुरुख बनि सेहो करैए। मुदा तँए कि पुरुख पुरुख बनि आ महिला महिला बनि अपन पार्ट अदा नै करै छथि। जरूर करै छथि। मन आगू बढ़ि रामायण दिस बढ़लनि। हँसी लगलनि। जे मर्यादा पुरुषोत्तम राम दसमुहाँ रावणकेँ मारलनि (नाश केलनि) वएह वोन जाइकाल कौशल्याक सम्बन्धमे की केलनि। माएक सेवा बेटाक धर्म नै छी? पितासँ कम माए होइत? मन ओझराए लगलनि। मुदा कनी घुसुकि कृष्ण दिस चलि गेलनि। कृष्णपर जाइते हँसी लगलनि। ठोर पटपटेलनि जे नान्हि-नान्हिटा छौड़ा बड़का-बड़का जहलक छहरदेबाली तोड़ि बहरा जाइत अछि मुदा जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकेँ नचौनिहार छथि, हुनका बुते उक्खरिक बन्हन -ऊखल बन्धन- नै टुटलनि। भैयाकाकाकेँ छगुन्तासँ नजरि निच्चाँ भेलनि मुदा लगले बदलि गेलनि। नजरि बदलिते जोरसँ हँसी लगलनि। मनमे एलनि शिवजी। हद केलनि ओहो, शिवसँ शिवानीओ बनैमे देरी नै लगलनि।

फेर घूमि कऽ भैयाकाकाक मन जीवानन्देपर चलि एलनि। जाधरि जीवानन्द सन-सन बेटा समाजमे नै जनम लेत ताधरि समाजक उन्नति कागतपर बनौल फूल-फलक गाछ सदृश रहत। जइ समाजक लोक पावनिक पाछू पनरह-पनरह दिन पहिनेसँ लगल रहैए। तहूमे एकटा नै कतेको पावनि सालक भीतर अछि, खर्चाक बाट तँ चौड़गर देखै छिऐ मुदा आमदनीक बाटपर नजरिए नै जाइ छै। कियो चारि बजे भोरे स्नान कऽ लाइ-मुरही खेलक तँ कियो चारि बजे बेर झूकैत तदमनि करत। की चारि बजे भोरक सुरूज चारि बजे अपराह्नोमे रहै छथि? सुरूज तँ महाविशाल छथि। तहन मौसम किएक बदलैए? की तइ सदृश मनुखक नै अछि?

रस्ते कातक बँसबीटीमे दतमनि तोड़ि रस्तेसँ दतमनि करैत जीवानन्द आँगन आबि बाल्टीन-लोटा लऽ सोझहे कलपर पहुँचल। हाँइ-हाँह कुड्डुड़ कऽ अदहे-छिदहे नहा आँगन आबि पीढ़ीपर बैस पत्नीकेँ कहलकनि-

"पहिने लाइ-मुरही आ तिलबा नेने आउ?"

"आब कलौ खाएब आकि भुज्जा-भरड़ी खाएब।"

"हद करै छी अहूँ, भोरुका स्नान अखनि केलौं आ खाइबेरमे साँझ पड़ि गेल। सभ सखी सासुर गेल हमरा लेखे चैत पड़ि गेल। ठीके लोक कहै छै। भिनसरसँ बारह बजे धरि लोक जलखैबेर बुझैए आ बारह बजेसँ पहिल साँझ धरि कलौक समए। जइ समैक काज पछुआ गेल पहिने ओकरा ने पुराएब। जौं से नै करब तँ दुनियाँक संग केना चलि सकब?"

जीवानन्दक बात सुनि पत्नी सुधा भरि थारी चूड़ा-मुरही लाइक संग-संग तरुओ-तरकारी घरसँ आनि आगूमे रखि ठाढ़ भऽ गेली। भरल थारी देखि मुस्कीआइत जीवानन्द बाजल-

"एते किए अनलौं। वीधे पुरबैक अछि। जहिना नै पान तँ पानक डंटीओसँ काज चलैए तहिना लाइ-मुरहीक वीधे पुराएब। मुदा खिचड़ीओ तँ लइए भऽ गेल हएत?"

पतिक बात कटैत सुधा बजली-

"नै, जखनि अबैक चाल-चूल पेलौं तखनि खिचड़ी बनेलौं। धिपले अछि।"

"तखनि तरुआ किए पानि भेल अछि?"

"तरकारी आ तरुआ सबेरे बनेलौं। तँए सेराए गेल अछि।"

दू- तीन फँक्का फकिते जीवानन्दकँ तरास जोर केलक। गिलास भरि पानि पीब निच्चाँमे रखिते रहए आकि तखने सुधा पुछलकनि-

"तिलासंक्रान्तिमे सभ अपन-अपन बहिन ऐठाम पवनौट लऽ कऽ जाइए। अहाँ छोड़ि देबै?"

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन थारीसँ हटि बहिनपर पहुँच गेल। सासुर बसैसँ पहुलका बहिनपर नजरि पड़िते मन पड़लै, गठुलाक टाटपर सँ केना तिलकोरक पात तोड़ि आनि माएकँ तड़ैले दइ छलि। जहन भानस करै जोकर भेल तहन केते सिनेहसँ तरुआ तरि खुआबै छलि। उझूक मारि-मारि

पत्नीक बात मनमे उठैत। सोचए लगल, जौं एक्के दिन अपनो बेटाक बिआह आ साढ़ूओक बेटाकेँ बिआह होइ, तहन की करैक चाही। विचारमे अबिते अपना दिस तकलक। पावनिक दिन छी, बेर झूकि गेल मुदा नहाइओक छुट्टी नै भेल छेलए। अखनो धरि चैन नै भेलौं। भैयाकाकाक तिल-चाउर पछुआएले छन्हि। की हमरा हिस्सामे पैघ लोक लग बैस एक्को घंटा बुझै-सुझैले नै अछि? सदिखन काजक टिकटिकिया कपारपर चढ़ले रहैए। मन घूमि कऽ भरदुतियापर पहुँचल। ठाँउ कऽ अरिपन बना पीढ़ी धोइ केहेन आसन बनबैए। तैपर बैस जोड़ल दुनू हाथ धोइ सिनुर-पिठार लगा फूल-पान रखि आराधना करैए। की ओइ बहिनकेँ बिसरि जाएब? कथमपि नै। मुदा बहिनो की हमरासँ अधला जिनगी जीबैए। सभ तरहेँ ओ नीक अछि। भागिन कौलेजमे पढ़ैए। केहेन ठाठसँ भगिनिओक बिआह केलक। अपन सभ लूरि सिखा माए अपने जकाँ बना देने छै। कोनो चीजक कमी छै। ओ कि हमरे पवनौटक भरोसे हएत। मनमे खुशी एलै। मुस्की दैत बाजल-

> "आइ तँ सभठाम पावनि छीहे। कोनो कि दुइर होइबला बौस अछि। काल्हि भोरे गेलासँ एते तँ हएत जे सबहक एकदिना तरुआ हमरा दू दिना हएत।" कहि हाँइ-हाँइ खा कऽ जीवानन्द भैयाकाका ऐठाम विदा भेल।

अखनि धरि भैयाकाका आँखि बन्न कऽ चौकीपर विचारमे डुमले रहथि। फड़िक्केसँ जीवानन्द टोकलकनि-

> "गोड़ लगै छी काका। तिल-चाउर खाइले एलौं हेन।"

जीवानन्दक बोली सुनि भैयाकाका आँखि खोलि असिरवाद दैत कहलखिन-

> "बहुत दिन जीवह जीवानन्द। हम तँ लटकि गेलिअ। देहसँ कम्मो लटकलौं मुदा मनसँ बेसी लटकि गेलौं। बूझि पड़ैए जे लहास ढोइ छी। अनेरे अनकर हिस्सा अन्न-पानि दूरि करै छी। मुदा तरे-तर गणेशजी जकाँ पेट फुलल जाइए। भने तूँ आबिए गेलह। होइए जे टन दनि पराण तियागि दी। मुदा पेटक जे ओँकुरी सभ अछि ओ

जाधरि नै निकलत ताधरि पराणो केना छोड़त?''

हँसैत जीवानन्द कहलकनि-

''औंकुरी तँ लोक छठिमे घाटपर खाइए। अहाँ आइओ खुआएब तँ खुआ दिअ।''

भैयाकाका कहलखिन-

''जहिना जनमौटी बच्चाक मल मृत्युकाल निकलैए तहिना छोटका बाबाक खुऔल औंकरी तोरा दऽ दइ छिअ। अपन गामक चारिम बसान छी। शुरूमे दू परिवार धारक मुँह बदलने आबि कऽ बसल। खेती शुरू भेल। जानवरक उपद्रवक संग-संग मनुक्खोक उपद्रव शुरू भेल। अपन रच्छा लेल उपजौनिहार तैयार भेल। मुदा सोलहन्नी रच्छा तैयो नै भऽ सकल। पानिक सुविधा दुआरे गाम धुधुआ कऽ बढ़ल। जानवरो आ मनुक्खोक उपद्रवसँ बँचैले बलक जरूरति भेल। गाम-गाममे अखड़ाहा बनए लगल। लोक कुश्ती लड़ि अपन शक्तिक परिचए दिअ लगल रहए। गामे-गाम डंको पड़ए लगल रहए। तहिएसँ तिलासंक्रान्तिक दिन अपनो गाममे डंका शुरू भेल।''

भैयाकाका बजिते रहथि कि जीवानन्दक मुँह बाजि उठल-

''काका, अपन बात कनी रोकि कऽ राखू। हम बिसरि जाएब।''

मुस्की दैत भैयाकाका पुछलखिन-

''बाजह?''

जीवानन्द कहए लगलनि-

''पावनिक दिन रहने मन छनगल रहए। तमोरिया (डाक्टर ऐठाम) मे इलाज शुरू होइते भौजी (रतुपारवाली) कँ खलास भऽ किछु सुढ़ियाएल देखि ड़योढ़वालीकाकीकँ गाम पठा देलियनि। मन खुशी रहबे करनि। होइन जे के पहिने भेँट हएत जेकरा सोझहामे पेटक

गुदगुदी बोकरि दियनि। संयोगो नीक रहलनि। मदनावालीकेँ आँगनसँ मुड़ियारी दैत देखलखिन। छुतका (अशौच) दुआरे हाँइ-हाँइ अँगनेक चूल्हिपर लोहियामे तरकारी तड़ै छेली। सोझहामे देखि ड्योढ़वालीकाकी ससरि कऽ आँगन बढ़ली! नजरि पड़िते मदनावाली भौजी आग्रह करैत कहलकनि-

"एत्तै आबथु काकी।"

बिना पएर-हाथ धोनहि चूल्हिक पाछूमे बैस गेली। तीनसल्ला अरूआक तरुआ बढ़बैत कहलकनि-

"काकी कनी नून देखि लेथुन।"

दुनू गोटे चूल्हिए लग बैस खाए लगली।

जीवानन्दक बात सुनि ठहाका दैत भैयाकाका कहए लगलखिन-

"अच्छा, तोहर बात भऽ गेलह। आगूक सुनह। केवल अपने गामटा मे नै आनो-आनो गाममे डंका होइ छेलए। तीन बजे भोरेसँ ढोलिया गाछपर चढ़ि वा बड़की पोखरिक महारपर सँ ढोल बजबए लगैत रहए। बेरुका समए डंका होइ छेलए। किछु दिन पछाति रूपैआक प्रवेश भेने डंका दंगलमे बदलि गेल।"

बिच्चेमे जीवानन्द बाजल-

"दू साल पहिने तक तँ होइ छेलैए।"

जीवानन्दक बात सुनि कनीकाल गुम्म रहि भैयाकाका कहए लगलखिन-

"जाधरि मालिक (जमीन्दार) केँ मालगुजारीए धरि होइ ताधरि गाम शान्त छेलए। मुदा जखनि मालगुजारी तरे लोकक खेत निलाम हुअ लगलै तहन ओ पएर पसारए लगल। महाजनी सेहो करए लगल। छपरिया सिपाहीक आगमन गाममे भेल। पहिने तँ ओ कचहरीएक हातामे माने हातामे अखड़ाहा खुनि लड़ै। मुदा किछु दिन पछाति गामक डंका अपना अखड़ाहापर लए गेल। साले-साल डंका करबए लगल। एकाएकी परोपट्टाक खलीफा पीठ देखबए लगल। अपन

इज्जत बचा हम मकरक रविकेँ डंका करबैत रहलौं। मुदा ओ सभ (छपरिया) डंकामे बलउमकी करए लगल। साले-साल झंझटि हुअ लगल।''

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्दक आँखि भरि गेलै। जीवानन्दक भरल आँखि देखि भैयाकाका पुन: बजला-

''जाधरि छोटका बाबा छला ताधरि कोनो गम नै छेलए। ओना समैओ करोट लेलक। समैकेँ दहिन होइते शक्ति बढ़ए लगल। तिला-संक्रान्तिसँ अढ़ाइ मास पहिने मन बेकाबू भऽ गेल। पुरने अखड़ाहाकेँ छील-छालि खुनलौं। लपटनिहार सभ संग दिअ लगल। मालिकक खलीफाकेँ माटि पठा कहलिऐ जे जौं एक माएक दूध पीने हुअए तँ कचहरीक हातासँ बाहर आबि जेतए ओकरा फड़ियबैक होइ, फड़िया लैत। देशक हवा देखि बूझि पड़ल जे सभ जागल अछि, केवल हमहींटा मुरदा भेल छी।''

जीवानन्द बिच्चेमे टोकलकनि-

''तहन की भेल?''

भैयाकाका कहए लगलखिन-

''ओहो (छपरिया) लक्ष्मण रेखा (सरकारी हाता) छोड़ि बाहर अबैक मानि लेलक। डंका भेल मुदा बाह रे संतोष ढोलिया। ओइ दिनक ओकरो हाथकेँ (बजबैक) धैनवाद दी जे जहिना कुरुक्षेत्रमे कृष्णक शंखक अवाज रहनि तइसँ मिसिओ भरि कम ढोलकक अवाज नै रहए। कहैले तँ अधिक गामक देखिनिहार (कुश्ती देखिनिहार) रहथि मुदा संख्या कम रहए। तहूमे ओहन देखिनिहार बेसी रहए जे ओइ खलीफाक (छपरिया) पीठि ठोकैत। मुदा नजरि पड़िते देखि लेलिऐ जे मुँहक ठोर कारी सिआह छै। मनमे एहेन उत्साह उठि गेल, जहिना आगिमे घीउ देलासँ उठैत, तहिना। लंगोटो नै पहिरए लगलौं, धोतीएक ढट्ठाकेँ बरहा जकाँ बाँटि कसि कऽ बान्हि लेलौं।

इम्हर ढोलपर संतोष अवाज दिअ लगल- चट-धा, गिड़-धा, चट्-धा गिर-धा।''

''अवाज सुनि कूदि कऽ अखड़ाहापर गेलौं। मनमे उठल जे अनेरे हाथ की मिलाएब। बाँहि पकड़ि लेलौं।''

ढोलिया हाथ बदललक। ढाक्-ढिना, ढाक-ढिना, ढाक-ढिना बजबए लगल। ढोलक अवाज तँ दहिन रहए मुदा देखिनिहारक अवाज वाम भऽ गेल। फेर ढोलिया हाथ बदलि-

''चट्-गिड़-धा, चट-गिड़ धा, चट-गिर धा'' बजबए लगल। हमरो साहस बढ़ल। भय मनसँ निकलि गेल। मुदा माटिपर चलि गेलौं। माटिपर जाइते ढोलिया (संतोष) हाथ बदललक। मेही अवाजमे-

''धाक्-धिना, तिरकट-तिना। धाक्-धिना, तिरकट-तिना।'' माटि परहक दाँवसँ ऊपर भेलौं। उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। देखिनिहारक आँखि सेहो बदलल। ऊपर होइते ढोलिया मोट अवाज आ भौड़ी अवाजमे बजबए लगल-

''चटाक-चट-धा, चटाक-चट-धा।'' अवाजेक संग ओकरा उठा कऽ पटकि देलिऐ। मुदा पीठ गरे खसल। माटिपर खसिते ताल बदललक। बजबए लगल-

''धिक-धिना, धिक-धिना।''

अवाज सुनि धाँइ दऽ चित केलौं। चित्त करिते ढोलसँ अवाज निकलए लगल-

''धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़।

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्द कहलकनि-

''अहाँ एहेन चैनक समुद्रमे पहुँच गेल छी जे मगन भऽ जीबैत हएब?''

मगन सुनि भैयाकाकाक हृदए, बाढ़िसँ उमड़ल गंगा जकाँ जे अपन

घर (नदी) छोड़ि गाछी-बिरछी, खेत-पथार पहुँच पवित्र (गंदा साफ) करए लगैत, तहिना भऽ गेलनि। विह्वल भऽ कहए लगलखिन-

"बौआ, तोरा देखि हृदए शान्तसँ प्रशान्त भऽ जाइत अछि आब तँ तोरे सभपर छहरो-महर हएत आ दारो-मदार अछि। मुदा हवाक गंदगी तेना ने विहारिमे पसरि गेल जे एक्को क्षण जीबैक मन नै होइए। लीला सभ जे देखै छी तँ शूल जकाँ सदिखन हृदैकेँ बेधैत रहैए। आजुक पीढ़ी जीवनक रस्तासँ एते दूर हटि रहल अछि जे मनुखक औरुदा सए बर्खसँ घटि कुत्ताक औरुदा (बारह बर्ख) मे बदलल जा रहल अछि। दुख एतबे नै होइए, जे औरुदेटा घटि रहल छै, मनुखक वृत्तिओ टूटि-टूटि ओम्हरे जा रहल अछि। जइ रूपक बेवहार भऽ रहल छै ओइ सभसँ आगम बूझि पड़ैए जे माए-बाप, भाए-बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार ऐ रूपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना भूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य छै।"

❍❍

९. संगी

बालिग-नबालिगक सीमापर पहुँचल सुशील सतरह बरख सात मास पार कऽ चुकल। पाँच मासक उपरान्त बालिग भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि क्लासक आशासँ समैपर कौलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कौलेजक हातामे पहुँचिते घंटी बजल। वर्गमे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घंटी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घंटी पढ़ाइ नै देखि कियो खुशीसँ समए बितबैत तँ कियो बन्न कोठरीमे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए। ओइमे सँ एक सुशीलो रहए।

कनैत मने सुशील क्लासक कोठरीसँ निकलि डेरा दिस विदा भेल। मनमे एलै, की हमरा सबहक जिनगी पोखरिक पानि जकाँ चारू भरसँ घेराएल अछि वा पहाड़सँ निकलैत नदी जकाँ समुद्र दिस बढ़ैए।

डेरा एलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत्त सुशील किताब-कॉपी रैकपर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पएरक चप्पल खोलनहि चौकीपर ओंघरा गेल। जेना मन काबुएमे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घंटीक पढ़ाइ किए ने भेल? नजरि दौड़ौलक तँ देखलक जे ओइ विषयक तँ शिक्षके नै छथि तँ पढ़ैबतथि के? मनमे हँसी उपकलै। मुदा फेर मन घुमलै। बिनु शिक्षकक शिक्षण संस्था केना चलि सकैए। की एकरा प्राइवेट संस्थाक बाट खोलब नै कहबै? की सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था तँ ने छी। मन घुसुकि दोसर घंटीक विषयपर पहुँचल। एगारह सए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छथि। तहूमे जहियासँ इन्चार्ज भेला तहियासँ क्लासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रूम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैसए लगला। जहिना ईंटाक देबाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नव वेतनक हिसाब दूरी बनौने। अधखिलल फूल जकाँ, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ल। मनमे उठलै मधु दइबला माछीकेँ विधाता ओहन डंक किए देलखिन। मुदा मन तेसर घंटीक विषयपर गेलै। तीन शिक्षक। तहन किए ने पढ़ाइ भेल। ई तँ ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकेँ बहुत अधिक कठिनाइ हेतै। प्रोफेसरपर नजरि पड़िते देखलक जे के एहेन वेपारी हएत, जे समए

पाबि अपन सौदाकेँ महग करि कऽ नै बेचत। एहेन काज तँ वएह वेपारी कऽ सकैए जेकर मन वैरागी होइ। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होइ। जहिना जीरो डिग्री अक्षांससँ सुरूज मकर रेखा दिस बढ़ैत तँ कर्क रेखा दिस विपरीत समए हुअ लगैत, तहिना तँ ने भऽ रहल छै। एक दिस घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसँ महग। जहिना गरीबक घरसँ सोनाकेँ दुश्मनी छै तहिना की शिक्षोक भेल जा रहल छै। मन आगू बढ़ि चारिम घंटीपर पहुँचलै। तीन शिक्षक तँ ओहू विषयक छथि। तहन किएक ने पढ़ाइ भेल? एक गोटे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लगल छथि मुदा तैयो तँ दू गोटे छथिए। एक गोटे तेरहम दिन रिटायर करता। मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समए किछु दिन लोक दुनियासँ कारोबार समेटि घरक ओछाइन धड़ैए तहिना तँ हुनको धड़ैक चाहियनि। सोगेसँ ने रोग होइए? तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा अदहा भऽ जेतनि। समए तँ अहिना जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नै अएने बितलनि, रहतनि। तँए सोग होएब अनिवार्य आ काज नै करब आवश्यक छन्हिए। मुदा तेसर तँ ऐ सभसँ अलग छथि। ओ किए ने एला। नजरि दौगबिते देखलक जे ओ तँ सप्ताहमे एक दिन आबि छबो दिनक हाजरी बनबै छथि। शनि तँ काल्हि छिऐ आइ केना अबितथि? एते मनमे अबिते सुशीलक आँखि झलफलाए लगल। मन खलियाएल बूझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूँगी बदलिते पानि पीऐक मन भेलै। कोठरीसँ निकलि कलपर हाथ-पएर-मुँह धोइले गेल। पानि पीबिते मन हल्लुक बूझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक वोनाएल रूप देखलक। कौलेजकेँ बीचमे देखि सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघर स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाए मिलैए तहिना ने टटघरोक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अबिते गाछसँ गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकेँ छिटकैत देखलक। ई लुत्तीक आगि तँ कोसक-कोस सूखल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फूलल-फड़ल गाछकेँ सेहो जरा दैत अछि। जहिना सघन वोनमे रस्ताक ठेकान नै रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलै। सतरह बर्खसँ ऊपर।

अठारहमक बीच। अठारह बरख पूरलापर चेतन भऽ जाएब। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियाँकेँ अंगीकार करब। आकि देखि कऽ छोड़ि देब। स्कूल-कौलेजक पढ़ाइक तँ यएह गति अछि। जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि विशाल अट्टालिका बनैए तहिना ने कनी-कनी सीख बाल चेतनाकेँ पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तँ अपने केने हएत। मन शान्त भेलै। नजरि देलक गामक ओइ बच्चापर जे माएक मुहसँ लुक्खी सीखैए मुदा स्कूलमे प्रवेश करिते गिलहरीसँ भेँट भऽ जाइ छै। की हमर मातृभाषा गामो धरि नै अछि। की हिमालय पहाड़सँ गंगा कूदि-कूदि रस्ता टपि समुद्रमे पहुँचैए आकि नीच-ऊँचक रस्ता टपैत समुद्रमे पहुँचैए। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। की बच्चाकेँ कर्मरूपी माएसँ सीख ज्ञान रूपी गुरुसँ मिलि पबैए। जौँ से नै तँ माए-बाप गुरु केना? गामक स्कूलसँ नजरि हटि मिड़ल स्कूल आ हाइस्कूलपर पहुँचलै। केतौ हाइस्कूलसँ क्लास काटि मिड़ल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तँ केतौ कौलेजक क्लास हाइस्कूलमे। जहिना क्लास तँ कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत। पढ़निहार तँ विद्यालय पैदा कऽ दैत अछि मुदा पढ़ौनिहार केना...। आगू बढ़ैत सुशीलक मन कौलेजमे नै अँटकि विश्वविद्यालय पहुँच गेल। मनमे उठलै जिनगीक पाँचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यकता शिक्षा छी। ओना शिक्षण संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर पोथी उलटा प्रश्नक जवाब अपन परीक्षाक कॉपीमे लिखैए तँ कियो पढ़ाइक अभावमे प्रश्नपत्रो ठीकसँ नै बूझि पबैए। की ऐ दौड़मे के आगू बढ़त? कियो मार्कसीटे कीनि लैत अछि। की शिक्षा सन समस्याकेँ बेदरा-बुदरीक खेतमे बनौल गरदा-गुरदीक घर-आँगन छी? चिन्तासँ मातल सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघराएले रहल। चिन्ताक वनमे चिन्तनक गाछ केतौ देखबे ने करए जइसँ आशाक फल देखैत। सूतल शरीर आरो सुति रहल।

कौलेजसँ आबि वसन्ती कोठरीमे किताब-कॉपी रखि सोझहे माए लग पहुँचल। जलखैक छिपली वसन्तीक आगूमे बढ़बैत माए पुछलखिन-

"बुच्ची, उदास किए छह?"

अपनाकेँ छिपबैत वसन्ती बाजलि-

"नै, नै। उदास कहाँ छी।"

वसन्ती अपन वसन्ती-बहारकेँ छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसबिसाइत रहैए तहिना मनक रोग वसन्तीकेँ बिसबिसाइत। मनमे नचैत रहै कौलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी। सुशील आ वसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नै हेबाक सोगसँ सोगाएल वसन्ती माएसँ आगू गप्प नै बढ़ा बिस्कुट खा चाह पीब चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओँघरा गेल। सिरमापर माथ देने दुनू बाँहि समेटि कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस ताकए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि की ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नै बनैत जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए। आजुक शिक्षाक रूप एहेन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कौलेजमे पढ़ाइ नै भऽ रहल अछि। तैपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा लेल बाप-माए अपन जिनगी तोड़ि, खूनक घोँट पीब कऽ जीवन-बसर करै छथि। जेकर परिणाम कि भेटै छन्हि तँ जेहो अपन बनौल आकि पूर्वजक देल जे सम्पति रहै छन्हि बेटीक बिआह करबैमे देमए पड़ै छन्हि। बीस लाख रूपैआ खर्च कऽ डाक्टरीक शिक्षा बेटीकेँ दियाउ आ तैपर सँ बीस लाख बिआहोमे चाही। ओइ डाक्टर सभसँ पुछै छियनि जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतो अपन अन्याय नै रोकि सकै छी तँ की आशा अहाँसँ कएल जा सकैए। माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसँ ठिठुरल बच्चाकेँ जीबैक उपए अहाँ कऽ सकबै?

मन आगू बढ़ि अपनापर एलै। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तँ किसान, वेपारी आकि नोकरिहरे किएक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल अछि ऐमे केते गोटे अपनाकेँ सुरक्षित बूझि रहल छथि। की कौलेज-हाइस्कूलक विद्यार्थी अपन अध्यापिकाकेँ ओहने नजरिसँ देखैए जइ नजरिसँ अध्यापककेँ। की अदौसँ अबैत हमर संयुक्त परिवारक सामाजिक ढाँचा रूपी धरोहर, गाछसँ खसल पाकल कटहर जकाँ आँठी उड़ि केतौ, कोह उड़ि केतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेल एकठीम आ नेरहा ओँघराइत केतौ, तहिना आँखिक सोझहामे नष्ट भऽ जाएत। ऐ दुखद घटनाक जवाबदेह के? गामक बच्चाकेँ स्कूलसँ लऽ कऽ कौलेज धरि एते तरहक गाड़ीक

अवाजसँ लऽ कऽ लोडस्पीकरक अवाज धरि कानमे पड़ैए। जैठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ जाइत अछि तैठाम पढ़ाइक की दशा होएत।

एते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर वसन्ती अँटकि गेल। जहिना शिशिर-ग्रीष्मक बीच वसन्तक स्वागत गाछपर बैस कोइली अपन जुआनीक इठलाइत राग-तानसँ करैए तहिना वसन्तीक स्वागत लेल होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कऽ रहल छन्हि। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुख देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहै छथि तँ कृष्ण पाछू घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फेकए चाहै छथि तँ कखनो हरिअरका। आँखिपर नजरि पड़िते तँ कारी रंग मनमे अबनि मुदा निशाने साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुँहपर फेक देलकनि। मुँहपर अबीर पड़िते दुनू हाथे कृष्ण मुँह-कान पोछए लगलथि। आकि हाथसँ पिचकारी खसिते राधा आगू बढ़ि दुनू बाँहि पसारि हृदैसँ लगबैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हँसए लगलथि। नम्हर साँस छोड़ैत वसन्तीक मनमे उठल- ऐ धरतीपर किछु करए लेल संगीक जरूरति अछि। जाधरि पुरुख-नारी मिलि अपन समस्या लेल अपन पौरुखकेँ नै जगौत ताधरि सपना साकार केना भऽ पओत।

ओछाइनसँ उठिते सुशील सुरूजक किरिणकेँ देखए लगल। देबालक एक छोट भूर देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करै छल। सुरूजक ओ रूप नै जैठाम आँखि नै टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नै। पातर-कोमल। बिजलौका जकाँ सुशीलक मनमे उठल पुरुख-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तहन जौं ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, केतेक लाजिमी छिऐ। कोठरीसँ निकलि सुशील वसन्तीसँ भैंट करैक विचार केलक।

प्रात भने क्लासक संगी वसन्ती ऐठाम पहुँचल। टेबुलक एक कोणपर पोथी गैंटल। एकटा किताब आ कॉपी आगूमे पसरल आ पेन सेहो खोइल कऽ रखल मुदा कुरसीपर ओंगठि आँखि बन्न केने वसन्ती अपन वसन्ती-बहारपर नजरि अँटकौने रहए। जहिना वसन्त साले-साल अबैए आ जाइए तहिना की मनुखोक जिनगीमे वसन्त अबैत आ जाइत अछि? कथमपि नै। मनुखक जिनगी तँ ओहन होइए जइमे वसन्त एलापर पुनः जाइ नै छै। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जकाँ महा वसन्त बनि जाइत अछि। एते बात

मनमे अबिते देह चौंकि गेलै। हृदए सिहरए लगलै। मुदा अपनाकेँ संयत करैत धियान वसन्त ॠतुपर देलक। ॠतुपर नजरि पड़िते देखलक जे एकठीम फसिल लागल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसँ सजल बगीचा जैपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसँ वसन्तक स्वागत करैए। तँ दोसर कोसीक बाढ़िसँ नष्ट भेल ओ इलाका जइमे बालुसँ भरल ढिमका-ढिमकी बनल खेत, गाछ बिरिछक अभाव देखि कनैत चिड़ै रहैक ठौरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल। की ओइठाम चैत-बैशाखकेँ वसन्त ॠतु नै कहल जाइत अछि? अथाह समुद्रमे वसन्ती कखनो उगए तँ कखनो डूमए। अनासुरती नोरसँ आँखि ढबढबाए गेलै। नोर केहेन? दुखक आकि क्रोधक। ओढ़नीसँ वसन्ती नोर पोछिते छल आकि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सँ बाजल-

"वसन्ती।"

वसन्ती कानमे पड़िते औगता कऽ कुरसीसँ उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत वसन्तीक मुहसँ निकलल-

"सुशील।"

कुरसीपर सुशीलकेँ बैसा अपने बगलक कुरसीपर बैस पुछलकै-

"पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?"

सुशील कहलकै-

"कौलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।"

सुशीलक बात सुनि अकचका कऽ वसन्ती पुछलकै-

"किए?"

-"कौलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देखि रहल छी ओइसँ मन दुखी भऽ रहल अछि। ऊपरी ढाँचा किछु देखि रहल छी आ भीतरी किछु आर छै।"

सुशीलक बात सुनि वसन्ती बाजलि-

“सिरिफ अहींटा दुखी छी आकि आरो गोटे छथि।”

वसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमकि गेलै। कनी रहि कऽ बाजल-

“अखनि धरि जे देखलौं ओइमे नगण्य दुखी भेटला आ अधिकांशकेँ कोनो गम नै।”

“किछु तँ भेटला?”

“मुदा ओ कहिया तक संग रहता एकर कोन ठीक। जौं रस्तेसँ घूमि जाथि आकि हलुआइक कुकुर जकाँ रसगुल्ला-जिलेबीक रस चाटए लगथि।”

“अहाँ जे कहलौं ओकरो हम नै कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छै?”

“से की?”

“जौं पुरुख-नारी मिलि सृष्टिक निर्माण कऽ सकैए तँ की कोनो बेवस्थाकेँ नै बदलि सकैए?”

“बदलि सकैए मुदा ओकरा लेल...।”

“हँ। ओकरामे पौरुख चाही। पौरुख सिरिफ पुरुखेक धरोहर नै मनुख मात्रक छी। गललसँ गलल आ सड़लसँ सड़ल बेवस्थाकेँ हमहीं-अहाँ ने संग मिलि बदलि सकै छी।

वसन्तीक बात सुनि, नम्हर साँस छोड़ैत सुशील बाजल-

“ओहन संगी केतए भेटत?”

“संकल्प स्थलपर।”

“ओ स्थल केतए अछि?”

“दुनियाँक एक-एक इंच जमीनपर।”

“संकल्पक विधान की?”

“आत्माक मिलन।” कहि दुनू गोटे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीबाक वचन एक-दोसराकेँ देलक।

○○

१०. ठकहरबा

भोरहरबेमे दादीक नीन उचटि गेलनि। लाख कोशिश केलनि मुदा दोहरा कऽ नीन नै घुमलनि। ओना भोरुका समए वसन्ते जकाँ मधुआएल रहै छै मुदा ओहो की सबहक लेल एक्के रंग रहैए। दिन-राति काजक पाछू नचनिहारकेँ थोड़े वसन्त आ ग्रीष्मक भेद बूझि पड़ै छै। दादीक मनमे एलनि जे अखने ललितक ऐठाम जा कऽ कहिऐ जे अखुनके माने भिनसुरके उखड़ाहामे चिमनीपरसँ पजेबा आ बेरुका उखड़ाहामे बाजारसँ एस्वेस्टस आनि दिहऽ। भोरुका अन्हारक दुआरे रतिगर बूझि पड़लनि। मनमे एलनि जे जौं कहीं बिछानपर जाइ आ निन्न आबि जाए तहन तँ पहपटि हएत। मुदा एत्ती रातिकेँ जेबो केतए करब? गुन-धुन करैत सोचलनि जे से नै तँ घरसँ ओछाइन निकालि अँगनेमे बिछा कऽ पड़ब नै, बैस कऽ काजक गर लगाएब। सएह केलनि। काजपर नजरि दैते पजेबापर मन गेलनि। एक नम्बर राँट ईंटा तँ तेते महग अछि जे कीनब थोड़े पार लागत। मन मन्हुआ गेलनि। जहिना दू-बट्टी, तीन-बट्टीपर पहुँचिते बटोही अपन अगिला बाट हियाबए लगैए तहिना दादीओ हियाबए लगली। केते दिन जीबे करब जे एक नम्बर ईंटाक जरूरति पड़त। लऽ दऽ कऽ बीस-पच्चीस बरख आरो जीब। तइले तँ तीनियोँ नम्बर ईंटा नीके हएत। फेर मनमे एलनि जे कियो कि अपनेटा लेल घर बनबैए आकि बालो-बच्चा लेल बनबैए। मन ठमकि गेलनि। किछु फुड़बे ने करनि। फेर मनमे उठलनि जे लोक काँच-ईंटाक घर केना बनबैए। ओहो तँ तीस-चालीस बरख चलिए जाइ छै। ओइसँ नीक ने तीन नम्बर। कम-सँ-कम अध-पकुओ तँ रहैए। जेतबे नुआ रहए तेतबे टाँग पसारी। तीनियोँ नम्बर तँ ईंटे छी किने? हँ, हँ, तीने नम्बर ईंटा लेब। मन आगू बढ़ि चदरापर माने एस्वेस्टसपर गेलनि। चदरापर नजरि पड़िते मन झुझुआ गेलनि। सिमटीक तेहेन चदरा बनए लगल अछि जे सालो भरि चलत आकि नै? जौं कहीं गोलगर पाथर खसल तँ चूरम-चूर भऽ जाएत। पहिने केहेन बढ़ियाँ टीनक चदरा अबै छेलै जे एक बेर घरपर दऽ देलासँ केते दिन ओहिना रहै छेलए। मुदा ओहो बैशाख-जेठक रौदमे रहै-बला नै होइए। ओना

जौं गतगर कऽ खरही छाड़क ऊपरमे दऽ दियौ तँ कोठे जकाँ भऽ जाइए। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा बनियाँ सभ भऽ गेल अछि जे लेबालकेँ जे होउ अपन धरि तिजोरी भरल ताकी। खैर जे होउ, जे सबहक गति से हमरो हएत। तइले केते मगज चटाएब।

पोहु फटिते सुरूजक लाली देखि दादी ओछाइन समेटि घरमे रखि ललितक ऐठाम विदा भेली। मन पड़लनि, आठमे दिन अदरा नक्षत्र चढ़त। आठे दिनक पेसतर घर बनबैक अछि। जौं से नै भेल तँ गिलेबापर जोड़ल देबाल ढहत-ढनमनाएत आकि की हएत। सेहो ने कहि। जे घर अखनि अछि ओहो उजड़िए जाएत। तैबीच जौं बर्खा झहड़ल तँ जानो बँचब कठिन भऽ जाएत।

ललितकेँ दरबज्जा नै। भनसे घरमे सुतबो करैत। ठोकले दादी आँगन पहुँच ओलती लगसँ कहलखिन-

"गोसाँइ उगैपर भेलखिन आ तों सुतले छह?"

दादीक अवाज सुनि ललितक पत्नी सुपती उठि केबाड़क अदहा पट्टा खोलि चुपचाप वाड़ी दिस विदा भेली। ओसार टपि केबाड़क दुनू पट्टा खोलि ललितक देह डोलबैत दादी कहलखिन-

"ललित, ललित। उठह, केते सुतै छह?"

सुतले-सूतल आँखि मुननहि ललित बाजल-

"की कहै छी?"

"अखनि धरि सुतले किए छह?"

ओछाइनपर सँ उठि दादीकेँ बैसबैत अपनो बैस बाजल-

"बड़ी रातिमे पुलिसक गाड़ी खोइर-बन्हामे लसैक गेलै। भरि गाड़ी पुलिस रहए। केतबो बाप-बाप केलक मुदा गाड़ी नै निकललै। जेना जानि कऽ अनठा देलकै।"

बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, गालक मसुहरिपर दूटा इंच-इंच भरिक पाकल केश, सोन सन उज्जर धप-धप केश, गरदनिक चमड़ा घोकचि कऽ

लटकल दादीक। ठहाका मारि बजली-

“तोरा सन-सन लोकसँ की बेसी बुत्ता ओकरा सभकेँ होइ छै। गाँजा पीब-पीब छाती फोंक कऽ नेने रहैए।”

मुँह चटपटबैत ललित बाजल-

“बड़ मोटगर-सोटगर सभ रहए?”

“धु: बतहा कहीं के, एतबो नै बुझै छहक जे तखनि थालमे सँ गाड़ी किए ने उखड़लै।”

मुँह डेढ़बड़ा कऽ ललित बाजल-

“उ सभ हाकिम रहै किने।”

“अच्छा, ई सभ छोड़ह। पाइ केते देलकह?”

“पहिने वएह पुछलकै जे केते दिअ, ओना हमहूँ सभ सात-आठ गोरे रही मुदा हमरा छोड़ि सभकेँ होइ जे कहुना जान छोड़ए। सभकेँ सुक-पाक करैत देखिऐ। एक गोरे बाजि देलकै जे हुजूर सरकारीए पाइ छिऐ किने? एतबे सुनैत मातर तड़ंगि कऽ एक गोटे बाजल ‘रौ, बहिं, तुम पहचानता नहीं है।’ कहि पाइ आगूमे फेक विदा भऽ गेल।”

“सुआइत तोरा ओंघी दबने छह। हमहूँ काजे एलौं हेन। अखनि तँ तूँ भकुआएल छह। मुँह-हाथ धुअ। काजक गप छी तँए कनी असथिरसँ विचार करब। ओना अपनो मुँह-कानमे पानि नहियेँ नेने छी।”

“एह, तँ की हेतै दादी। एक दिन टुटलहो-फटलाहा घरक चाह पीब कऽ देखियौ।”

सुपतीकेँ कानमे फुसफुसा दादी चौमास दिस विदा भेली। जाबे दादी मुँह-कान धोइ तैयार होथि तइसँ पहिने ललित सुपतीकेँ चाह बनबैले कहि ओसारक बिचला खुट्टा लग पिरही रखि दादीक बाट देखए लगल। अबिते दादी बजली-

> “कलक पानि बड़ सुन्नर छह।” कहि खुट्टामे ओंगठि पिरहीपर बैस गेली। सुपती चाह नेने आगूमे रखि देलकनि। चाहक रंग देखि दादीक मन खुशी भऽ गेलनि। एक घोंट पीब बजली-

“तेहेन चाह छह जे एक्के उपे जलखै बेर तक रहब।”

ललित-

“आइ काज अनठा दियौ दादी।”

मुस्की दैत दादी-

“किए, घरमे सिदहाक ओरियान छेबे करह...। (मुदा लगले बात बदलि) कोन एहेन हलतलबी काज आगूमे छह जे आइ मनाही करै छह?”

मुँह दाबि सुपती बाजलि-

“हिनका नै बूझल छन्हि जे आइ अलेक्शन छिऐ।”

सुपतीक बात जेना दादीक अँतरीमे छूबि देलक। जहिना आम तोड़िनिहार सरं-गोलिया गोला आमपर फेकैत तहिना दादी फेकब शुरू केलनि-

“कोन फेरमे पड़ए चाहै छह, अपन दुख धंधामे लगल रहऽ। सभटा ठकहरबा छी। एते दिन अपनो सएह बुझै छेलौं मुदा आब बुझै छी जे ठकाइत-ठकाइत जिनगीए ठका गेल। (मुड़ी निच्चाँ कऽ) जहिया समाज खादी-साड़ी पहिरा ‘माए जी’ कहलक तहिया बूझि पड़ल जे समाज की छी। स्वर्गोसँ ऊपर। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा सभ भऽ गेल अछि जे बाजत ढेरी, करत किछु ने।”

ललित-

“अहाँकेँ किए समाज खादी पहिरौलनि दादी?”

ललितक प्रश्न सुनि दादी विस्मित भऽ गेली। जहिना वोनमे जानबरक छोट-छोट बच्चा बौआ कऽ हरा जाइत तहिना आजादी समयक वोनमे दादी हरा गेली। दादीकेँ विस्मित देखि ललितकेँ बूझि पड़लै जे दादी फेर केतौ औना गेली। तँए दोहरा कऽ नै पूछि जवाबक प्रतीक्षा ओइ रूपे करए लगल जइ रूपे माए बच्चाकेँ विद्यालयसँ अबैक आशा करैत रहै छथि। चौअन्निया मुस्की दैत दादी बाजए लगली-

“दुरागमन करि कऽ आएले रही। बूढ़ा-बूढ़ी माने सासु-ससुर जीविते रहथि। बेटा मात्रिक गेलनि। ओइठीनक लोक सभ झंडा उठा खूब हूड़-बरेड़ा

करैत रहए। अपनौं -पति- हुनके सभ संगे बौर गेला। तीन मास बिता कऽ गाम एला।''

ललित-

''बाबा बिगड़बो केलखिन?''

दादी- (अपसोच करैत) ''ओ सभ स्वर्ग गेला, हम नर्कमे छी। आगि नै उठेबनि। हँ, ई भेलै जे बुढ़हो जोगारी रहथिन। तरे-तर सरहोजिसँ सभ भाँज लगा लेने रहथि। जाबे गाम घूमि कऽ एला ताबे तँ इम्हरो लोक झंडा उठा हरबिर्ड़ो करए लगल रहए। आजादीक दस-बारह बरख पछाति गाममे मलेरिया आएल। चारि अन्नासँ बेसीए लोक मरल। अपनो घरहंज भऽ गेल। तीनू गोटे (सासु-ससुर आ पति) मरि गेला। मात्र अपने आ छह मासक बच्चा बँचलौं। ओही बेटाकँ पोसि-पालि जुआन बनाएब अपन देशसेवा बुझलिऐ। खादी साड़ी पहिरैक यएह कारण रहए।''

मुस्की दैत सुपती पुछलकनि-

''नेता सभ जकाँ भाषणो करथिन?''

''बेसी तँ नै बाजल हुअए मुदा मंचपर दुनू हाथ जोड़ि एते जरूर कहिऐ जे 'हे बरहमबाबा गामक रच्छा करिहऽ। मुदा सभ झूठ भऽ गेल! ने बरहमबाबा सुनलनि आ ने केकरो रच्छा भेलै!''

सुपती-

''खादीबला सभ भरि दिन झूठे बजैए?''

सुपतीक बातसँ दादीकँ दुख नै भेलनि। मुस्की दैत बजली-

''ओहिना कनी कऽ मन अछि। शुरूक तीन भौंटमे बहरबैया नेता सभ संग करि कऽ गाम घुमलथि। जेतेकाल संगमे रहियनि तेतेकाल गामेक गप-सप्प करथि। गाममे ने नीक सड़क अछि आ ने बच्चा सभकँ पढ़ैले स्कूल। ने पानि पीऐक समुचित बेवस्था अछि आ ने दबाइ-दारूक। गाड़ी-सवारीक नाओंपर बैलगाड़ी अछि। एहेन समस्या सिरिफ अपने गाम टाक नै इलाकेक अछि। सरकारक अपने बेवस्था लटपटाएल अछि। हरितक्रान्तिक पूर्व धरि

पेटक दुआरे आन-आन देशसँ जनेर-गहुम मंगबए पड़ै छेलए। (कने चुप भऽ मन पाड़ि) तही बीच भूदानी आन्दोलन जागल। नारा देलक- 'जमीनक छबम हिस्सा दान दिअ' जइसँ गरीब लोककेँ वासक संग जोतो जमीन भेटतै। गामक-गाम दान हुअ लगल। मुदा अखनि की देखै छहक जे जोतक कोन बात जे घराड़ीओ सभकेँ नै छै। (ठहाका मारि) सभटा मदारी नाच केलक।''

पटरीपर सँ दादीक बातकेँ उतरैत देखि ललित पत्नीकेँ कहलक-

''दादी बूढ़ छथिन, थकबो करै छथिन किने। शिखरक पुड़िया खोलियापरसँ नेने आउ?''

शिखरक नाओं सुनि दादीक मनमे भेलनि जे शिखर केहेन होइ छै। आइ धरि नामो ने सुनने छेलिऐ। मुदा बजली नै। चकोना होइत देखि ललित बूझि गेल जे भरिसक दादी शिखर नै खेने छथि। मुस्कीआइत बाजल-

''जहिना चाह पीलापर देहमे फुनफुनी आबि जाइ छै तहिना शिखरो खेने होइ छै। इस्कुलिया विद्यार्थी सभ तँ भरि-भरि जेबी रखने रहैए।''

सुपतीक हाथसँ एकटा पुड़िया लऽ ललित दादी दिस बढ़ौलक। जहिना खच्चा-खुच्चीमे पानि देखि बकरी पाछू हटैत रहैए, तहिना शिखरक पुड़िया देखि दादीक मन पाछू हटलनि। मुदा नव चीज रहने सेहन्तो भेलनि। एक चुटकी मुँहमे दैते बूझि पड़लनि जे सरसरा कऽ कंठसँ निच्चाँ उतरल जाइए।

तखने ललित पुछलकनि-

''अपनो गामक लोक जमीन दान केलक?''

ललितक बात सुनि खौंझा कऽ दादी बजली-

''कहबे तँ केलिअ जे सभटा बानरक नाच केलक। एक गोटे समस्तीपुर दिसुका भूदानी नेता खोज करैत अपने ऐठाम एला। (मने-मन मुस्कीआइत) की कहिअ हुनकर हाल। साँझू पहर जखनि गप-सप्प करए लगथि तँ बूझि पड़ए जे जहिना त्रेता युगमे रामराज

रहै तहिना फेर कलयुगोमे भऽ जाएत। ने केकरो पेटक चिन्ता रहतै आ ने रोग-बियाधिक। मुदा ले सुथनी, भिनसरसँ दुपहर धरि ओकरा साबुन रगड़ि-रगड़ि नहाइए आ कपड़े साफ करैमे लगि जाइ। बेरू पहर सभ कपड़ा सुखा, पहिरि कऽ दिन लहसैत निकलै आ खाइ-पीऐ राति धरि भाषण करै। एक पनरहियासँ बेसीए रहल। तैबीच अकच्छ-अकच्छ भऽ गेलौं। खादी भंडारक मंगनी कपड़ा पबैसँ। सदतिकाल बगुला जकाँ उज्जर धप-धप चेहरा बनौने रहए।''

ललित-

''खादी भंडारमे मंगनीए कपड़ा बँटबारा होइ?''

''मंगनी केतौ होइ। गाम-गामक उद्योगकेँ उला-पका कऽ खा-पी कऽ चौपट कऽ देलक। गामक गाम लोकक रोजगार मरि गेल। एक तँ कोसी-कमलाक उपद्रव तैपर सँ जेहो छोट-छीन रोजगार गाममे चलै छल सभ चलि गेल। जखनि लोककेँ गाममे पेटे ने भरत तखनि केते दिन पेटमे जुन्ना बान्हि कऽ रहत। गामक-गामकेँ पड़ाइन लगि गेलै। ने बच्चा सभकेँ पढ़ैक स्कूल अछि आ ने रोग-बियाधि लेल डखाना (अस्पताल)।''

बजैत-बजैत दादी विस्मित भऽ गेली। आँखि बन्न भऽ गेलनि। गुम-सुम देखि ललित पुछलकनि-

''पहुलका बात तँ छूटिए गेल?''

ललितक प्रश्न सुनि दादी मन पाड़ि बजली-

''चारिम भोँट अबैसँ किछु पहिने मारिते-रास पाटी फड़ि गेल। कखनो कोनो रंगक झंडा लऽ कऽ जुलुशो निकले आ सभो होइ तँ कखनो कोनो रंगक। जहिना आखिरी लगनमे छुटल-बढ़ल, बूढ़-पुरान, लुल्ह-नांगर सभ पालकीपर चढ़ि लइए तहिना भदबरिया बेंग जकाँ गामे-गाम नेता फड़ि गेल। ओना हम लिखा-पढ़ी करि कऽ

कोनो पाटीक मेम्बर नै भेल रही मुदा लोको बुझै आ अपनो मानैत रही। तँए मनमे अरोपने रही जे जेकरा जे मन फुड़ौ से करह मुदा जहिना शुरूसँ रहलौं तहिना रहब। भोँट होइसँ पहिने कतेको गाममे मारि भेल। अपना गाममे भोँट दिनसँ पहिने तक तँ मारि नै भेल मुदा भोँट दिन एहेन मारि भेल जे लोककँ पड़ाइन लगि गेलै।''

बिच्चेमे सुपती पुछलकनि-

''हिनको कियो मारलकनि?''

''नै कनियाँ, हाथ तँ नै उठौलक। मुदा भोँट खसबै नै दिअए। हमर भोँट केदैन खसा नेने रहए। केते कहा-सुनी भेलापर अनके नाओंपर भोँट खसेलौं। भोँट खसा कऽ जखनि घुमलौं तँ मनमे आएल जे आब भोँट खसबैले नै जाएब।''

अकचकाइत ललित कहलकनि-

''पाटीबला सभकँ नै कहलिऐ?''

दादी बजली-

''की कहितिऐ। संयोगो नीके बुझहक। अगिला भोँटमे पार्टीक उम्मीदवारे ने ठाढ़ भेल। जान हल्लुक भेल। आन पाटी तँ मारिते रहै मुदा केकरा भोँट दितिऐ आ केकरा नै दितिऐ। तइसँ नीक जे बूथपर जाएबे छोड़ देलिऐ।''

हँ-मे-हँ मिलबैत ललित बाजल-

''केकरो नफ्फा-नोकसान होउ, अहाँ तँ बँचलौं किने?''

ललितक बात सुनि दादीक आँखि नोरा गेलनि। मुहसँ बकारे नै फुटनि। कनीकाल चुप रहि बजली-

''बौआ, पटना दिल्ली तँ कहियो मनोमे ने आएल मुदा गामोमे जहुना छेलौं तहुना नै रहलौं। जइ समाजक लोक 'माए जी' कहै छेलए ओइ समाजमे लोक राँड़ी कहए लगल। ऐ बातक दुख सदिखन मनकँ बेथित केने

रहैए।'' कहि आँखि बन्न कऽ सोचमे डूमि गेली। किछु समए गुम्म रहि पुन: बाजए लगली-

''गामे-गाम तेहेन अगराही लगि गेल छै जे शान्त हएब कठिन अछि। पुबारि गाममे खेतक झगड़ामे मारि भेल। से खूब मारि भेल। दुनू दिस केते गोटेकेँ कान-कपार झड़लै। एकटा खूनो भेलै। मुदा अचरज ई भेल जे एहेन सना-सनी रहितो गौआँमे सुबुधि जगलै। कियो कोट-कचहरी नै गेल। गामेमे फड़िया गेल। अखनि जौं ओना होइत तँ गाम उजरि जाइत। तेहेन-तेहेन मनुख सभ बनि गेल अछि। जे सदतिकाल फोंसरीए तकने घुरैए।''

मुड़ी डोलबैत ललित आगू पुछलकनि-

> ''भोँटक दिन छी दादी। भोँटो खसबैक अछि। मुदा जखनि अहाँ आबि गेलौं तखनि पहिने अहाँक काज सम्हारि देब।''

दादी-

> ''भोँट खसबैले थोड़े मनाही करबह। भिनसरसँ साँझ धरि भोँट खसैए। पाँच बजेमे भोँट खसा लिहऽ।''

''ताबे तक भोँट बँचले रहत?''

''जे लड़ैए, ओकरा एतबो बुत्ता नै छै जे बूथ सम्हारि कऽ राखत। ओना भोटे खसेने की हेतह। देखिते छहक जे कियो बक्से हेरा-फेरी कऽ लइए तँ कियो रिजल्टे बदलि लइए।''

''बेस कहलौं दादी। काका (दादीक बेटा) केतए रहै छथि?''

बेटाक नाओं सुनिते दादीक मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत बजली-

''बौआ, पनरह-बीस बर्खसँ बौआइते-ढहनाइते छेलए। पहिने दिल्ली गेल। ओइठीन काज नै भेलै तब बमै गेल। ओतौ नोकरी नै भेलै। तखनि हारि-थाकि कऽ पाँच बरख पहिने कलकत्ता गेल। मुदा जहिना बमै पाइबलाक छी तहिना कलकत्ता गरीब लोकक छी। ओइठीन एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकानमे नोकरी भऽ गेलै। दरमाहा तँ बेसी नै दइ छै मुदा साइकिल बनबैक सभ लूरि भऽ गेलै। अपने दिगाइरक मिस्त्री छी। अपने बहिनसँ बिआहो कऽ देलकै। सुनै छी जे पुतोहुओ मिस्त्रीआइ करैए। दुनू बेकती एते कमा लइए

जे अपनो गुजर करैए आ घर बनबैले रूपैओ पठा देलक हेन। सएह रूपैआ छी।''

''असकर लेल तँ अहाँकेँ एक्कोटा घरसँ काज चलि जाएत?''

''हँ, से तँ चलि जाएत। मुदा पुरजीमे लिखने अछि, जे आब गामेमे रहब। पुरना जेते मिस्त्री अछि ओ सभ मोटर साइकिलक मिस्त्री भऽ गेल। जहनकि गामे-गाम साइकिलक पथार लगि गेल हेन। तहूमे तेहेन साइकिल अछि जे छह मासक उपरान्ते मिस्त्रीक काज पड़तै।''

ललित पत्नीकेँ कहलक-

''एकबेर आरो चाह बनाउ। दादीक संगे जाएब।''

सुपती-

''घरमे दूध कहाँ अछि। नेबोओ सभटा चोराइए कऽ तोड़ि लइ गेल।''

दादी-

''कनियाँ अहाँकेँ नै बूझल हएत। नइ नेबो अछि तँ नेबोक दूटा पाते दऽ दियौ।''

चाह बनल। एक घोंट चाह पीब ललित दादीकेँ पुछलक-

''दादी केहेन घर बनेबै?''

''बौआ, गिलेबापर जोड़ि तीन नंबर ईंटाक देबालपर सँ एसबेस्टसक छत देबै। कहुना-कहुना तँ बीस-पच्चीस बरख चलबे करत।''

''से तँ बेसीओ चलि सकैए आ सालो भरि नै चलि सकैए।''

''से की?''

''तेहेन सिमटीक घटिया एसबेस्टस बनैए जे पाथरक चोट बरदास करत।''

मुड़ी डोलबैत दादी-

''हँ, से तँ ठीके कहलह।'' कहि गुम्म भऽ गेली। दादीकेँ गुम्म देखि ललित बाजल-

''दादी, जँए अस्सी तँए निनानबे। चदरा तरमे खूब गतगर कऽ

खरहीक छाड़ दऽ देबै। जौं पथरो खसत तँ चदरे ने फुटत, जान तँ बँचत किने। बेसीसँ बेसी देहपर पानि चुअत। सएह ने।''

❍❍

११. अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डूमि गेल रहै मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच्छ हुअ लगल रहए। झामलालकेँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटकीलाल डिबिया बारि चाहक चूल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चूल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइए बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहै जे पनरह दिनसँ राहड़िक दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नै खेने रहए। तइ खातिर रातिमे खाइए काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेलै। बिनु खेनहि पिरहीपर सँ खिसिआ कऽ उठि गेल। माटिएसँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड्डुड़ कऽ झामलाल दोकानपर पहुँच बाजल-

"भुटकी भाय, रतुका सोठियाएल छिअ। खाइक किछु नै रखने छह?"

"अच्छा पहिने अदहा-अदहा कप चाह पीब लिअ। जहिना अहाँ सोठियाएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज की भेटत। बिस्कुट सभमे कोनो लज्जति रहै छै मुदा छाल्ही अछि।"

"चलह हुन्डे दाम कहि दहक?"

"सभटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?"

"पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोटे अदहा-अदही।" अदहा-अदही सुनि भुटकीलाल उछलि कऽ बाजल-

"अदहा किलोसँ बेसीए हएत मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।"

"एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देखि लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रूपैआ ऊपरसँ देबह। खाली भरि दिन संग पूरह।"

"हम तँ पेटबोनियाँ आदमी छी भाय। जेतए पेट भरत तेतए रहब।"

"चौकक खर्च हम देलिअ आ मालिक तूँ भेलह। मुदा पहिने खा

लैह किएक तँ भरि दिन बहऽ पड़तह।''

अदहा-अदहा छाल्हीमे सँ उठा-उठा मुहोँमे दैत आ गप्पो करैत झामलाल पुछलक-

''टटके छाल्ही बूझि पड़ै छह?''

''हँ। कौल्हुके छी।''

''छाल्हीक रस तँ तेसर दिनसँ बनब शुरू होइ छै। मुदा टटकोक अपन रस छै। आइ गामक झंडा गाड़ि देलिअ।''

''से की, से की?'' बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटकीलाल झामलालसँ पुछलक। पानि पीब झामलाल बाजल-

''हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरेसाइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना सालमे पाँच लाख पीटिए दैत हेबै। बान्हल तँ अछि नै। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी जेकर जाल सगरे देशमे छै। एते पहूँच सेहो बनौने छी। जहिना आइ खच्चरपुरबलाक खचरपनी झाँड़ि, मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि, कथा-कुटुमैती सेहो ढाठि देबै। तइले नअ पड़ै आकि छह।''

''ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ अहिना हुअए।'' भुटकीलाल मुड़ी डोलबैत पुष्टि केलक।

चाह पीब झामलाल बाजल-

''भाय, ऐपर सँ जे पानसए नम्बर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जइतए।''

''भाय, पान तँ तेहेन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। वसन्ती नीन छोड़ि कऽ औत। सात बजेसँ पहिने थोड़े औत। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।''

''तोहूँ भारी इस्की छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेबह। जेना-जेना तूँ कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने ऐ दुआरे कहि दइ छिअ जे बिर्ड़ोमे झंडा उड़िया देलिऐ मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त, किने?''

“अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू, एक्के घंटामे चौकक चकचकी देखा दइ छी।”

भुटकीलालक जोश देखि उत्साहित भऽ झामलाल बाजल-

“भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूटा पाइओ देखै छी आ दूटा लोको लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइए-खेनाइएटा तँ जिनगी नै ने छिऐ। फेर दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जनम लेब। तँए जहिना गामक झंडा अकासमे उड़ियाएल तहिना बँचबैले जे करए पड़त, से करब।”

“अच्छा छोड़ू अगिला बात, अखनि की करब से विचारू।”

“तोहीं बाजह?”

“दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मेजरौटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।”

“मेजरौटी की कहलहक?”

“मेजरौटी, एक मैजरौटी गाँजा पिआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबलाक अछि आ तेसर इंग्लिस पिआकक अछि।”

“तीनूमे केते खर्च हेतह?”

“अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहियौ। सभ गप ने कऽ लेब।”

“सभ तँ फूट-फूट बैसत तखनि रतुका बात कहबै केना?”

“मामूली लोक सबहक मेजरौटी छै! कलाकार सबहक छिऐ। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबह तखने चौकक ताल देखि लिहक।”

“किछु कहबहक नै?”

“कहबै आकि मंत्र देबै। दुइएटा मंत्र दइक काज छै। अकासमे झंडा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाक सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दइ छिऐ जे जेतए फड़ियबैक मन होइ फड़िया लिअ हमरा समाजसँ।”

घंटे भरि पछाति चौकक जुआनी आबि गेल। गाँजाक मंचसँ फगुआ शुरू भेल-

“एक दिस खेले कृष्ण कन्हैया, एक दिस राधा जोड़ी हो।” तँ ताड़ीक मंचसँ महराइक धून निकलल-

"किसकी मैया बाघिन जनमे जो रूदल पर फेरे हाथ।"

तेसर मंचसँ अंग्रेजी डान्स शुरू भेल।

सात बजैत-बजैत चौकपर गदमिशान हुअ लगल। रविशंकर चाह पीऐले अबैत रहथि आकि दस लग्गी पाछूएसँ चौकक मस्ती देखलनि। गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ हियासए लगला तँ देखलनि जे सौंसे गामक लोक नाचि-गाबि रहल अछि। मुदा लगले जेना पवनसुत किछु कहि देलकनि। मुस्की दैत भुटकीलालक चाहक दोकानक सोझहे पहुँच भुटकीलालकेँ पुछलखिन-

"भुटकी भाय, बड़ चहल-पहल देखै छिऐ की बात छिऐ?"

"पहिने चाह पीबू ने। गप केतौ पड़ाएल जाइ छै। निचेनसँ चाहो पीबू आ गप्पो सुनू।"

"कनीओ तँ इशारोमे कहऽ।"

"एतबे बूझि लिअ जे खच्चरपुर बलाकेँ मुता-मुता भरेलौं।"

भुटकीलालक बात सुनि रविशंकर अचंभित भऽ गेला जे आखिर बात की छिऐ? तैबीच झामलाल कहए लगलनि-

"भाय, मास दिनक कमाइक फल छी। जड़िएसँ कहि दइ छी। तैंतीसम दिनक गप छी। एक लाख रूपैआक पार्टीक काज करि कऽ आएले रही। बारहसँ ऊपर दिन चढ़ि गेल रहए। कपड़ा खोलि कलपर बाल्टीन-लोटा रखि लताम गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ ऊपर हियासैत रही। तखने हिरदेकाका दछिनबरिया बाधसँ अबैत रहथि। नजरि पड़िते कहलियनि- 'काका, गोड़ लगै छी। बड़ रौद छै, कनी ठंढा लिअ।' जहिना कहलियनि तहिना ओहो लतामेक गाछ लग आबि गेला। लताम देखलाहा आँखि हिरदेकक्काक मुँहक सुरखी देखि मुहसँ निकलल- 'काका, एना हकोपरास किए छी।' सूखल मुँहक मुस्कीआइत कहलनि- 'नै बौआ, नै कोनो। रौदमे सँ एलौंहेँ ने।' कहलियनि, 'दूटा लताम खाउ?' कहलनि, 'नै बौआ, नै खाएब।' कहलियनि, 'दूटा अँगने नेने जाउ।...'

'...अँगनाक नाओं सुनि औटोमेटिक बम जकाँ कखनि छाती फटि गेलनि, से नै बुझलौं। मुदा आँखिसँ टघरैत नोर गालपर चमकए लगलनि। मन गरमाएले रहए। पुछलियनि, 'काका, जहिना परिवारमे भैया, काका, बाबा, होइए तहिना ने समाजोमे होइए। विरान किए बुझै छी। अहाँ सबहक

असिरवादसँ कमाइओक आ दस गोटेकेँ चिन्हैओक लूरि भऽ गेल अछि। बाजू अहाँ किए एते पीड़ित छी जौं उठैबला हएत तँ जरूर...।'

'...नोर पोछैत काका बजला, 'बौआ, देखैएटा ले बूझि पड़ै छिअ जे मनुख छिअ। मुदा से नै, मुइल मनुख छी। अपनो परिवारक रच्छा करै जोकर नै छी। तहन तँ देखा-देखी आँखि तकै छी।'

'...पुछलियनि, 'खुलि कऽ बाजू, काका?' तब कहए लगला, 'बौआ, ऐ जुगमे हम सभ महापापी छी, किएक तँ भगवान पाँचटा बेटी दऽ देलनि। चारिटाक तँ कोनो धरानी खेत बेचि-बेचि पार लगेलौं। सात बीघाक किसान मात्र पनरह कट्ठापर आबि गेल छी। तेहेन हवा-पानि देखै छी जे ओहूसँ पाँचमक पार लगत आकि नै।'

'...हिरदेकक्काक बात सुनि अवाक् भऽ गेलौं। जेना बकारे बन्न भऽ गेल। छाती असथिर करैत पुछलियनि, 'काका, केते खर्च हएत?' कहला, बौआ, गरथाह बात केना बाजब।' आँखिक नोर पौछैत पुन: बजला, 'बौआ, ई पाँचम बेटी तेते दुलारू अछि जे हृदैमे सटल अछि। एक तँ कोरि-पच्छू बेटी, तैपर सँ माएक तेते सिनेही जे सुग्गा जकाँ किछु बाजत। जेठकीकेँ दादीए पोसलकै। कहियो ओकरा कोरा कऽ नै लेलिऐ। जखनि टेल्हुक भेल तखनिसँ संगे मेला-तेला लऽ जाए लगलिऐ। छोटकी बेटी माएक तेहेन दुलारू बेटी अछि जे सएओसँ ऊपरे नाओं रखने छथिन।' बातकेँ बुझैत कहलियनि- 'काका, छोड़ू ई सभ। अपन बहिन बूझि बिआह पार लगा देब। जेहने जेठकी बेटीक परिवार अछि तेहने परिवार भँजियाउ। खर्चक चिन्ता जुनि करब। ई पहिल दिनक गप छी...।'

'...ओना तँ गामे-गाम अतहतह होइते अछि मुदा खच्चरपुर बलाकेँ तँ कोनो सीमे-नांगरि नै छै। ऐ साल पाँचटा बिआहमे अभरल। तेते दोस-महीम भऽ गेल अछि जे एकटा बिआहक खर्च नोत पुराइमे होइए। तइले नै कोनो। दस सेरे नै नितराइ दस सगे नितराइ। पाँचो बिआहमे ओकरा सबहक खच्चरपनी देखिलऐ से एड़ीसँ टिकासन तक नेसि देने अछि। मुदा कोनो बिआहमे कोनो समाज (बरियाती-घरवारी) तँ नै छेलौं तँए आँत-मसोसि कऽ रहि गेलौं। गर चढ़ा खच्चरपुरेमे कथा ठीक केलौं। कक्कोकेँ पसिन भेलनि। लेन-देन तँए भऽ गेल। समए बना ओहू गामक समाज आ अपनो समाजक

बैसार केलौं। बैसारेमे बजलौं, 'अखनि धरिक काज दुनू घरवारीक छेलनि मुदा आब समाजक भऽ गेल। चाहै छी जे आन गाम जकाँ थूका-थूकी बिआहमे नै हुअए। तँए किछु समस्या अछि जैपर अखने विचार विमर्श भऽ जाए-

(१) बिआह पद्धतिक अनुकूल हुअए आकि जयमाला करि कऽ हुअए?

(२) पलाउक चलनि भऽ गेल, से मखानक खीर खाएब आकि पलाउ?

(३) खेला-पीला उत्तर लगले विदा भऽ जाएब आकि आराम करि कऽ?''

'...प्रश्न सुनि चुप्पी पसरल। जहिना चूल्हिमे खोरनासँ जारनि घुसकौल जाइ छै तहिना घुसकेलौं, 'कन्यागत समाजक कन्हापर भार देने छथिन तँए समाज चाहै छथि जे आन-आन गाम जकाँ बरियाती-घरवारीक बीच कोनो तरहक राग-द्वेष नै हुअए। किएक तँ बरियाती घरवारीकेँ निच्चाँ देखबए चाहै छथि आ घरवारी बरियातीकेँ। जइसँ जहिना खेतमे कोनो चीजक बीआ छीटल जाइत अछि, तहिना हम सभ झगड़ाक बीआ समाजमे छीँटि देने छी जे दुखद अछि। नै चाहब जे समाजमे एना हुअए। बिआह सृष्टिक सिरजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ अनुचित। अपने लोकनि जे कहि देब ओइ अनुकूल बिआह हएत। घमरथन शुरू भेल। घमरथनक कारण भेल किछु देखौआ काज आ किछु चोरौआ। मुदा सुमति एलनि, बजला, 'लड़का-लड़कीक बिआह सामाजिक पद्धतिक अनुकूल हुअए। ई भार अहाँपर रहल। जहिना कोनो काजक प्रक्रिया होइ छै तहिना भोजनक प्रक्रियाक अंग आरामो छी। जानल बात अछि जे निअमित भोजनसँ भिन्न भोजन बरियातीमे होइ छै, तँए आराम आरो जरूरी अछि। प्रात:काल नअ बजेमे चाह-पान खा असिरवाद दैत आपस हएब। पलाउ आ खीर खेनिहार दुनू रहता। बाजा-बूजीक बेवस्था घरवारीक। नै चाहब जे रस्ता-बाटमे अनगौआँ सभसँ झंझटि हुअए। मोटा-मोटी यएह बुझू जे सएक धतपत बरियाती रहता, जिनका लेल अहाँ दू-ठाम बेवस्था करब। अहूँ सभ बुझिते

छिऐ आ हमहूँ सभ बुझिते छिऐ। एक भागक जे बरियाती रहता हुनका लेल जहिना भोजनक वृहत् बेवस्था रहतनि तहिना आरामोक हेबाक चाही। ई नै जे मधमन्नी जहल जकाँ मुड़ी-पएर दुनूक पतियानी लगि जाए।' पुछलियनि, 'जखनि दरबज्जापर पहुँचबै तखनि कोन रूपे शुरू करबै?' कहलनि- 'जे सभ भाँग खेनिहार छथि ओ सभ घरेपर भाँग खेता आ रस्ते-बाटमे केतौ झाड़ा-झपटा करता। पएर धोबसँ शुरू करब। एम्हर बरियातीक सनोमान शुरू हएत आ ओम्हर आँगनमे बिआहक प्रक्रिया शुरू हएत। आठ बजे दरबज्जापर पहुँच जाएब। दस बजेमे खुआ-पिआ कऽ आराम करए छोड़ि देबै।' हँसैत सभ निर्णए कऽ लेलनि। विदा भेलौं...।'

'...रस्तामे झगड़ाक जड़ि ताकए लगलौं। एते तँ बिसवास रहबे करए जे जहिना चोर फँसबैले सिपाही घेराबंदी करैए तहिना जाल तँ लगबै पड़त। मन पड़ल दोसक गप। दोस कहने रहथि जे अपना सभ कारोबारी छी, तँए कोट-कचहरीसँ सदति काल बँचैत रहक चाही। नै तँ अनेरे ओझरा जाएब। कारोबार कारोबारे रहि जाएत। मुदा उक्खरिमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर केने काज चलत। तहन तँ जहाँ धरि संभव हएत तहाँ धरि बँचब। अखनो समाजमे कहाँ कियो खुलि कऽ ताड़ी-दारू करै छथि। चोरनुकबा जरूर करै छथि। मुदा की हुनका सभकेँ अपना आँखिमे लाज नै छन्हि? जरूर छन्हि। मुदा जे होउ, जिनगी भरि जहलेमे किए नै रहऽ पड़ए मुदा खच्चरपुरबला सभकेँ सिखाएब जरूर। तेहेन कऽ नांगरि सुरड़बै जे इलाकामे मुँह उठाएब मोसकिल भऽ जेतनि। बेसीसँ बेसी दसटा बदमास गाममे हएत पचासटा आनि कऽ रखि देबै। मुदा सिखेबै जरूर...।'

'...आठ बजे गामक सीमामे बरियाती प्रवेश कऽ गेल। हमहूँ सभ साकांच रही। दरबज्जापर पहुँचिते स्वागतक संग बैसारक कार्यक्रम शुरू भेल। दाइ-माइ बरकेँ अरियाति आँगन लऽ गेली। बरियातीक बीच प्लेटमे फ्राइ कएल मखान पहुँच गेलनि। दुनू समाजक (बरियाती-घरवारी) बीच मखानक मिठासक संग गप-सप्प शुरू भेल। गाममे केते सार्वजनिक स्थल..., कोन-कोन शिक्षण-संस्थान..., अस्पतालक की स्थिति..., गाममे केते किसान परिवार..., केते नोकरीहारा..., जोतसीम जमीन केते..., बोरिंगक संख्या केते..., खेतीसँ अलग कारोबारी परिवार केते..., केते परिवार गामसँ पड़ाइन

कऽ रहला अछि आ केते दोखतरीपर आबि-आबि बैस रहला अछि...। बड़ी जुमा कऽ महावीरजी लंकासँ आम फेकने रहथि से ने तँ खास भेल अछि। मुदा किछु गोटेकेँ भाँगक मातल मनमे उठए लगलनि जे मखानक लाबा आ पानिए पीब भेल। ओ तँ अपने जिनगी भरि पानिएमे रहल अछि तँ तइमे नीक जे दू घोंट बेसीए कऽ पानि पीब लेब। बिना मुंगबे मन थोड़े मानत। पेटेटा भरने नै ने होइ छै, मनो ने भरक चाही। मुदा फेर मनमे उठनि जे अखनि कोनो उसरि गेल...।'

'...अँगनाक ओसारपर बैस हिरदेकाका आँखि खिरा-खिरा ताकथि तँ देखथिन पाँचो बेटीक सिनेह। जेठकी बहिन माएक पीठपर अँगनाक चीज-बौसकेँ उठा-उठा घरमे रखैत तँ घरसँ निकालि आँगनमे रखैत। मझिली तँ चारू बहिनक लेधे-गोधक आइ-पाइमे भिनसरसँ अखनि धरि लागल अछि। सझिलीएकेँ की कहबै, वेचारीकेँ लगले हाथमे नीपौन देखै छी तँ लगले सिनुर-पिठार। चारिमकेँ तँ गीतिहारिएक आगू-पाछू करैत-करैत नाको-दम भेल छै। घुमैत नजरि हिरदेकक्काक बेटी-जमाएपर गेलनि। ओना देखिए कऽ केने रहथि। तँए देखैक ओ रूप नै। देखैक रूप रहनि मौलाएल गाछक पोनगल सरारिमे खिलैत फूलकेँ। हारल मनुखक जीत। जे कहियो कन्यादानकेँ उच्च कोटिक श्रेणीमे गनल जाइ छल ओ आइ समाजमे बेटियाह वंश बूझि बिआहसँ वंचित भऽ रहला अछि। वाह रे हमर समाज...।'

'...हम अपना काजक पाछू तबाह। पच्चीसो काजकर्त्तापर मलेटरीक नजरि। तीन कदम आगू तँ एक कदम पाछू भऽ सावधान। ओना अगुआएल-पछुआएल बरियाती समैपर गाममे प्रवेश कऽ गेल छला मुदा समाज दरबज्जापर जहाँ-तहाँ छिड़ियाएल। दू-चारि मिलि-मिलि अड्डा जमौने। जइ पाछू एक-एक काजकर्त्ता लगल रहए। ताड़ी जकाँ तँ इंग्लीसक गोष्ठी नम्हर नै ने होइए। रंग-बिरंगक पीनिहार रंग-बिरंगक वस्तु।

साढ़े नअ बजे बरियाती भोजन कऽ ओछाइन पकड़ि लेखा-जोखा करए लगला। हराएल-बरियातीक खोज शुरू भेल। साढ़े दस बजे घरवारी बरियातीक बीच समझौता भेल जे जेते समए आगू बढ़ि गेल ओइसँ पछिलाकेँ छोड़ि भोजने हुअए। सएह भेल। मुदा कमाल भऽ गेल। भोजन शुरू भेल, पेशाब करैले उठब शुरू भेल। पेशाब खोलैबला दबाइ पानिमे मिला टीपि-टापि

कऽ दस गोटेकँ पिआ देल गेल। एक गोटेकँ देखि छोड़ि देलौं, दोसरोकँ छोड़ि देलौं। मुदा जहिना चुट्टीक धाड़ी चलैत तहिना अछि! जखनि शुरू भेल आकि बुढ़हा सबहक बीच जा कहलियनि जे अखनि धरि घरबैया समाजसँ कोनो तिरोट भेल हुअए से कहू? एक्के-दुइए पान-सात गोटे उपदेश दैत बजला, 'अखनि जे हवा-बिहाड़ि उठि गेल अछि तइमे अहाँ लोकनिकँ धैनवाद दइ छी। हमहूँ सभ यएह गप करै छेलौं जे गणेशजीक भक्त सभने छेनाक मिठाइ खाइ छथि मुदा ओ तँ अखनि धरि लड्डुए खाइ छथि। जुग बढ़ि गेने लोको उधिया जाएत। जे सुआद खाजा-मुंगबाक अछि ओ डिब्बाबला रसगुल्लाक हएत। ओ तँ भाँज पुराएब छी।' कहलियनि- 'जाधरि अपने लोकनि ऐठाम छी ताधरिक नीक-अधलाक जवाबदेह घरवारी हेता मुदा अहाँ सभ जे उकठ करब, तहन...।' पुछै गेला, 'की भेल, की भेल?' कहलियनि, 'दोसर बरियाती सबहक छिछा-बीछा चलि कऽ देखियनु? बामा करे पड़ि जे जाँघ कुड़ियबैत रहथि से उठले ने होइन। मुदा कासपरक दहीक ढेकार फुर्ती आनि देलकनि। सभ कियो उठि दोसर पंडालमे पहुँचला तँ देखलनि जे एना किए रेलबे स्टेशनक टिकट-खिड़की जकाँ दुनू दिस पाँति लगल अछि। मुदा से दसे-बारहे गोरेकँ देखै छी। खाइ-पीबैक वस्तुमे जौं किछु गड़वड़ी रहितए तँ सहरगंजा होइतै। सेहो ने देखै छी। एक-दोसरासँ आँखि मिला प्रश्न पुछैत तँ मुड़ी डोला जवाब भेटनि। मुदा किछुओ दोख जाबे केकरो नै अछि ताबे एना भऽ किए रहल अछि। आनठाम कहाँ भेल। मुदा बिना आधारे कोनो बात मानिओ लेब से उचित-नै। आमपर फेकल गोला जकाँ जे लगिओ सकैए आ हूसिओ सकैए। इम्हर आराम करैले सेहो मन कछमछाइन। दोहरौलियनि- 'जौं अपने लोकनि समाजक सीमा रेखा तोड़ि घिनबए चाहब तँ समाजोकँ ई अधिकार बनै छै जे सीमाक सिपाही जकाँ अपन मातृभूमिक रच्छा करए।' कबछुआ जकाँ भकभका कऽ तँ लगलनि मुदा घिनबैक कारण बुझबे ने करथि। खिसिआ कऽ एकगोटे बजला- 'कोन-कहाँ बोतल पीब-पीब बरियाती औता आ सभ किछु (समाजिक गुण)कँ खेने-पीने चलि जेता। एक्को क्षण ई सभ जीबए नै देता।' कहि छोटका भाएकँ कहलखिनख, 'बौआ, जिनका जे मन फुड़तनि से करता। अपन इज्जत-आबरू अपना हाथमे लऽ चलह।'' तेकर बाद की भेलै से बुझबै केलिऐ, बस...!'

'....एक्के-दुइए ससरि-ससरि घरमुहाँ हुअ लगला।''

❍❍

१२ अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आँगन बहाड़ि बाढ़निकेँ कलपर धोइ पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलनि। हाथ-पएर धोअल बूझि नजरि फूल तोड़ैपर गेलनि। ओना लालकाकी एहेन निअमित छथि जे जहिना खढ़ लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छथि तहिना दिन भरिक काजोक छन्हि। मुदा मन पाड़ैक जरूरति ऐ लेल रहि जाइ छन्हि जे पद्धुआकाका (पति) गाममे छथि आकि नै? गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइ छन्हि आ नै रहने कमि जाइ छन्हि। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलनि। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उतारि कल दिस बढ़ली। कलक बगलेमे रंजनीगंधापर हाथ दइते छेली आकि नजरि अपराजित दिस बढ़लनि। मेल-पाँच करैक विचार सोचैत रजनीगंधासँ अपराजित दिस बढ़ली। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलनि। आँखि पड़लनि फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देखि विचारलनि जे पाँचटा बेलामे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छेली आकि नजरि पतिपर गेलनि। पतिपर नजरि पड़िते मन दुखाए लगलनि। केकरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कंडीशन गाड़ीमे बैस सराफा बाजार जा हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हार गाड़ामे लटकबितौं। मुदा तेहेन भेला जे जखनि सरकारी दरमाहा भेटए लगलनि आ कहलियनि जे साइकिल कीनि लिअ, सुभितगर हएत तँ कहलनि जे चालीस-पैंतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल, जौं खसि-तसि पड़ब आ टुटत तँ केतबो पलस्तर करब, तैयो ने जुटत। तइसँ नीक पएरे। कहलनि एक मानेमे नीक...। मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ नै उतरलनि। मन गेलनि दोसर दिस। सभटा पोथी बर्खामे भीज-भीजि सड़ि गेलनि, जखनि घरे चुबै छेलनि तखनि जौं सड़िए गेलनि तँ ऐमे अपन साध की? मुदा जखनि घर बनौलनि तखनि किए ने फेर कीनलनि। जइ घरमे पोथी नै रहत ओ घर केहेन हएत। क्रोध कमलनि। क्रोध कमैक कारण भेलनि अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइ बेर धरि केकरा लेल करै छी, परिवारे लेल ने। फेर तामस मुड़ि गेलनि, कहैले आठ घंटा ड्यूटी करै छथि, चारि घंटा बाटेमे लगै छन्हि। अदहा काज जँ सम्हारि कऽ नै रखबनि तँ पारो ने लगतनि। एहेन

पुरुखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैत? फुलडाली रखिते मनमे एलनि, एक विहित काज भऽ गेल। चूल्हि लग बैसैमे अखनो बहुत बाँकी अछि। हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा-ठाँउ कऽ चूल्हि-चिनमार दिस बढ़ली। घर-निप्पा रखि अर्घा-सरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि लालकाकी घड़ी दिस देखलनि। अखनि तक समए आ काजमे तल-वितल नै देखि मनमे खुशी भेलनि। नजरि पतिपर गेलनि। किड़ी आँखिमे पड़ने जहिना करुआ जाइ छै तहिना मन करुआ गेलनि। बुदबुदेली-

"एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू मुहेँ ससरत?"

फेर मनमे एलनि आन दिन जकाँ जारनि सुखाएल नै अछि। भानसमे देरी लागत, से नै तँ पानि चढ़ा चूल्हि पजारि लइ छी। चूल्हि पजरल रहत तँ कनी देरीओ लगने समैपर भऽ जाएत।

वाड़ी पहुँच पतरका जारनि सभ बीछ कऽ चूल्हि लग रखलनि। चूल्हि पजारि वर्तन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चूल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे रखए लगली। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लनि। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बूझि पड़लनि। मनमे एलनि, ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छै। फेर मन पतिपर गेलनि। उमकि कऽ मन कहलकनि, आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दियाह पुरुखक संग जोड़ा लगौलनि। हृदए बिहुँसि गेलनि। 'जइ मर्दकँ आनि नै आ जइ बरदकँ पानि नै', ओ अनेरे गाम घिनबैले किए जीबैए? मन पड़लनि दुरगमनियाँ पिरही। जहिना बाबू सतपुरनि खोधाएल कटहरक पिरही देलनि आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छथि। थारी साँठि लालकाकी पंखा नेने छोटकी पिरहीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैले पढ़ुआकाका दिस देखए लगली। मगन भऽ पढ़ुआकाका भोजन करए लगला। देहांगक सिरखार देखि लालकाकी सिकुड़ि गेली। मुदा भोजन काल जे बजबे ने करता हुनका कहलो की जाए। चुप्पे रहली।

कपड़ा पहिरि पढ़ुआकाका घरसँ निकलिते रहथि आकि आँगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकँ ठाढ़ देखलनि। पत्नीक काज देखि मन मानि गेलनि जे सिपाही जकाँ छथि। मनमे खुशी एलनि। पान खा आगू-आगू पढ़ुआकाका आ पाछू-

पाछू लालकाकी आँगनसँ निकलि डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पद्धुआकाका पुछलकनि-

"किछु कहबोक अछि?"

लालकाकी कहली-

"अपन तनदेही राखू।"

दुनू गोटे दुनू दिस विदा भेलथि। मुस्कीआइत पद्धुआकाका एक डेग आगू बढ़ि पाछू घूमि कऽ देखि डेग तेज करैत आगू बढ़ला। नाकमे सुरसुरी लगलनि। भेलनि जे छिक्का हएत। बामा हाथसँ नाककेँ सहलाबए लगला। मुदा सुरसुरीओ अपन चालि छोड़ैले तैयार नै। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द 'तनदेही'पर गेलनि। पत्नीक मुहसँ निकलल शब्द विशारद पास पद्धुआकाकाकेँ ओझरा देलकनि। फेर घूमि पत्नी दिस तकलनि तँ देखलनि जे सड़कसँ अँगनाक घुमौनक भौकपर पहुँच गेल छेली। तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेली। कोकिलक कंठसँ निकलल शब्दक तरंग पद्धुआकाकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलनि। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चंदन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलनि केतएसँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक उल्लंघन नै केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखनि धरि किछु देलियनि कहाँ। मुदा शब्द तँ शब्द जकाँ अछि। किए ने बजनिहारिएसँ पूछि लियनि। ओहो तँ आन नै अर्द्धांगिनीए छथि। घर-सँ-बाहर धरि बनल रहैले दुनूक सहयोग तँ बरबैरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ आ एक सीमाक भीतर अपने। अपने तँ कमा कऽ बिनु गनले रूपैआ हाथमे दऽ दइ छियनि। मुदा ओइ रूपैआकेँ नचबै तँ वएह छथि। पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छथि...। मुदा जेते दुनू गोटेक भीतर झाँकै छला तेते हटल-हटल बूझि पड़नि। मन बौआ गेलनि जे पति-पत्नीक, पुरुख-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहेन सम्बन्ध हेबाक चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलनि। किए ने दुनू गोटे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलनि। गामक सीमो टपि गेला। विद्यालयक मुरेड़पर नजरि गेलनि। सबूर भेलनि जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंतीस सालक अभ्यास, तँए थकान नै

बूझि पड़नि मुदा...।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जैठाम ओसारपर चपरासी बैसैत तइ सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछूए पढ़ुआकाका रहथि आकि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल, जे कक्को देखै छेलखिन। सीढ़ी लग पहुँच आगू तकलनि जे चपरासी घूमि कऽ अबैए आकि नै। मुदा नै देखि काकामे पौरुख जगलनि। मनमे उठलनि अखनि तँ सेवानिवृत्तो नहियेँ भेलौं हेन, तहन किए अनकर सेवा लइले मुँह ताकब। सीढ़ीसँ ऊपर तँ चढ़ि गेला मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छेलनि आगूसँ घेर लेलकनि। जे -चपरासी- बाबा कहैए, ऑफिसोक सभ भैये-काका कहै छथि मुदा की से कहने शरीरक शक्तिओ घटि-बढ़ि सकैए। जौं से नै तँ परिवारमे किए कहल जाइए। नजरि ठनकलनि, अगर बीस बर्खक आधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उम्रे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए। मन हल्लुक भेलनि। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलनि...।

हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़ुआकाकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतनि। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसरि गेल छल।

स्टाफ रूम पहुँचिते एक नै अनेक तरहक खटका खटकए लगलनि। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार मनकेँ बेसी हौंड़ैत रहनि। कुरसीपर बैसिते मनमे उठलनि। मुदा तह दैत मनसँ हटौलनि। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बूझि पड़नि। किछु व्यंग्य-वाणसँ क्रमकेँ बदलौ चाहथि तँ ओहन बेवहारे नै छेलनि। चालिसँ थाकल रहबे करथि आँखि झल-फलाए लगलनि। गमे-गम नीनो आबि गेलनि। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलनि। आँखि मूनल देखि इशारामे उतरीक चर्चा हुअ लगल। मुदा पढ़ुआकाकाक आँखि बन्न। तँए किछु बुझबे ने करथि।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजेमे ट्रेन तँए स्टाफ सबहक बीच चिलमिलक कुचकुची जकाँ देह-हाथ चुलचुलाए लगलनि। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआकाकाक भक्क टुटलनि। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगला आकि ऑफिसक बड़ाबाबू आबि कऽ पढ़ुआकाकाकेँ कहलकनि-

''अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?''

कहि ऑफिस दिस बढ़ि गेला। ठाढ़े प्रणाम करि कऽ संगीओ सभ निकलि गेलनि। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पद्धुआकाका असकरे कोठरीमे बैसल रहला। बड़ाबाबूक भाषापर नजरि गेलनि। आन दिनक जे बोली रहै छेलनि ओइमे किछु करुआहट बूझि पड़ि रहल अछि। भषे नै अखने की देखलौं? काल्हि धरि सहयोगी सभ अरियाति कऽ पहिने विदा कऽ दइ छला तेकर बादे कियो जाइ छला। नौकरीक एहसास भेलनि। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा -विद्यार्थी- सभसँ की सम्बन्ध छल। एकठीम खेनाइ, एकठीम रहनाइ आ एकठीम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीबाक इच्छा होइ छेलए आ बजै छेलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइ छल। जे पहिने लोटा पकड़ि पानि अनै छल ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझै छल। मुदा आइ की देखै छी। शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैए! केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल। जहिएसँ विद्यालय सरकारीकरण भेल तहिएसँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत विद्यालय छात्र-विहिन भऽ गेल। ओना महिनवारी वेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। मासे-मास नै भेट सालक चुकती सालमे हुअ लगल। अखनि धरि नोकरीकेँ नोकरी नै अपन काज बुझै छेलौं। मुदा आइ बूझि पड़ि रहल अछि जे केतौ बंधनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते ऑफिसक बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पद्धुआकाका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बोही आगू बढ़ा देलकनि। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पति टुटैए तहिना पद्धुआकाकाकेँ नौकरी टूटि रहलनि हेन। हस्ताक्षर करिते पद्धुआकाका हताश भऽ गेला। मनमे उठलनि सभ किछु हरा गेल। जेते पढ़ने छेलौं ओइमे सँ पहिने ओते हराएल जेकर उपयोग नै भेल। जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हरा गेल। की हम ऐठामसँ उठि सोझहे असमसाने जाएब आकि...। प्रश्न ठाढ़ होइत मोन पड़लनि, अपना संग किनको हाथो पकड़ने छियनि किने? दू प्राणीक जिनगी केना चलत?

कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै ओ हमरा बुते कएल हएत। अखनि धरि, जहियासँ सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दइ छला ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दइ छेलियनि। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत। जिनगीक एक्कोटा व्रत निमाहै जोकर नै छी...।

द्वन्द्वमे पड़ल पद्धुआकक्काक छाती दलकए लगलनि। तैबीच चपरासी आबि टोकलकनि-

"कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौ।"

अर्द्धचेत अवस्थामे पद्धुआकाका कोठरीसँ निकलि पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठनि। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओंगठि कऽ बैस गेला। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलनि। जेबीसँ निकालि पढ़ए लगला। सूचना देल जाइत अछि तेसर मासक अंतिम तिथिसँ सेवा-मुक्त होएब। निचला पाँती पढ़ौ ने लगला, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेला। मुदा जहिना नदीक किनछड़िक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछू पएर करैत रहैए तहिना पद्धुओकक्काक पएर आगू-पाछू हुअ लगलनि। मनक लहरिसँ पएर तनेलनि। आगू बढ़ए लगला। विद्यालयक फाटक लग पहुँच पाछू घूमि तकलनि तँ बूझि पड़लनि जे जेना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहनि। फुरेलनि, जहन जीबैक सभ रस्ता बन्न भऽ रहल अछि तहन मरैओक तँ ढेरी उपए अछि। मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत। जीबैले अपराध करि कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैए मुदा मृत्यु लेल अपराध...।

बीच रस्तापर आबि क्रोधक लहरिमे आरो ओझरा गेला। मुदा मनमे हूबा जगलनि। फुरेलनि, जहन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइए देलक तहन एक्केटा उपए अछि जे जिनकर हाथ पकड़ि भार नेने छियनि तिनका लग पहुँच कहियनि जे अखने दुनू परानी हरिद्वारक रस्ता धरू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मंदिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सूनब आ अपनो नचारी कहबनि। डमरूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचबो करब। तखने एकटा छुछुनरि दहिना भागसँ बामा भाग

छूछूआइत टपैत रहए। आकि भक्क टुटलनि। ताबे छुछुनरि ससरि कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलनि जे छुछुनरि पएरमे काटि लेलक। झूकि कऽ तर्जनीक नहसँ टोबए लगला। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलनि। मन मानि गेलनि जे छुछुनरि काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलनि। काजक बेर रहने सभ छिड़ियाएल रहए। रस्ता खाली। विद्यालय दिस तकलनि। सभ चलि गेल छला। मनमे एलनि छुछुनरिक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलनि। मुदा लगले मन बदलि गेलनि। अपन बीख अपना बुते कहाँ झड़ै छै, तँ की ऐठाम पएर पटकि कऽ मरि जाएब आकि जेतए मनतरिया भेटत ओतए जाँच करा लेब। ताधरि अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे... दु... एक...।
मंत्रकेँ चारि चरणमे बाँटि, एक चरण पढ़ि मुहसँ फुकि देथि। अबैत-अबैत गामक सीमापर पहुँच गेला।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढुआकाका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लालकाकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहनि। किसाने परिवार देखि लालकाकीक पिता कुटुमैती केलनि। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू परानीक हृदए जुड़ा गेल रहनि जे लक्ष्मीक संग सरस्वतीओ छन्हि।

जहिना एकटा सीमा टपने एशिया-यूरोपक दू तरहक सभ किछु भेटैत, तहिना पढुआकाकाकेँ सीमापर अबिते बूझि पड़लनि। सौनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकनि। पानि जकाँ बुधि पसरि गेलनि। जीवित छी आकि मुइल से होशे ने रहलनि। थुस दऽ बैस रहला। मन पड़लनि अकाजक हएब। दुनियाँ तँ काज करैबलाक छी। की मृत्यु शय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक होइत, सेहो नहियेँ हएत। जिनगीमे कहियो जइ हाथसँ घूस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा व्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि। मन राँइ-बाँइ भऽ फटि गेलनि। पहाड़क झड़नासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बोहि गेलनि। हृदए पसीज गेलनि। मन पड़लनि अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे वृत्ति अछि ओइसँ हटल रखैमे केकर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छेलियनि। जौं से केने रहितौं तँ जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं।

दू मिलि करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलियनि। अपनो एते होश नै केलौं जे सए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत। शेष जिनगी केना चलत? अपनो ने छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं। निराश मनमे सासुर मन पड़लनि। बिआहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहा लेल रूसैए। मुदा सासु मन पड़िते मन मधुआ गेलनि। जौं लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ केतए करत? मन आरो पिघलि गेलनि। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छथि। मुदा फेर मनमे उठलनि जे रूसबो तँ केते रंगक होइए। बचकानी आ सिआनी रूसब, एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलनि जे सिआनी रूसबसँ शुरू करब आ जेते निच्चाँ धरि सुतरि जाएत तेते निच्चाँ धरि आबि अँटकि जाएब। फुड़फुड़ा कऽ उठि घर दिस विदा भेला। चारू भर चकोना होइत रहथि जे कियो देखए नै। मुदा से सुतरलनि। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हरि कऽ बजला-

> “ई घर मनुखक रहैबला छी! एम्हर मकड़ाक झोल लटकल अछि तँ ओम्हर बिढ़नी छत्ता लगौने अछि।”

कहि रूसि कऽ सिरहौनीपर मुड़ी रखि आँखि तकिते सुति रहला। वाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देखि नेने रहनि। हँसुआ-खुरपी वाड़ीएमे छोड़ि आँगन दिस बढ़ली तँ किछु अवाज सुनि पड़लनि मुदा नीक नहाँति नै बूझि सकली। ओना लोकक दुआरे पढ़ुओकाका मुँह दाबिए कऽ, बजैत रहथि। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजला-

> “एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाड़ि करैबला...।”

पढ़ुआकक्काक बात लालकाकी बूझि गेलखिन जे केतौ किछु भेलनि हेन। दू बीघा हटल अवाजमे लालकाकी बजली-

> “एलौं।”

‘एलौं’ सुनि पढ़ुआकाकाकेँ सबूर भेलनि। लालकाकी मने-मन सोचै

छेली जे पुरुखक लटारम्भ की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी बौस कऽ शान्त कऽ देबनि। माल-जाल अबैक बेर अछि। करजानमे उपद्रव करत। सएह केलनि।

पत्नीक अवाज सुनि पद्धुआकाकाकेँ छाती दहलि गेलनि। नांगड़ि सुररि कऽ विद्यालय घर धरौलक। केतौ के ने रहलौं। मन गरमेलनि। बमकि कऽ बजला-

> ''काल्हिए विद्यालय जा लिखि कऽ दऽ देबै जे आइएसँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हुअए तँ मनिआर्डर कऽ रूपैआ पठा दिअ, नै तँ नै पठबऽ।''

जेना माटि पानिमे मिलि भऽ जाइत तहिना लगले मन थलथला गेलनि। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि। विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बूझि रहलौं हेन। आकि अर्थशास्त्र पढ़बाक अभाव रहल?

पद्धुआकक्काक लगमे आबि लालकाकी पुछलकनि-

''चूड़ा भूजि नोन-तेल-मरीच मिला कऽ रखने छी, नेने आएब?''

पत्नीक बात सुनि पद्धुआकक्काक मन मचकी जकाँ झूलए लगलनि। मुदा आससँ दोसर दिस भऽ गेलनि। खिसिआ कऽ बजला-

''हूँ। चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा।''

मुस्की दैत लालकाकी उत्तर देलखिन-

''हमरे छी, अहाँक नै छी?''

पत्नीक बात सुनि मन सिहरि गेलनि। बेरुका सुरूजक रौद जकाँ पद्धुआकक्काक गरमी कमलनि। बजला-

''एकटा गप कहए चाहै छी?''

''भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखनि हाथ धूराएल अछि। हाथ-पएर धोने अबै छी तखनि अंडी तेलसँ घुट्ठीओ ससारि देब आ गिरहो फोड़ि

देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदति काल कहैत रहै छी जे मोटरगाड़ी लऽ लिअ। आरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सूनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहरिक गप छी।''

लालकाकीक गप सुनि पढ़ुआकक्काक मन आगिमे पकैत भट्टा जकाँ असुआ गेलनि। लजबीजी जकाँ दुनू पिपनी सटि गेलनि। कल पड़ल रोगी जकाँ लालकाकी बूझि सहटि कऽ निकलि ठोकले वाड़ी पहुँच गेली।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआकाका बिसरि गेला। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलनि। किसानक बेटी लालकाकीकेँ खेतीक सोलहो आना लूरि। अन्नक खेती बटाइ लगा लेने छथि, पाँच कट्ठा चौमास आ गाछीक सेवा टहल अपने करै छथि। दूटा गाएओ पोसियाँ लगौने छथि, जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइ छन्हि। पक्का घर बना सभ बेवस्थो केने छथि।

हँसुआ, खुरपी, कोदारि आँगनमे रखि लालकाकी झाड़ू लऽ कऽ अँगना बहारि, कलपर पएर-हाथ धोइ पानि पीबिते रहथि आकि मन पड़लनि पतिक रूसब। फेर मन पड़लनि अपन जिनगी। जाधरि माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोटेक इच्छा सदति काल यएह रहनि जे धिया-पुता कखनो कानए नै। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बूढ़ी (सासु) सदति काल कहैत रहै छेली जे कनियाँ अँगनाक मालिक स्त्रीगणे होइ छथि। तँए आँगनमे, बिआहक मड़बा जकाँ सतरंगा फूल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नै जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकेँ अपन दुख बूझि सती धर्मक पालन करैत एली-सावित्री, दमयन्ती। करुआ कऽ किछु कहब उचित नै। तैबीच दरबज्जा परहक अवाज सुनलनि। ''हे भगवान, जानह तूँ।''

मने-मन पढ़ुआकाका अपने सम्बन्धमे सोचैत रहथि। आमोक गाछी तेहेन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहियेँ। गोटे साल मोजरबे ने करैए, तँ गोटे साल बिजलौकेमे मोजर जरि जाइए। गोटे साल बिहाड़िएमे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहेन दबाइ रहैए जे मोजरेकेँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत, तइमे जीब सकै छी, बाँकी...?

दरबज्जापर लालकाकीकेँ अबिते पद्धुआकक्काक टुटल मन कलपि उठलनि। गोरथारीमे बैस लालकाकी कहलखिन-

"पएर सोझ करू।"

लालकाकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पनसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पद्धुआकक्काक बोल निकललनि-

"पएर नै टटाइए, हृदैक बेथा छी।"

पतिक बात सुनि फरकि कऽ चौकीपर सँ उठि लालकाकी मधुआएल स्वरमे बजली-

"साँचे स्त्रीगण सबहक मुहेँ सुनै छी जे पुरुख नंगरकट होइ छथि। कुत्ता जकाँ सदति काल नांगरि टेढ़े रहै छन्हि।"

"जे बुझी।"

"तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुर जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिआ कऽ बँसबीट्टीमे फेक औत।"

"चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझहे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोटेक एक्के वृत्त करैए, तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।"

पद्धुआकक्काक बेथा सुनि लालकाकीक मन कानि उठलनि। जाधरि ओछाइनोपर पड़ल रहता ताधरि... सत्ती साध्वी तँ...।

चौकीपर बैसिते पद्धुआकाका आँखि-मे-आँखि मिला कहलखिन-

"सभ अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनौल जिनगीक अदहा भाग अहाँ छी।"

'अहाँ छी।' बजिते पद्धुआकाकाकेँ मन पड़लनि छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन-

"भारी भूल भेल जे आहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्रायश्चित अहाँ मुहेँ सूनब।"

अवसर पाबि लालकाकी पूछि देलखिन-

"अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी केते दिन जीब? जेते दिन जीब ओते दिन केहेन जिनगी जीब? राजा-दैविक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब? अखनि दुनू परानी जीबै छी, मुदा ईहो तँ भऽ सकैए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।"

पत्नीक बात सुनि उछलि कऽ चौकीपर सँ ठाढ़ होइत पद्मआकाका बजला-

"नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जौं अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रच्छा कऽ सकैए तहन तँ...।"

❍❍

१३. ऑपरेशन

पत्नीक बढ़ैत बिमारी देखि चेतानन्द डाक्टर ऐठाम जाइले रूपैआक ओरियान करए लगला। अपना हाथमे तीनेटा पचसटकही। कम-सँ-कम तँ पाँचो हजार चाही। जहिना गारामे उतरी नेने लोक घराड़ी लिखैले रजिष्ट्री ऑफिस जाइत तहिना चेतानन्द चौमासपर रूपैआ उठा पत्नीकेँ संग नेने डाक्टर ऐठाम पहुँचला। ओना पत्नी-सुनियाकेँ गैस्टिकक शिकाइत चारि-पाँच बर्खसँ छन्हि जे मुदा आनो सभ जकाँ एकटा-दूटा गोटी खा-खा रोगकेँ दबने रहथि। जाँच-पड़ताल केलापर डाक्टर बूझि गेलखिन जे सात दिनक अभ्यन्तरे दुनियाँ छोड़ि देती। मुदा जखनि कियो मृत्युक बाट पकड़ैए तखने डाक्टर ऐठाम जाइत अछि। बोल-भरोस दैत चेतानन्दकेँ डाक्टर कहलखिन-

"हिनका आँतमे पत्थलगोला भऽ गेल छन्हि, ऑपरेशन करए पड़त। मुदा शरीर तेते अब्बल भऽ गेल छन्हि जे ऑपरेशन करैसँ पहिने पाँच-छह दिन दबाइ खुआबए पड़त। देहमे खून बनतनि तखनि ऑपरेशन आसान हएत।" कहि दबाइक पुरजी बना देलखिन। भाड़ाक कोठलीमे पहुँच पत्नीकेँ चौकीपर सुता, दुनू बच्चा मांगनि आ बिलटीकेँ पत्नीक लगमे बैसा चेतानन्द बाजार विदा भेला। पहिने दबाइक दोकानपर पहुँच दबाइ कीनि फूट-पाथेक दोकानमे रोटी-तरकारी कीनि डेरा एला। डेरा आबि समान रखि कलपर सँ पानि अनलनि। दबाइ खुआ दुनू बच्चाक संग अपनो खाए लगला। खाइक मन नै होइन। कंठसँ निच्चाँ धँसबे ने करनि। मुदा पानि पीब-पीब खाए लगला। मन कहनि जौं अदहो पेट खाएब नै तँ दिन-राति दौग-बरहा केना कएल हएत? जी-जाँति तरकारीक संग तीनटा रोटी खाए दू गिलास पानि पीलनि। पानि पीब चेतानन्द बिलटीकेँ पानि पिआ पानिक हाथे मुँह पोछि देलखिन। मांगनि अपने हाथे मुँह धोइ उठि कऽ ठाढ़ भेल। थारी उठा अचौनामे धोइ कोनमे रखलनि। पड़ल-पड़ल सुनिया सभ किछु देखै छेली। पतिक मनमे मन सटि थारी धोइत अपन रूप देखलनि। जहिना ऐनामे अपन चेहरा लोक देखैए तहिना सुनिया देखए लगली। दुनू भाए-बहिनकेँ पाँजर लगा सुतबैत सुनिया पतिकेँ कहलनि-

"अहूँक देह-हाथ बथैत हएत, पड़ि रहू।"

बात बदलैत चेतानन्द बजला-

"मन केहेन बूझि पड़ैए।"

"अखनि की कहब।"

बिनु बात दोहरौने चेतानन्द जाजीम बिछा निच्चेमे पड़ि रहला। बिलटीक देहपर हाथ सहलबैत सुनिया कहलखिन-

"डाक्टरे साहैब जकाँ बुच्चीकेँ डाँक्टरी पढ़ाएब। जखनि बुच्ची डाक्टरी पढ़ि लेत तखनि अहिना कुरसी-टेबुल लगा कऽ काज करत। किने बुच्ची?"

"नै। खजुरिया दीदी जहाइन हमरो बिआह कऽ दे?" -तीन बर्खक बिलटी बाजल।

बेटीक मुहेँ बिआहक बात सुनि सुनिया हरा गेल। मनमे उठलनि घूमि कऽ घर जाएब तहन ने। बिमारी छूटत की नै, से के कहलक। दिन-राति तँ निच्चे मुहेँ भेल जाइ छी। खेनाइओ-पीनाइ छुटले जाइए। विचार बदललनि- जौं मरि जाएब तँ बेटीक बिआह केना हएत। की बिलटी बिलैटिए जाएत? जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरो बिआह हएब भारी भऽ गेल छै। ई तँ सहजे मइटुग्गर भऽ जाएत। मइटुग्गर बेटीकेँ कियो अपना घर लैयो जाइले तैयार हएत आकि नै। हे भगवान, एहेन युगमे बेटी किए देलह? जौं देबे केलह तँ ऐ बेटीक कोन दोख भेल जे मइटुग्गर भऽ दुनियाँक नजरिमे खसल रहत। यएह ने भानस-भात करैक लूरि नै हेतै। की मनुख माटि सदृश छी जे एकबेर आगिमे पकलापर अपन स्वरूप बदलि दैत अछि? मनुख तँ ओहन होइए जे अनाड़ीसँ जीवनी, भोगीसँ जोगी आ डाकूसँ साधू बनि जाइत अछि। की विधाता हमरा कपारमे यएह लिखलनि जे संगीक संग छोड़ि असकरे वोनमे बौआइले छोड़ि दियनि। जौं सएह लिखैक छेलनि तँ एक उमरिया देखि किए ने जोड़ा लगौलनि? तैबीच आँतमे दर्द उठलनि। चिचिआ कऽ बजली-

"हौ बाप, आब नै बँचब।"

खालीए सिमटीपर जाजीम बिछा, कपड़ाक मोटरी मुड़ीतर रखि उतान करे बत्र दुनू आँखिकेँ बामा बाहिसँ झाँपि चेतानन्द पड़ल। मनमे उठलनि। अखनि सीमाक सिपाही जकाँ ड्यूटीमे छी। ड्यूटीमे आराम कहाँ होइ छै?

आरामो तँ केते रंगक होइए। ओहनो अराम होइए जे निन्नसँ प्रेम करैए आ एहनो होइए जे अपन दुख निवारणक बाट जोहैए। फेर भेलनि भरिसक पत्नी नै बँचती। दुनू गोटेक बीचक अंतिम समए गुजरि रहल अछि। अंतिम समैपर नजरि पड़िते भेलनि जे लड़का-लड़कीक माने बर-कन्याक बिआह स्थापित करैमे उमेरक मानदंड किएक बनौल जाइत? जौं सन्ताने लेल होइत तँ उम्रक लगीचक कोन प्रयोजन? पनरह बर्खसँ पचास बर्खक सुविधा अछि। उम्रक बरबरि तँ ऐ लेल मानल गेल अछि किने जे दीर्घ जिनगी संग-संग चलैत रहए। तहन एना किए भेल? विद्यार्थी जीवनमे सपना देखै छेलौं जे मातृभूमिक सेवा करब। तँए नोकरी नै केलौं। नोकरी केतए करितौं? जैठाम जनम भेल अछि ओइठाम ने शिक्षण संस्थान अछि, ने कल-कारखाना, ने सरकारी कार्यालय आ ने अस्पताल। की ऐठाम ऐ सबहक जरूरति नै छै? की हमसभ शपथ खेने छी जे अपना माटि-पानि परहक कारखानाक वस्तुक उपयोग नै करब, आकि शासनमे सहयोग नै करब, आकि शिक्षा-स्वास्थक लाभ नै लेब। मुदा अखनि धरि ऐसँ आगू बुझैक ने अवसर भेटल आ ने करैक जमीन। देश-सेवा की? यएह ने जे अपनो देशकेँ एक्कैसम शताब्दीक दुनियाँक कतारमे ठाढ़ करी। मुदा कतार तँ एकसँ लऽ कऽ सए तकक होइए। तइमे केते? एक दिस दुनियाँक गनल-चुनल धनवान तँ दोसर दिस सड़कपर भीख मंगनिहारक संख्या ओते अछि जेते कताक देशक जनसंख्या नै छै। तैकाल पत्नी मन पड़लनि। जहिना अन्हार रातिमे माएक पाँजर लग सूतल बच्चाकेँ निन्न टुटिते उठि कऽ माएक सूतल मुँह देखि पुन: गर लगा कऽ सुति रहैत तहिना चेतानन्द पत्नीक मूनल आँखि देखि पुन: ओछाइनपर आबि पड़ि रहला।

ओछाइनपर पड़िते चेतानन्दकेँ मन पड़लनि कौलेजक ओ दिन जइ दिन सरस्वती पूजा स्थलपर सुनियासँ पहिल भेँट भेलनि। मुदा लगले मनमे आबि गेलनि कौलेजक डिग्री आ पी.एच.डीक रजिष्ट्रेशन। पाँच बरख भऽ गेल मुदा एक्को अक्षर अखनि धरि लिखि नै पेलौं। लिखिओ केना पबितौं? अखनि धरि तँ यएह ने बूझि पेलौं जे देश सेवा की? मुदा आब तँ सहजे पत्नीक भार कपारपर पड़ने बच्चाक तँ माएओ हुअ पड़त। दोबर भार पड़त। बच्चाकेँ पढ़ाएब आकि अपने पढ़ब। कौलेज छोड़ला पछातिसँ अखनि धरि 'गृहसूत्रो'

धुरझाड़ पढ़ल आ ने सीखल भेल। 'धर्मसूत्र' तँ पछुआएले अछि। खाली मंगलाचरण रटि नेने नै ने हएत। विधातोक अजीब खेल छन्हि। जहिना गणेशजी मुसो आ बाघोकेँ नांगरि पकड़ि लड़बै छथि तहिना विधातो रंग-बिरंगक जगहपर रंग-बिरंगक बानरक नाच, मदारी जकाँ ठाढ़ केने छथि। एक दिस हार-पाँजर टुटल मनुखकेँ अपन देहक सोनित दऽ कियो देशसेवा करैत तँ दोसर दिस एक लबनी ताड़ी पिआ देशभक्त बनैत। कियो श्मशानमे अपन बेटाक लहास जरबैत जिनगी देखैत तँ दोसर सजल-धजल विशाल भवनमे बैस मस्तीक जिनगीमे पलड़ैए। तैबीच सुनियाक बाजब सुनलनि-

"हौ बाप, आब नै बँचव।"

सुनिते हृदए चहकि गेलनि। मनकेँ थीर करैत आगूक बात सुनैले कान पाथि देलनि। मुदा आगूक बात नै सुनि मनमे उठलनि, जहिना मिझेबैकाल डिबिया भुक दऽ जोरसँ बड़ि जाइए, तहिना तँ ने भऽ गेल। मन गुन-धुनमे पड़ि गेलनि। एक मन कहनि जे जौं पराण छूटि गेल होन्हि तखनि की करब? दोसर मन कहनि जे पराण नै छुटल हेतनि तखनि की करब? ऐठाम तँ चारिए गोरे छी। तहूमे दूटा बच्चे अछि। जौं एक्कोरत्ती आँखिसँ नोर बहत तँ बच्चा सभ अनेरे चिचियाए लगत। गाममे तँ नै छी जे समाजक लोक आबि कऽ मदति करत। मुदा ई जानि लेब तँ जरूरी अछि किने जे पराण छूटि गेलनि आकि बँचल छन्हि। ओछाइनपर सँ चेतानन्द पुछलखिन-

"एना किए बजलौं?"

पतिक बात सुनि सुनिया उत्तर देलकनि-

"दर्दक धक्का लगि गेल छेलए मुदा अखनि असथिर भऽ गेल।"

साँझक आठ बजे डाक्टर साहैब क्लिनिकसँ आबि सोझहे वाथरूम विदा भेला। साँझू पहर टहलए नै जाइत। स्पष्ट विचार रहनि जे टहलब तँ हुनकर छियनि जे अपना पएरे चलै छथि। गाड़ी-सवारीमे बैस टहलब मन बहलाएब छी। जाधरि वाथ रूमसँ निकलला ताधरि पत्नी टेबुल सजा, चौकीदार जकाँ केवाड़क परदा लग ठाढ़ छेली। कुरसीपर बैस डाक्टर साहैब रस-पानि कऽ आराम कुरसीपर बैस गेला। मन फुहराम हुअ लगलनि। टेबुल

सम्हारि पत्नी चलि गेलखिन। भरि दिनक हिसाब जोड़ए लगला। नापल रोगी, नापल फीस, तँए जोड़ैमे देरी नै लगलनि। आमदनीक हिसाब जोड़ि काजपर नजरि दौड़ौलनि। काजक ऊपर होइत मन छिछलैत सुनियापर आबि अँटकि गेलनि। मुदा लगले काज हरा गेलनि। मन उड़ि कऽ अपनेपर चलि एलनि। अपनापर अबिते खुशीसँ मन ठहाका मारलकनि। अँइ, कहू जे आठ घंटा ड्यूटीक निअम अछि, तैठाम बारह घंटा खटै छी तहन किए लोक बजैए जे फल्लाँ डाक्टर दरमहे उठबैटा लेल अस्पताल जाइ छथि। यएह ने जे खानगी रोगी देखै छी। जाधरि अस्पतालक समुचित बेवस्था नै हएत ताधरि डाक्टरे की करता? जैठाम अखनि धरि रोगोक गिनती (पहचान) सेरिया कऽ नै भेल अछि तैठाम रोगीक हिसाब जोड़ब औगताइमे बाजब हएत। फेर मन घूमि सुनियापर पहुँच गेलनि। आइ धरि एक्कोटा रोगी इलाजक बीच मरल नै मुदा...। आखिर कमी की अछि? जे दोख लगत? मन नचलनि। गंजीए-लूंगी पहिरने चेतानन्दक कोठरी विदा भेला।

सोगमे डुमल चेतानन्दकेँ पुछलखिन-

''कहाली जगले छथि आकि सूतल?''

डाक्टर साहैबक बात सुनि देह-हाथ समटि सुनिया बाजलि-

''जगले छी डाक्टर साहैब।''

सुनियेँक चौकीपर बैस डाक्टर साहैब पुछलखिन-

''केते दिनसँ दुखित छी?''

''ठीक-ठीक तँ नै कहि सकै छी मुदा पान-छह बर्खसँ पेटमे गैस बनए लगल। गामेमे बहुतो गोटेकेँ ई रोग छन्हि। वएह सभ दबाइ बता देलनि। एकटा-दूटा गोटी सभ दिन खाइ छी, नीके रहै छी।''

नजरि दौगबैत डाक्टर पुछलखिन-

''उपासो करै छी?''

''केना नै करब! अहीपर तँ आंग-समांग, वाड़ी-फुलवाड़ी लहराइए।''

''मासमे केतेक दिन सहै छी?''

''सात दिनमे रवि, मंगलवारी, शुक्रवारी तँ करिते छी। एकर बादो

पावनिक उपास सेहो करिते छी!''

''देहक काट-खोंट करए पड़त तखनि ऑपरेशन हएत।''

''दोसर उपए नै छै। अपरेशनक कोनो ठेकान नै छै, बाल-बच्चा बिलटि जाएत।''

''हँ, उपए छै। दबाइ लिखि दइ छी। साँझ-परात खाइत रहलासँ नीके रहब।''

''बड़बढ़ियाँ।''

चौकीपर सँ डाक्टर उठि चेतानन्दकेँ बाँहि पकड़ि कोठरीसँ निकलि ओसारपर कहलखिन-

''आँतमे एहेन गोला बनि गेल छन्हि जे बिना कटने नै हेतनि। तहूमे रोग बढ़ैत-बढ़ैत एते जुआ गेलनि जे देहक कोनो लज्जतिए नै रहलनि। अंग-अंग बैस गेलनि। तीनसँ चारि दिनक जिनगी बँचल छन्हि। नीक हएत अहाँ भोरे गाम चलि जाउ। ऐठाम पहपटिमे पड़ि जाएब। बाजारमे सभ सुविधा रहितो कियो केकरो बेरपर ठाढ़ नै होइ छै।'' कहि डाक्टर साहैब घरमुहाँ भेला। कोठरी आबि चेतानन्द पत्नीकेँ कहलखिन-

''डाक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलनि।''

''बड़बढ़ियाँ। भोरे विदा भऽ जाएब।''

चेतानन्दक नजरि सुनियाक परोछ भेलापर गेलनि। मनमे उठलनि माएक मृत्यु बेटा-बेटीकेँ कलंकक मोटरी कपारपर देने जाइ छै। जौं से नै तँ मइटुग्गरकेँ ओछ-आँखिए किए देखल जाइए। पत्नीक मृत्युपरान्त जौं परिवार ठाढ़ करैले दोसर बिआह करब तँ आरो पहपटि बढ़त। कियो एहेन कहनिहार नै हएत जे भूखल बच्चाकेँ खाइले कहि बूझत जे बच्चा भूखल अछि आकि खेने। मुदा ई जरूर कहतै जे सतमाए खाइले दइ छथुन आकि नै। रंग-बिरंगक अबलट जोड़ब शुरू कऽ देत।

❍❍

१४. धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस साल पछाति धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेला जइसँ निकलब कठिन भऽ गेलनि। सुसम्पन्न परिवारमे जनम भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव धर्मनाथकेँ नै भेल छेलनि। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघ-सँ-पैघ काज उपस्थित भेने निपटि जाइन। लोप होइत जमीन्दारी बेवस्था, ढेरो सम्पति गाम-सँ-बाहर धरि रहनि। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलनि। मंदिर, स्कूल, खेत, पोखरि सभ बँटा गेलनि। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठाँस तरे भेटलनि। रघुनाथकेँ चारि कन्या तीन पुत्र। दू कन्याक बिआह साझीएमे भेल छेलनि। बाँकी दुनू कन्याक बिआहमे आठ बीघा खेत बिकलनि। घरक वर्तन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लगि गेलनि। तैयो पहुलका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुके भेलनि।

बच्चेसँ घर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलनि। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखनि धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ परिवारक भविस, मात्र अनुमानसँ करथि। अखनि धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बितल। जहिना गंगामे सुरूजक प्रकाश पड़लासँ चमकैए तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पष्ट झलकै छल।

आरम्भमे कम वेतन, छोट परिवार धर्मनाथकेँ रहनि। आस्ते-आस्ते धर्मनाथक परिवारो बढ़लनि आ वेतनो। पाछू-पाछू महगीओ पछुऔलकनि। बासी बँचए ने कुत्ता खाए। मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन। परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने जे वेतनक भीतरे चलैत। मुदा संगी-साथीक बीच पैंच-पालट चलैत। कर्ज लेब आ सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझथि। हुनक सदिखन प्रयास रहनि जे परिवार मेहनती बनए। पत्नी समैक उपयोग निअमबद्ध भऽ करनि। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-बस्तरपर विशेष धियान राखथि। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सुइया-डोराक

छोट-छीन काज अपने कऽ लइ छेली। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-कलापसँ प्रभावित छल।

सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गामेमे सपरिवार बितबै छला। छुट्टीए मासक वेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबै छला। रघुनाथ मने-मन सोचै छला जे गामक अज-गज देखि धर्मनाथकेँ होइत हेतनि जे कोनो वस्तुक कमी नै मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन अछि। जेते खेत बिकाइ छेलनि ओते उपजो कमिते जाइ छेलनि।

नम्हर-नम्हर घर। जेकर मरम्मति आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइ छेलनि। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अंडीक गाछ सौंसे घरमे जनमल। जौं टुटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेचि लितथि तैयो केते काज ससरि जैतनि मुदा जौं घरक पजेबा बिकाएत तँ बाँकीए की रहत। घरक आगू झील जकाँ पोखरि। पोखरिक चारू महारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनौल। पुरान भेने चारू घाट टूटि गेल छल, जइसँ नहाइओ जोकर नै रहल छल। पजेबा गुड़कि-गुड़कि निच्चाँ पानिमे छिड़िआ गेल। पएरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइए छोड़ि देलक। सौंसे पोखरि समाढ़ आ कुम्ही तेना वोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल। बीघा भरिक फुलवाड़ी, जइमे सएओ रंगक फूल लगौल छल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करै छल जे अखनि गाए-महिंसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मनमे विचारि आएल रहथि जे जेठ बेटीक बिआह करब। बेटी आशा बी.ए. आनर्सक परीक्षा देने छलि। कन्यादान माए-बाप लेल ओहने होइत जेहने बेटा लेल वृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बरख आशा टपि गेल छलि तँए बिआह करब आवश्यक छेलै। मने-मन धर्मनाथ सोचै छला जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जइ सम्बन्धमे किछु ने बुझै छी। केना हएत? की करब? कनिका कहबनि? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल रहनि। हमहूँ तँ समाजमे केकरो कोनो उपकार नै केलिऐ तँए कियो हमरे किए करत? गुनधुन करैत कोठरीसँ निकलि, असकरे टहलबो करथि आ सोचबो करथि। गामक बेरोजगार युवक सभ, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देखि कियो साइकिलपर चढ़ि तँ कियो मोटर

साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिरि केश फहरबैत, बामा हाथे रुमाल साइकिलक हेण्डिलपर पकड़ि, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटै छल। ओना धर्मनाथ मुड़ी निच्चाँ केने चलथि मुदा अफसरक आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथमे कोनो करुआहटि नै अबैत। जे प्रतिष्ठाकँ मिसिओ डगमगबितनि नै। मने-मन यएह होइन जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु छी जे ने केकरो देने होइ छै आ ने केकरो लेने जाइते छै। ओ अपने केने होइ छै आ अपने केने जाइ छै।

गाम एला धर्मनाथकँ सात दिन भऽ गेलनि। मुदा अखनि धरि बिआहक कोनो चरचो नै भेल। आठम दिन धर्मनाथ आशाक बिआहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगला जे अखनि धरि जेहेन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एते पढ़ल-लिखल बर भेटब मोसकिल अछि। जौं भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नै रहत। धर्मनाथ केते खर्च करता से कहबे ने केलनि। पुछबनि केना? हमरो तँ पोतीए छी। बोल-भरोस दइक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकँ जानकारी दैत भँजियबैले कहलखिन। जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचार बदलि देलकनि। जखनि पहुलका सुख-भोग मन पड़ै छेलनि तखनि आँखिसँ नोर टघड़ए लगै छेलनि। मुदा पछतेनहि की हेतनि। चिड़िया तँ चुकि गेल। जेतबो दिन मृत्युक शेष छन्हि ओहो केते निच्चाँ ढड़कतनि सेहो ठीक नै। सिरिफ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़काक भाँज लगलनि मुदा कुल-मूल दब।

जमा केलहा आ बिआह लेल खर्च मिला धर्मनाथ एक लाख रूपैआ लऽ आएल छला। परिवारक खर्च पुरौलापर जेतेक बँचैत ओ जौं जिनगीओ भरि जमा कएल जाए तैयो आइक युगमे एकटा बेटीक बिआह पार लगब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बूझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहनि। इमान आ चरित्रकँ बँचबैत धर्मनाथ ऊपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसा आसानीसँ आँफिसक काज निपटा लइ छला। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फुड़बे ने करनि। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैत जे कियो मदति

करैबला छथि आकि नै! एकाएक धर्मनाथकेँ पच्चीस-तीस साल पहुलका बात मन पड़लनि। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ सामाजिक लोक सेहो छथि, गुरुओ छथि, दू साल पढ़ेनौं छथि, हुनका जा कऽ कहियनि। हमरासँ तँ कहियो हुनका मुहाँ-ठुट्ठी नै भेलनि मुदा पिताजीसँ बक्क-झक्क कहियो काल जरूर होइते रहै छन्हि।

सायंकाल धर्मनाथ राधाकेँ कहलखिन-

"काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जौं काकाजी -प्रोफेसर रामरतन- भेँट भऽ जेता तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।"

एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहली। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकै छेलनि, जे देखि राधाक नजरि चन्द्रमुखी आशापर गेलनि, जे अखनि धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छलि। अनासुरती कमी बूझि पड़ए लगलनि। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैए आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइए, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बूझि पड़ए लगलनि। मने-मन सोचए लगली। यएह छी आजुक समाज। जे बेटी समाजक बूझल जाइए वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दैत। गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहली। राधाक खसल मन देखि आशा पुछलकनि-

"माए, मन किए एते खसल छौ?"

अपनाकेँ छिपबैत राधा बजली-

"नै- नै- कहाँ- क...।"

राधा अपन बेथाकेँ छिपबए लगली मुदा मलिन मुँह आ बोलक ध्वनि बेथाकेँ अढ़े-अढ़ निकालै छल।

प्रोफेसर रामरतनक दरबज्जा सुन्न देखि धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगला जे भरिसक नै छथि। मुदा बिना भाँज लगौने घुमबो उचित नै। असगरे धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनक दुआरपर ठाढ़ भेल रहला। थोड़े काल

पछाति तीन-चारि गोटेकेँ अबैत देख, बोली अकानैत धर्मनाथक हृदैमे आशा जगलनि। एक गोटेक हाथमे दूधक लोटा रहए। प्रोफेसर रामरतनकेँ देखिते जेना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सुरूज हवाक सिहकीसँ छँटि जाइ छै आ भुक दऽ सुरूज देखि पड़ै छै तहिना धर्मनाथकेँ भेलनि। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकेँ गोड़ लगलनि। धर्मनाथकेँ असीरवाद दैत बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसबैत अपने हाथ-पएर धोइले कलपर गेला। पत्नी चित्रलेखा लालटेन नेसि आँगनसँ नेने एली। चित्रलेखाकेँ देखि धर्मनाथ गोड़ लगलनि। असिरवाद दैत चित्रलेखा बजली-

"भगवान, एक-सँ-एक्कैस करथि। बौआ, अखनि केतए छी?"

"चाची, छी तँ बड़ दूर। जनिते हेबै केरल।"

"परिवार आनन्दसँ रहै छथि किने?"

"हँ, अपने लोकनिक दयासँ सभ आनन्द अछि।"

"बच्चा?"

"तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।"

"आशा बिआह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ?"

"अपनो सएह विचार अछि। तखनि तँ...।"

"भगवान थोड़े अधला करता। जे मनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकेँ देथुन।"

चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलनि जे नोरक बून बनि निकलए चाहै छल। मुदा धर्मनाथ हाथसँ आँखि पोछि नोर सुखौलनि। मुदा बोली फुटिते धर्मनाथक हृदैक बेथा निकलए लगलनि। एकाएक धर्मनाथक मनमे एलनि जे एते पैघ पदपर रहनिहारकेँ जौं आँखिसँ नोर खसै छै जे देशक सभसँ पैघ बूझल जाइए। तँ खुशीसँ के रहैत हएत। ताबे प्रोफेसर रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पएर धोइ खराम पटपटबैत दरबज्जापर एला।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा एली। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगला। प्रोफेसर रामरतन चाहक चुस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पुछलखिन।

कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा बिआहक चर्च केलनि।

प्रोफेसर रामरतन कहलखिन-

“केकर बाँकी रहलैए जे अहाँक नै हएत।”

“चाचाजी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज छी तँए अगम-अथाह बूझि पड़ैए।”

मुड़ी डोलबैत रामरतन बजला-

> “हँ, ठीके कहलौं। अहाँ हमर समाजे नै छात्रो छी तँए अहाँक बेटी की हमर बेटी नै?”

प्रोफेसर रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक हृदैमे आशाक अँकुड़ उदित होअए लगलनि। जहिना धारामे भँसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइ छै तहिना धर्मनाथोकेँ भेलनि। पच्चीस-तीस बरख पहुलका रूप प्रोफेसर रामरतनक धर्मनाथक हृदैमे ओहिना नाचए लगलनि। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल छला, जैठामसँ आगूक रस्ता की हएत से बुझबे ने करथि। अपन बेथा बेक्त करैत धर्मनाथ कहलखिन-

“दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी बिआहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीति गेल।”

“सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत आ समैपर चलिओ जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखनि धरि जमीनदार खनदानमे रहलौं, जेकर पतन भऽ गेल। सिरिफ ओकर ढाँचा ठाढ़ छै। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़ब बुधियारी होएत।”

“अपनेक ऊपर बिआहक भार दए रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।”

“दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जेकरे चलैत अहाँक पिताजीक संग मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहियो कोनो अधला केलौं, शायद मन नै अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!”

जोशमे बजैत प्रोफेसर रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेला।

अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रोफेसर रामरतन ऐठाम एली। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहथि आकि प्रोफेसर रामरतनकेँ जोरसँ बजैत

सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगली। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू एली। दरबज्जा लग चारू गोटेकेँ देखि प्रोफेसर रामरतन पुछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते प्रोफेसर रामरतन उठि कऽ चारू गोटेकेँ आँगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन-

"जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबनि?"

चारू गोटेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलनि।

प्रोफेसर रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"जहिना आशा बिआहक चिन्तासँ हृदए थरथराइ छल तहिना चाचाजीक आश्वासनसँ मन हल्लुक भऽ गेल। ओ सभ भार लऽ लेलनि।"

हँसैत राधा कहलखिन-

"निर्बलकेँ बल राम होइ छै। नीकक फल कखनो अधला नै होइ छै। थोड़े काल लेल सामाजिक परिवेशमे भाइओ जाइ छै मुदा ओकर परवाह मनुखकेँ नै करैक चाही।"

प्रोफेसर रामरतन दीनानाथसँ बिआहक सम्बन्धमे सभ बात केलनि। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नै मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घराड़ीओ नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भऽ गामेमे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मैकेनिक। आशा आ श्यामक बीच बिना दहेजक बिआह पक्का भऽ गेल।

बिआहसँ पहिने समाचार पसरि गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलनि जे एकाएक अचेत भऽ गेला। होश होइते सोचए लगला। एक दिस प्रोफेसर रामरतनक अगुआइमे बिआह होएत जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे धर्मनाथ फेक रहल अछि। ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"जइ आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं, सभ पानिमे चलि गेल।"

पत्नी पुछलकनि-

“किए एते करुआएल छी?”

“बोली करुआएल अछि? होइए जे लोढ़ीसँ कपार फोड़ि मरि जाइ।”

“एना बताह जकाँ किए बजै छी?”

“हम बताह नै छी, करेजमे चोट लगल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बूझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नै रहब। चलू, कल्हिए दुनू परानी काशी। ओत्तै रहब। बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक। तखनि जीविए कऽ...।”

बड़ीटा दुनियाँ छै, नै हरिअर गाछ भेटत तँ सूखलो गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।”

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलनि, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेली। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलनि। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत रहला। बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगला। रघुनाथक कानब सुनि चारू कातसँ लोक दौगल आएल। डाक्टर बजौल गेल। जाँचि कऽ डाँक्टर कहलखिन-

“दिमागक नस फटि गेलनि। अखने लहेरियासरए लऽ जैयनु।”

गाममे हल्ला भऽ गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेला। जनिजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लगि गेलनि। नवकी कन्या सभ बाजए लगली-

“बाबाकेँ चुड़ीन लगि गेलनि...।”

धिया-पुता सभ थपड़ी बजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत-

“बाबा मुइला पुड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।”

○○

१५. सरोजनी

मझोलका किसान भेलोपर जमीन्दारीक ठाठ-बाठ आ रूआब अखनो हरदेवकेँ छन्हिए। वएह हथिसार सन-सन घर, बीघा भरिक फुलवाड़ी, घरक आगूमे झील सन पोखरि जेकरा चारू महारमे मेड़हौल घाट। कलम-गाछीक कमी नै। सभ रंगक आम फुटा-फुटा लगौने। सरही फुटे, कलमी फुटे। एक भागमे सभ रंगक इलची पाँच कट्ठामे। आसामक वोन जकाँ बँसबारि जइमे हजारो बाँस सूखल। शीशोक गाछक डारि सभ मोटा-मोटा गाछे जकाँ भऽ गेल। लताम, बेल, धात्री, सपाटू, शरीफा, आँता, कटहर, बरहर इत्यादिक बगीचा सेहो छन्हिए। सालो भरि कोनो-ने-कोनो फल गाछमे लुबधले रहै छन्हि। अनेको रंगक देशी-विदेशी केराक करजान। दोसराक खेतमे पएर नै देब, एहेन रूआब हरदेवक बाबाक अमलदारीमे रहनि। बनसी खेलै दुआरे पोखरिक बीचो-बीचो पुल जकाँ सेहो बनौने।

जमीन्दारी टुटलोपर बाहरसँ तँ नै बूझि पड़ैत मुदा भीतरे-भीतर फोक भऽ गेल छन्हि। महाजनी चलि गेलनि। बखारी टूटि गेलनि, नोकर-चाकर नै रहलनि, मुदा मनमे अखनो ओ टेंढ़ी छन्हिए। पाँच भाँइक भैयारीमे सभ किछु बँटा गेल। अपन समांग सभ तँ अधिक पढ़ल-लिखल नै मुदा पढ़ल-लिखल नोकर रखि सभ कारोबार चलबैत रहथि। एते दिन झाँपि-तोपि निमहलनि। मुदा आब ने दोसर रूआब मानैले तैयार आ ने अपना दम जे दोसरपर रूआब करब।

बच्चेसँ हरदेव बाबाक संग कोट-कचहरी अबैत-जाइत रहला। तइ क्रममे कानून-कायदा, लड़ाइ-झगड़ाक भाँज बुझने छला। घरोपर हरदेव निअमित क्रिया-कलाप बनौने छला। भोरे उठि दतमनि आ कुड़ा-आचमनि कऽ भरि छाँक पानि पीब, पान खा, लोटा लऽ मैदान दिस जाइ छल। घंटो भरि सिनुरिया आमक गाछक निच्चाँमे लोटा रखि सौंसे गाछी टहलि-बूलि देखै छला। पाकल फल तोड़ि-तोड़ि गमछामे बान्हि घुमै काल घरपर नेने अबै छल। सभ दिन टटका फल खेने दुनू परानीक शरीर बुलन्द रहनि। चारिटा गाए पोसने छला। गाए तँ देहातीए छेलै मुदा नम्हर कदक। एकवर्णा कारी। डेढ़ियापर बाहैत-बिआइत तँए सभ दिन दूधक लाट रहबे करनि। सभ दिन

बेरू पहर असेरी गिलाससँ दू गिलास दूधमे भाँग घोड़ि पीब हरदेव बनसी खेलए जाइ छला। बीच पोखरिमे चौखुट बनसी खेलैले जे बनौने रहथि ओइपर जा कुरता निकालि रखै छला। पानक सभ सामान सेहो नेने जाइ छला। एयर कंडीशन जकाँ जलहवा तहूमे झूलैत झिझड़ीदार परदा जकाँ भाँगक निशाँ हरदेवक हृदैकेँ झूलबैत रहै छल। हरिअर-हरिअर कुमही हवाक सिहकीक संग जलक सवारीपर सपरिवार सवार भऽ रसे-रसे पोखरिमे टहलै छल। बहुत पहिने हरदेवक पिता पोखरिभिंडासँ ललका कमल आ बेरमा बड़की पोखरिसँ उजड़ा कमलक गाछ आनि लगौने रहथि। दुनू रंगक कमलक शोभा देखैमे अद्भुत लगै छल। आनन्दक समुद्रमे असकरे हरदेव सभ दिन मगन भऽ झूमैत रहै छला। छोटकी माछ सभ बनसी बोर निचेनसँ खा लैत। लूक-झूक गोसाँइ होइते हरदेव बनसी समेटि रखि घुमि कऽ घर अबै छला। घरपर आबि चाह पीब टहलैले निकलि जाइ छला। बच्चेसँ घुरन हरदेव ऐठाम नोकरी करै छल। साते-आठ सालक जखनि रहए, बाप मरि गेलै। बपटुग्गर घुरन माएक संग नम्हर जिनगी जीबैले दुखक पहाड़सँ संघर्ष करए लगल। जखनि घुरन छँटगर भेल, बिआह-दुरागमन भेलै तखनि पाँच रूपैआ मासक नोकरी छोड़ि बोनियाती काज हरदेव ऐठाम करए लगल। घुरन आ हरदेव एकतुरिया। हरदेव सुखक बीच आ घुरन दुखक बीच जिनगी बितबै छल। एकतुरिया रहने दुनूमे घनिष्ठ प्रेम। एकठीम रहने घुरनपर हरदेवक असीम विश्वास सेहो रहनि। जौं कहियो हरदेव केतौ बाहर जाइ छला तँ घुरनेपर खेती-वाड़ीक भार दऽ जाइ छला। घुरनक घरवाली सोमनी हरदेवक अँगनाक काज, वर्तन-बासन धोनाइसँ लऽ कऽ पानि भरनाइ चूल्हि-चिनमार निपनाइ सभ करै छेली, जइसँ खेनाइ-पीनाइ चलि जाइ छेलनि। बेटा रमेश माएक संग हरदेवक आँगनमे खाइ-खेलाइ छेलए। सरोजनी आ रमेश कहियो अटकन-मटकन खेलए तँ कहियो चोरा-नुक्की।

गामेमे स्कूल रहने रमेशक नाओं घुरन लिखा देलक। सरोजनी सेहो स्कूल जाए लगल। पढ़ैमे रमेश चन्सगर। हरदेवक परिवारसँ लाट रहने रमेशक गरीबी छिपल। रमेश दू बरख सरोजनीसँ जेठ। बच्चेसँ रमेश रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। कियो रमेशकेँ बाल-ग्रह कहै छेलै तँ कियो पछुआ लागब कहै छेलै। घुरन आ सोमनी केते गहवर रमेशकेँ लऽ लऽ गेल मुदा रोग नै

छुटलै। दिनानुदिन रोग बढ़िते गेलै। अंतमे निराश भऽ घुरन सोने वैदसँ रमेशक इलाज करौलक। साते दिनमे बिमारी छूटि गेलै। मुदा रमेशक शरीर खिदखिदाहे रहल।

परसूए माघक पूर्णिमा। गंगा नहाइले गामक मरद-स्त्रीगण उमड़ल। सुशीला सेहो पति हरदेवकेँ चलैले कहलकनि। दुनू परानी हरदेव गंगा-नहाइले रतुके गाड़ीसँ सिमरिया विदा भेला। हरदेव अँगनाक भार सोमनीकेँ आ माल-जाल भार घुरनकेँ दऽ गेला। सिरिफ सरोजनीएटा रहल। सोमनीकेँ सरोजनी चाची कहैत।

चारि साल पहिने गामक स्कूलसँ निकलि सरोजनी आ रमेश हाइस्कूलमे पढ़ै छल। संगे दुनू गोटे स्कूल अबैत जाइत छल। रमेश आ सरोजनी ओसारक चौकीपर बैस पढ़ै-लिखैक गप-सप्प करै छेली। सोमनी आँगन बहारि बाढ़नि रखिते छेली आकि सरोजनी पुछलकनि-

"चाची, अगिला मासमे मैट्रिकक परीक्षा हेतै। मैट्रिक पछाति रमेशकेँ पढ़ेबै की नै?"

सोमनीक मनक आशापर गरीबीक चद्दरि झँपने छलि। सोमनी ठाढ़ भऽ एकटक सरोजनीकेँ देखि बजली-

> "बुच्ची कहलौं तँ बड़ नीक बात। कोन माए-बापकेँ बेटा-बेटीक पढ़बैक मनोरथ नै होइ छै मुदा खरचा जुमतै? गरीब लोक कोनो लोक होइए। सभ मनोरथ संगे जाइ छै।"

सोमनीक बात सुनि सरोजनीक मुँहक हँसी बिला गेल। कनीकाल चुप भऽ बाजल-

> "कहलौं तँ ठीके चाची। हमहीं अखनि बाप-माएक ऐठाम छी, सुख करै छी। जौं हमरे गरीब घरमे बिआह हुअए तँ अखुनका सुख रहत।"

"जेकरा जे भाग-तकदीरमे लिखल रहै छै से होइते छै। रमेशक भागे खराप छै तँ सुख केतएसँ औत।"

"चाची, गाममे तँ नोकरी नहियेँ हेतै, तब तँ बाहरे जाए पड़तै?"

“कियो चिन्हारेकेँ संग लगा दिल्ली पठा देबै। कोठीमे कोनो काज भइए जेतै।”

“रमेश दिल्लीमे नोकरी करत। अहाँ दुनू परानी ऐठाम रहब। बड़-बिमारीमे केकरा के देखबै?”

“जेकरा जे दुख आकि सुख लिखल रहै छै से आन थोड़े बाँटि लइ छै।”

सरोजनीक नजरिमे आशाक किरिण चमकि रहल अछि जहनकि सोमनी निराशाक पहाड़ तर दबाएल अछि। बच्चेसँ जुड़ल सिनेहकेँ जेना वीणाक ध्वनिकेँ हथौरीक चोट भग्न कऽ दइ छै तहिना सरोजनीक स्वरकेँ सोमनीक अवाज ध्वस्त कऽ देलक।

पाँचतारा होटलमे डेरा। जहाजसँ देश-विदेशक एनाइ-गेनाइ। नीक नोकरीक संग नीक दरमहो। तैपर सँ चोरा-नुका कऽ दोहरी धंधो। ऐश-मौजक जिनगी जीबैत, पुष्ट गोर शरीर हृदयनारायणक। ने घरक चिन्ता ने परिवारक बोझ। होटलक मालिक अंग्रेज, जिनका दुइ गोट कन्या। दुनूकेँ एक-एक होटल दऽ अपन भार हटौने। अपने अंग्रेज साहैब दुनू बापूत लोहाक कारखाना चलबैत। होटल चलौनिहारि रोजी। जखनि हृदयनारायणकेँ होटलमे अबैत रोजी देखै तँ आँखि गड़ा एकटकसँ निच्चाँ-ऊपर निहारैत रहए। कोठरीमे गेलापर अनेरे जा-जा रोजी हृदयनारायणकेँ पुछैत-

“कोनो वस्तुक दिक्कत तँ नै अछि?”

बी.ए.पास रोजी। बीस बर्खसँ ऊपरे उमेर। सोनहुल केश, भुल्ल गोर। छरहरा शरीर, फुर्तीसँ छट-छट करैत।

हृदयनारायण क्लबक सदस्य सेहो रहथि। मन-माफित मनोरंजन करथि। वसन्तक बहार छोड़ि पतझड़क अनुभूतिसँ अनभुआर भऽ गेल हृदयनारायण। देहाती जिनगीसँ गुजरल हृदयनारायण छल-प्रपंचसँ कोसो दूर छला। ड्यूटीसँ आबि कपड़ा बदलि स्नान-जलखै कऽ, सोफापर लेटि अगिला जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। बिआह करब, परिवार बनाएब। हृदयनारायणक कोठरीमे प्रवेश कऽ रोजी कुरसीपर बैसैत बाजलि-

''चिन्ताक पहाड़क तरमे किए दबल छी?''

सूखल मुस्की दैत हृदयनारायण उत्तर देलक-

''थाकल छी।''

रोजीक मुस्की भरल मधुर स्वर हृदयनारायणक हृदैमे चुभए लगल। प्रेमक अँकुड़ अँकुड़ित हुअ लगल। चिन्ताकेँ दबबैत हृदयनारायण मुस्कीअए लगला। रिंग कऽ रोजी नोकरकेँ कौफी आनैक आदेश देलक। नोकर कौफी-सिगरेट-सलाइ नेने आएल। जखने हृदयनारायण कौफीक चुस्की लऽ कप रखलक आकि रोजी कप-सँ-कप भिरा पीबए लागलि। कप रखि रोजी दूटा सिगरेट सुनगौलक। एकटा हृदयनारायणकेँ हाथमे दऽ दोसर अपने कौफीक संगे पीबए लागलि। पाँच साल पहिने रोजी बी.ए. पास केने छलि। पसिनगर संगी नै भेटने अखनि धरि अविवाहिते छलि। बिना हिचककेँ रोजी हृदयनारायणसँ पुछलक-

''बिआह भऽ गेल अछि?''

''नै। परिवारमे माता-पिता छथि।''

''अखनि धरि बिआह किएक ने केलौं?''

''नोकरीसँ पहिने सोचैत रही जे जाधरि अपना पएरपर ठाढ़ नै भऽ जाएब ताधरि बिआह नै करब।''

''तीन सालसँ तँ नोकरीओ करै छी?''

''वएह सोचि रहल छी।''

हृदयनारायणक हृदैक आँखि रोजीकेँ देखए लगल। औगता कऽ उठि रोजी हँसैत चलि गेलि। हृदयनारायणकेँ आरो गप्प करैक इच्छा छल जे अखनि नै भऽ सकलनि। गामक पछुआएल जिनगीकेँ शहरक अगुआएल जिनगीमे बदलैक विचार हृदयनारायणक मनमे एलनि। मुदा गंगाजल ताबे धरि गंजाजल रहैए जाबे धरि गंगा नदीक बीच रहैए मुदा वएह अथाह समुद्रमे मिललापर बदलि जाइए। ऐ द्वन्द्वमे हृदयनारायण पड़ल-पड़ल सिरमापर माथ दऽ कछमछ करए लगला।

दस बजे रातिक घंटी घड़ीमे टनटनाएल। बाहरक गँहिकीक आएब बन्न भऽ गेल। मुख्य दरवाजामे ताला लगि गेल। रोजी सिगरेटक डिब्बा, सलाइ आ

ह्विस्कीक बोतल नेने हृदयनारायणक कोठरीमे पहुँच गेलि। दूटा गिलासमे ह्विस्कीक बोतलक मुन्ना खोलि ढारलक। एकटा गिलास हृदयनारायणक आगूमे बढ़ा दोसरमे अपने पीबए लागलि। दू-दू गिलास दुनू गोटे पीब सिगरेट पीबए लगल। सिगरेटक धुआँ रोजी दिस उड़बैत हृदयनारायण पुछलखिन-

"हमर परिचए तँ बुझलौं अपन कहू?"

मुस्कीआइत रोजी बाजलि-

"दू गोट होटल दुनू बहिनकेँ पिताजी देने छथि। अपने पिताजी आ भाय लोहाक मिल चलबै छथि।"

"अखनि धरि अहाँ बिआह किए ने केलौं?"

"मनगर जोड़ीक अभावमे।"

"केते दिन प्रतीक्षा करब?"

"बरिसो-बरिस, अखनो।"

"की मतलब?"

"जौं अहाँ हँ कहि दी तँ लगले भऽ जाएत।"

"पितासँ बिना पुछने?"

"अपन पसिनक उपरान्त हुनका कहि देबनि।"

"जाउ हम तैयार छी, हुनकासँ पूछि लियनु।"

दोसर श्रेणीमे सरोजनी आ रमेश मैट्रिक पास भेल। नीक विद्यार्थी रहितो रमेश कम अंक पौलक। उत्साह आ लगने एहेन जे रमेश पढ़ि सकल। सरोजनी वय:संधिक सीमा पार करैत किशोरीक सीमामे प्रवेश करैत रहए। लज्जाक आगमन भऽ गेलै। किशोरीक विशेषता सरोजनीकेँ अंग-प्रत्यंगसँ हुलकी देमए लगलै। अपन रिजल्टक जानकारी रमेश हरदेवकेँ देमए पहुँचल। ओना सरोजनी पिताकेँ पहिने कहि देने छल।

हरदेव दलानक कुरसीपर ओंगठि कऽ बैस सरोजनीक बिआहक सम्बन्धमे आँखि मूनि सोचैत रहथि। मैट्रिक पास बेटीले बी.ए. पास बर चाही। घरो अपनासँ दब नै होअए। समए एहेन भऽ गेल जे खर्चक कोनो हिसाब नै रहत। जमीन्दारी चलि गेल मुदा ठाठ-बाठ तँ वएह अछि।

बेटाक रिजल्ट सुनि घुरन हँसैत आबि हरदेवकेँ पुछलकनि-

"मालिक एना मन्हुआएल किए छी?"

आँखि खोलैत हरदेव बजला-

“नै-नै, मन्हुआएल कहाँ छी। सरोजनीक सम्बन्धमे सोचै छेलौं। तोरो रमेश तँ बिआह करै जोगर भऽ गेलह।”

“मालिक बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बाप लेल करजे छी। देहक कोन ठेकान तँए जौं भऽ जाएत तँ ऐबेर कऽ लेब।”

दछिनबरिया घरमे पलंगपर पड़ल सरोजनी अपन भविस दिस तकै छलि। भैया कलकत्तासँ गाम नहियेँ औता। माए-बाबू रसे-रसे बुढ़े होइत जेता। दुनू गोटेकेँ बुढ़ाड़ीमे के सेवा करतनि? अछैते बेटा-बेटी दुख हेतनि। रमेश गुरु जकाँ पढ़बैए। माए-बाप नोकर जकाँ सेवा करैए। दुनू गोटेक - रमेश आ सरोजनीक- बीच धन आ जातिक अन्तर अछि। राजा दशरथोकेँ स्त्री तीन जातिक छेलथि। अधर्म कहाँ भेलनि। जिनगी हँसैत शान्तिसँ चलए, यएह तँ सबहक इच्छा होइ छै। रमेश दिल्ली-बम्बइ जा कोठी आकि मिलमे नोकरी करत। आइ धरिक जे सिनेह रहल ओ टूटि जाएत।

हरदेवकेँ गोड़ लागि रिजल्टक जानकारी दैत रमेश आँगन गेल। सरोजनी घरसँ निकलि आबि रमेशकेँ पुछलक-

“कौलेजमे नाओं लिखाएब आकि नै?”

“पढ़ैक इच्छा तँ अछि मुदा...।”

भगवतीक रूप जकाँ आँखि निआरने सरोजनी कहलक-

“रमेश, हम निश्चय कऽ लेलौं जे अहींसँ बिआह करब। तखने दुनू परिवारक कल्याण होएत।”

सरोजनीक बात सुनि रमेशक करेज डरसँ काँपए लगल। आँखिमे डर सन्हिया गेलै। मुदा सरोजनी बजिते रहल-

“दुनू गोटे एम.ए. तक पढ़ि, गामेमे हाइस्कूल बना शिक्षक बनब।”

कँपैत हृदैसँ रमेश पुछलक-

“पिताजी विरोध करता, तखनि?”

“अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझैबनि। पुतोहु इसाइ भेलनि से बड़ बढ़ियाँ। अखनि धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैए, नांगटकेँ वस्त्र नै दऽ सकैए, बेघरकेँ घर नै बना सकैए, मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैए, लुटैत इज्जतकेँ बचा नै

सकैए, ओइ समाजकेँ विरोध करैक कोन अधिकार छै?''

''सभ रहलाक बादो समाजमे मिलि कऽ रहब आवश्यक होइ छै।''

''हँ होइ छै। जे समाज अछि ओ हमरा अहाँ छोड़ि कऽ नै अछि। जे समाज हमरा विचारकेँ महत नै देत ओहो अपन विचार थोपि नै सकैए। तँए समाज सोचऽ जे हमर कल्याण केना होएत।''

सरस्वतीक फोटोमे पहिरौल फूलक माला धरसँ उतारि सरोजनी रमेशक गरदनिमे पहिरा देलक।

❍❍

१६. सुभद्रा

सुरूजक किरिण अन्हारकेँ धकलैत, संघर्ष करैत, पाछू मुहेँ ठेलि रहल अछि। जीव-जन्तुक गाढ़ निन्न पतराए लगल अछि। चिड़ै-चुनमुन्नी प्रभात बेलाक धूनमे मस्त। गाए-महिंस घर-सँ-बाहर होइले डिरयाइत। एकाएक कमलनाथक ऐठाम कन्नारोहट शुरू भऽ गेल। गाएकेँ डोरी पकड़ि रविया बाहर करै छल आकि सुनलक। कानब सुनि रविया अकानए लगल आकि गाएक डोरी हाथसँ छूटि गेलै। गाए पड़ा गेल। गाए पकड़ैले रविया पाछू-पाछू दौगबो करए आ कानबो अकानए। बेहटवाली कलपर पानि भरैले अबै छेली आकि गाए हुरपेट देलकनि। रस्ताक किनछेरिमे बनल खाधिमे गिर पड़ली। चोट तँ कम्मे लगलनि मुदा सड़ल थाल-पानि सौंसे देह लागि गेलनि। चुट्टीक धाड़ी जकाँ लोक कमलनाथक ऐठाम जाए लगल।

एक तँ ब्लड-पेसरक रोगी दोसर दुखद समाचार सुनि कमलनाथ दलानक ओसारपर अचेत पड़ल। बेधरक गिरने कमलनाथक अगिला दुनू दाँत टूटि गेलनि जइसँ खून बहए लगलनि। जिज्ञासा केनिहार हुनके मृत्यु बूझि आँखिसँ नोरो बहाबए आ नाक लग आँगुर दऽ, छातीपर हाथ दऽ, परेखबो करए। छातीक धुकधुकी आ साँस ठीके रहनि। मोतीहारी अस्पतालमे डाक्टर चन्द्रकान्त कार्यरत रहथि, ओहो गाम आएल। चन्द्रकान्त अबिते कमलनाथकेँ देखि बीअनि हौंकैले कहि, बेटीकेँ कहलखिन-

"बौआ, कनी बैग नेने आबह?" बेटी दौगल आँगन गेली। टेबुलपर रखल बैग लऽ दौगल आएल। आला निकालि चन्द्रकान्त जाँच कऽ, एकटा सुइया लगा देलकनि। दसे मिनट पछाति कमलनाथ होशमे एला। होशमे अबिते कानि-कानि बाजए लगला-

"अन्याय भऽ गेल, जुलुम भऽ गेल। बाप-रे-बाप, एहेन विपति केकरो नै दिहक। हे भगवान हमरा कोन सन्ताप देखैले रखने छह।" बजैत-बजैत फेर बेहोश भऽ गेला। आँगनमे कमलनाथक पत्नी सुनयना कपार पटकि-पटकि फोड़ि अचेत भऽ ओंघराएल। एक्के-दुइए आँगनसँ दरबज्जा धरि लोकक करमान लगि गेल। दछिनबरिया घरमे सुभद्रा बताहि जकाँ ओंघरनिया दइ छेली।

अगहनक बिआह-पंचमी दिन सुभद्राक बिआह इंजीनियर बरक संग भेल। दू भाँइक बीच एकटा बेटी रहने कमलनाथ हृदए खोलि बिआहमे खर्च केने छला। आगू पढ़ैले जमाए अमेरिका जाइत रहथि। हवाइ जहाज दुर्घटना भऽ गेल। यात्रीसँ चालक धरि कियो ने बँचल। वएह खबरि टेलीफोनसँ चारि बजे भोरमे कमलनाथकेँ एलनि। से सुनिते परिवारमे, जेना पहाड़ टूटि केकरो देहपर गिरैत, तहिना भेल। खरचाक सोच नै मुदा सुभद्रा विधवाक जिनगी बितौत सोच तेकर। अखनि धरि समाजो जेकरा अधला बुझैत, अशुभ बुझैत।

जेहने सुभद्रा हँसमुख तेहने सुन्नरि। जोरसँ बजैत कियो ने सुनने। पढ़बोमे चन्सगरि। घरक सभ काजक लूरि माएसँ सिखने। भोरे उठि फुलडाली धोइ फूल तोड़ि नहा कऽ पूजा करैत। सालो भरि जे उपास होइत सभ करैत। पिताकेँ खुऔने बिना सुभद्रा मुँहमे पानिओ ने लैत। भगवानकेँ कोसैत नवटोलवाली बाजलि-

> "भगवानो नीकेकेँ अधला करै छथिन। पपीयाहा सबहक बेरमे सुति रहता।"

ओसारक खुट्टा लगल ठाढ़ भेल सुशील सभ देखैत-सुनैत। किछु काल देखि गुम्मे अपना ऐठाम विदा भऽ गेल। अपना ऐठाम आबि कोठरीक चौकीपर पड़ि रहल। सुशीलक मनकेँ, जेते घटना नै झकझोड़ैत तइसँ बेसी समाजक बेवहार। अखनि धरि सुशीलक विचार पढ़ाइ समाप्त कऽ राँचीएमे नोकरी करैक छल। मुदा औझुका घटना विचारकेँ बदलि देलकनि। जहिना भुमकम भेलापर खाधि ढिमका बनि जाइत आ ढिमका खाधि, तहिना। पिता समाज शास्त्रक प्रोफेसर रहथिन। दू तल्ला कोठा राँचीमे बनौने छला। दस कट्ठा वाड़ीओ किनने, जइमे तीमन-तरकारी उपजबै छला। एकाएक शुशीलकेँ गामक आकर्षण आ संकल्प जागल, जे कुबेवस्थाकेँ मेटौने बिना समाजक नीक नै भऽ सकै छै। जेकरे चलैत ढेरो बहिन सभ पापीनी बनि समाजमे मुँह नुका-नुका जीबै छथि। परीक्षा लग रहने दोसर दिन सुशील बससँ राँची विदा भऽ गेल।

सुशीलक मन्हुआएल मुँह देखि माए-पिता सन्न भऽ गेलखिन। बिना

किछु बजने सुशील दुनू गोटेकँ गोड़ लागि नहाइले गेल। माए थारी परोसलक। चिन्तित भऽ पिता कुरसीपर बैसल, टेबुलपर केहुनीक बले मुँहपर हाथ दए सोचए लगला। नहा कऽ आबि सुशील खेनाइ खाए लगल, मौका बूझि माए पुछलकनि-

"बौआ, बसमे बेसी झमार भेल जे मुँह सूखल अछि?"

"नै।"

"तखनि मन्हुआएल किए छी?"

"आब ऐठाम (राँचीमे) नै रहब। परीक्षा दऽ गाम चलि जाएब।"

माए-बेटाक गप-सप्प कान पाथि पिता सुनैत। सुशील पढ़ाइसँ किएक विमुख भऽ रहल अछि। ऐ तारतम्यमे प्रोफेसर तरूणक दिमाग ओझराएल। रंग-बिरंगक सवाल-जवाब मनमे उठए लगलनि। सिरिफ तीन साल अपन नोकरी बँचल अछि। अखनि धरिक कमाइक मकानेटा अछि। के रहत? अपन इच्छा छल जे सुशील एम.ए. कऽ ऐठाम नोकरी करत। सभ मिलि कऽ रहब। सभ विचार धूरा बनि हवामे उड़िया रहल अछि। सुशील नवयुवक अछि जे निर्णए कऽ लेत तइमे पाछू नै हटत। जिद्दी तँ ओ शुरूहेसँ रहल। जौं हम दुनू परानी राँचीमे रही आ सुशील गाममे, तखनि केकर सेवा के करत? राँचीओक वातावरण जे पहिने छल ओ धीरे-धीरे अधला भेल जाइत अछि। सेवा-निवृत्ति भेलापर पेंशन भेटत। पिताजीक देल गाममे बहुत सम्पति अछि। ऐठामक सभ किछु बेचि गामेमे बना लेब। सुशीलोक बिआह नै ऐ साल तँ आगू साल करबे करब। गामेमे सभ गोटे मिलि रहब।

सुभद्राक समाचार रूपलाल बाबाक कानमे पड़ल। शरीरसँ असमर्थ बाबा। १९३४ई.क भुमकममे सेवाक इमानदारीक चलैत सभ गाँधीजी कहए लगलनि। लोकक बीच बाजब, गोलबन्द करब, बाबा जहलमे सिखलनि। आजादीसँ पहिने बकास्त सिक्कमी जमीनक लड़ाइ लड़ि गरीबक बीच सेहो बँटौलनि। जमीन्दार सबहक विरोध ऐ रूपे रूपलाल बाबा केलनि जे सस्तेमे बेचि-बेचि सभ गामसँ पड़ा गेल। समाजमे केकरोसँ कोनो भेद-भाव नै। ने जाति-पाति ने छोट-पैघ ने ई धरम, ऊ धरमक पछड़ामे कहियो पड़ला। सबहक ऐठाम एनाइ-गेनाइ, नीक-बेजाएक गप-सप्प करब शुरूहेसँ रहलनि। आजादीक उपरान्त जखनि गाँधीजी गोलीक शिकार भेला, रूपलाल बाबाक

मन टूटि गेलनि। अपन जीवन-यापन लेल समाजसँ सिकुड़ि परिवारमे समा गेला। जवानीक सभ अरमान आ क्रिया-कलाप बुढ़ाड़ीमे चूर-चूर भऽ गेलनि।

आनर्सक परीक्षा समाप्त होइते सुशील गाम चलि आएल। बसक झमारसँ भरि दिन घरमे सुतले रहल। गामक जानकारी पबैले सुशील भोरे चाह पीब रूपलाल बाबा ऐठाम गेल। पाकल आम जकाँ जिनगीसँ लड़ैत रूपलाल बाबा दलानेपर बैस सुइया-डोरासँ धोती सिबैत। एकटा पतरे ठेंगा बगलमे रखल। आँखिक ज्योति सेहो कमि गेलनि। पएर छूबि सुशील गोड़ लगलकनि। अनचिन्हार बूझि बाबा पुछलखिन-

“नै चिन्हलौं?”

विस्तारसँ अपन परिचए दऽ सुशील आगूमे बैसल। पहुलका सभ वृतान्त रूपलाल बाबा कहलखिन। जिज्ञासा भरल स्वरमे सुशील पुछलकनि-

“समाज कल्याणक सम्बन्धमे अपनेक की विचार अछि?”

“बौआ, हमर नेता गाँधीजी छला। जाबे जीबैत रहला आ जे कहथिन जान-पराण लगा लड़ैत रहलौं। कहियो पाछू घूमि नै तकलौं। मुदा जखनि हुनका गोली लागब सुनलौं मन टूटि गेल। जखनि गाँधीजी सन तियागी-तपस्वी नेता गोलीसँ दागल गेला तखनि समाजक कल्याण केना होएत। पढ़ल-लिखल नै छी। हुनकर लिखल पोथी जे किनलौं ओहिना बक्सामे रखल अछि। जेकरा हाथमे देशक शासन गेल, अपन सुख-भोगक खातिर, अपना-अपना ढंगसँ गाँधी जीक विचारकेँ व्याख्या करए लगल। बेइमानी-शैतानी बढ़ैत गेल।”

“बड़ अनुभवक बात बाबा कहलौं।”

“जहलमे बड़का नेता सभ कहथिन जे गामक भीतरक सभ किछु गौआँक छी। ओकरा अधिकसँ अधिक उबजाए गामक विकास करब। छोट-छोट कारोबारक जनम हएत। आमदनी बढ़ैत जेतै। छोट कारोबार पैघ बनैत जाएत। जेते पैघ कारोबार होइत जेतै गाम ओते खुशहाल होइत जाएत। छोट-छीन झगड़ा अपनेमे फड़ियाएत। सबहक धिया-पुता पढ़त-लिखत। दबाइ-दारूक जोगार सरकार करतै। स्वस्थ समाज, स्वस्थ देशक निर्माण

करत। सभ सपना भऽ गेल। हृदए विदीर्ण भऽ गेल। जेते दिनका दाना-पानी अछि, जीबै छी। सभकेँ सभ जाल बुनि-बुनि फँसबए चाहैए। शान्तक जगह अशान्त लए लेलक। प्रेमक जगह कटुता। समाज टूटि-टूटि कमजोर बनैत जा रहल अछि।''

जे विचार सुशीलकेँ आइ धरि नै आएल छल ओइले हृदैमे जमीन तैयार हुअ लगल। गुम-सुम्म सुशील एक टकसँ रूपलाल बाबा दिस देखैत रहल। जहियासँ सुभद्राक सम्बन्धमे बाबा सुनलनि तहियासँ राति कऽ निन्न नै होइन। भादो मास जकाँ सदिखन आँखिसँ नोर झहैरते रहनि। सोगाएल स्वरमे सुशील पुछलकनि-

''बाबा जइ विपतिमे सुभद्रा फँसि गेलि, ओइसँ उबरबाक कोनो रस्ता छै?''

''हँ अछि। जइ विपतिक चर्चा केलौं ओ बनौआ छी। ओकरा सुधारल जा सकैत। सुधारलासँ ओइ विपतिक अंत भऽ जेतै।''

''सुधारवाक की रस्ता हेतै?''

''समाजमे सबहक लेल ई विपति नै अछि। किछु जातिक बीच अछि। ऐ लेल नौ-जबानकेँ डेग उठबए पड़त। मेहौता बरद जकाँ हमहूँ सभ पाछू-पाछू चलब।''

उत्साहित भऽ सुशील पुछलकनि-

''बाबा ऐ लेल जे करए पड़त, करब। अहाँक असिरवाद चाही।''

''बौआ, जेना लोक जीबैए तेना हम मरि गेल रहितौं। अस्सीसँ ऊपरे वएस भऽ गेल। दधीचिक हड्डी जकाँ जे जरूरति होएत अखनो तैयार छी।''

''अखनि जाइ छी। काल्हिखनि फेर आएब।'' कहि सुशील विदा भेल। सूतल जवानी रूपलालमे पुन: जागि गेलनि। देहमे नव शक्तिक संचार हुअ लगलनि। थरथर कँपैत शरीर, हाथमे ठेंगा नेने बाबा कमलनाथ ऐठाम विदा भेला।

सोनपुरवाली दादी चौपारिपर सोफ बिछा बारहोटा पोता-पोतीकेँ खेलबैत रहथि। कोरामे केतेकेँ रखितथि। सभ धिया-पुता खेलाइत। खेलबैले दादी एकटा छिपली आ कड़चीक टुकड़ी रखने। जहाँ कोइ कानए लगै छल तँ

दादी छिपली बजा गीत गाबए लगैत। बच्चा चुप भऽ दुनू हाथे थोपड़ी बजा दादीक संग गीत गाबए लगै छल। दादीक लाटमे आनो-आनो गोटे अपना बच्चाकेँ आनि खेलबैत। महरैलवाली हँसमुख। सदिखन हँसिए कऽ बजैत। मुदा आइ मन्हुआएल देखि ननौरवाली चुटकी लैत कहलकनि-

"दीदी, बड़ मन्हुआएल छथि, भैया किछु कहलकनि?"

बिच्चेमे कछुबीवाली टपकि कऽ बाजलि-

"भैयाकेँ तँ दीदी खेलौना बनौने छथि, ओ की कहथिन।"

कछुबीवालीक बात सुनि महरैलवाली उत्तर देलखिन-

"नै कनियाँ, सुभद्रा दाइक दुख मन पड़ि गेल। भरि दिन अन्नो ने नीक लगल।"

सुभद्राक नाओं सुनि ठाढ़ीवाली च्यू,च्यू करैत बाजलि-

"कनियाँ, तूँ सभ नव-नौतुक छह। नै बूझल हेतह। हमर जे मझिली पुतोहु अछि ओ दोती अछि। पहुलका घरबला जे रहै ओ बौर गेलै।"

कछुबीवाली पुछलक-

"केतए बौर गेलै?"

ठाढ़ीवाली उत्तर दैत बाजलि-

"दिल्लीमे नोकरी करए गेल, से घूमि कऽ नै आएल। बेटा तँ हमर कुमार रहए। बापक मन दोती लड़कीसँ बिआह करबाक नै रहनि। मुदा विदेसरक मेलामे जे कनियाँ देखलौं, देखि कऽ मनमे गड़ि गेल। हमरे जोरसँ बिआह भेलै। अखनि ओकरेपर गिरथाइन बनल छी। जेठकी तँ तेहेन अछि जे कहिया ने झोंटिया कऽ बइला देने रहिताए।"

सोनपुरवाली दादीकेँ सभ बुधियारि आ बेसौह बुझैत। ओ कहए लगली-

"कनियाँ, तोरा सभकेँ नै बूझल हेतह। हमर बिआह ढेरबामे भेल रहए। दादी जीविते रहथि। ओ दोसर बिआहकेँ अधला बुझैत। बाबू हमर बड़ विचारक। साल भरि पछाति माएकेँ कहलखिन, 'बुच्चीक दोसर बिआह कऽ देबै। जाबे अपना दुनू गोटे जीबै छी ताबे ने। जखनि मरि जाएब तँ ओकरा के देखतै। गाममे तँ देखिते छिऐ जे केहेन-केहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि। खानदानक नाक कटि जाएत।' हम सुनलौं तँ बुकौर लगि गेल। माए पोलहा-पोलहा बुझौलक। हम हँ कहि देलिऐ। अखनि देखिते छहक जे

भगवानक दयासँ केहेन फड़ल-फुलाएल परिवारमे सुख करै छी। भगवान सभकेँ सुख-भोग देथुन। केकरो मन कलपै नै।''

रूपलाल बाबाकेँ अबिते देखि कमलनाथ आगू बढ़ि बाँहि पकड़ि दुआरपर अनलकनि। दुनू आँखिसँ कमलनाथकेँ नोर टघरए लगलनि। कानि-कानि अपन दुखनामा बाबाकेँ सुनबए लगलखिन। बबोक आँखिसँ नोरक टघार गालपर होइत चौकीपर ठोपे-ठोप खसए लगल। कनैत रूपलाल बाबा कमलनाथकेँ कहलखिन-

''कमल, समाज एहेन नाशक रस्ता धेने अछि जे केकरो नीक नै हेतै। आइ तोरा जे भेलह केते दुखद अछि। हमर नेता गाँधी जी कहथिन मर्द-औरतक बीच जे विषमता अछि ओकरा मेटबए पड़त। तखनि समाज एकरंग बनत। अखनो देखै छी जे मरद तीन-तीनटा बिआह करैए मुदा औरत जिनगी भरि बैधव्य भारसँ कलंकित जरैत रहैए। ने कोइ देखिनिहार आ ने कोइ ओकरा मनुख बुझिनिहार।''

''भाय, एकर उपए?''

''हँ छै। लकीर-क-फकीर बनब नीक नै। पैघ-पैघ समाज सुधारक समाज सुधारलनि। अखनो किछु बाँकी छै। जे हमहीं-तोहीं ने सुधारबै।''

कमलनाथक हृदैमे जे बेथाक पहाड़ बनल अछि आस्ते-आस्ते पघिलए लगल। चेहरामे चमक आ मुँहमे मुस्कान आबए लगल। उत्साहित भऽ कहलखिन-

''भाय, समाज अहाँकेँ गुरु मानै छथि। जिनगीमे केकरो नीक छोड़ि अधला नै केलिऐ। हमहूँ अहाँसँ बाहर नै छी। जे कहब मानि लेब।''

कमलनाथक बदलल विचार रूपलाल बाबाकेँ जुआनीक उमंग आनि देलकनि। ठहाका मारि दुनू गोटे हँसला। गद्-गद् हृदैसँ रूपलाल बाबा बजला-

''कमल, तोरा कोनो तर्दुत नै करए पड़तह। सभ भार हमरा ऊपर। हमहूँ जिनगीक अंतिम घड़ीमे जुआनिक कएल कीर्तिकेँ पुन: जोड़ि जीब। समाजक बीच ढोलहो दऽ कहबै जे पढ़ल-लिखल नौजबान सुशील अछि। देखबोमे भव्य, विचारो उत्तम छै। ओकरा संग सुभद्राक बिआह होएत।''

हँसैत कमलनाथ बजला-

"सुभद्रा हमरे बेटी नै समाजक छिऐ। तँए नीक-अधलाक भार समाजक ऊपर छै।"

उठि कऽ ठाढ़ होइत रूपलाल बाबा बजला-

"कन्यादान हम करब"

गाममे फगुआक उमंग जकाँ रंग-अबीर उड़ए लगल। मुरझाएल सुशील एकाएक प्रफुल्लित भऽ गेल। जहिना जाड़क मासमे ठंढ़सँ गाछ-बिरिछ मरनासन्न भऽ जाइत अछि। मुदा वसन्तक बयार पबिते लहलहा उठैए, तहिना समाजमे भेल।

सौंसे गामक लोक बरहम स्थानमे जमा भेला। की मरद, की औरत, की बूढ़, की बच्चा सभमे खुशीक आनन्द। समाजक बीच सुशील-सुभद्राक बिआह परस्पर माला पहिरा सम्पन्न भेल।

लोक नारा लगबए लगल-

"रूपलाल बाबा- अमर रहे-२"
"विधवा बिआह- अमर रहे-२"

❍❍

१७. सोनमाकाका

भरि राति ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत कखनो उठि कऽ बैसै तँ कखनो पेशाब करैले बाहर निकलै। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि सोनमाकाका डिबिया नेसि कुट्टी काटए लगल। घरवाली रूपनीक इलाज करबैले डाक्टर ऐठाम जाएब छेलै। काल्हिए डेढ़ सएमे खस्सी बेचलक। सबेरे विदा हएब तखनि ने समैपर पहुँच बेर धरि घूमि कऽ आबि सकब सोचि सोनमाकाका औगताइ करैत गाम परहक काज सम्हारए लगल। घरवालाक चाल-चूल पाबि रूपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चूल्हि लग पानि छीँटि पजारलक। रोटिपक्का धिपै दुआरे चूल्हिपर चढ़ौलक। चिक्कसमे लसिए ने पकड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी बना रोटिपक्कामे देलक। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर रखल मौनीसँ चारिटा अल्लू निकालि चूल्हिमे घोंसिएलक। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनौलक। सोनमाकाका नादिमे कुट्टी दऽ पानि छीँटि दुनू हाथे मिला गाएकँ घर-सँ-बाहर केलक। लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोइ पानि नेने आएल। अपनेसँ पिरही लऽ जलखै करैले बैसल। रूपनी पतिकँ थारी आगूमे दऽ कलपर जा हाथ-पएर धोइ आबि चूल्हिए लग बैस खाए लागलि। जलखै खा धोती, गोल-गला आ पएरमे चट्टी पहिरि सोनमाकाका रूपनीकँ कहलक-

''केते दूर जाए पड़त से नै बुझै छिऐ, फुर्ती करू?''

काँख तर छाता कान्हपर तौनी, धोतीक खूटमे रूपैआ बन्हलक। रूपनीकँ हुक्काक चहटि। बिना हुक्काक भरि दिन केना कटतै तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेल। आगू-आगू सोनमाकाका पाछू-पाछू रूपनी बाजार दिसुका बाट पकड़ि विदा भेल।

तिनमहला भारी-भरकम मकान देखि सोनमाकाकाकँ फाटकसँ भीतर जाइक साहसे नै होइ। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्शाबलाकँ पुछलक-

''बौआ, डाक्टर साहैब ऐठाम जाएब?''

“जा-जा वएह मकान डाक्टर साहैबक छियनि।” रिक्शाबला हाथक इशारा दैत कहलक।

पीचसँ उतरि फाटक लग सोनमाकाका जाइते छल आकि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलक। सोनमोकाका पाछू-पाछू बढ़ल। लोकक करमान लगल देखि रूपनीक दिल दहलि गेल। मने-मने बाजलि-

> “बाप रे बाप, एते दुखता केतएसँ एलै। असकरे डाक्टर साहैब केना इलाज करथिन।”

सोनमाकाका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलक। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमाकाकाकेँ कहलक-

> “ताबे बाहर जा बैसू। जखनि नम्बर औत तखनि सोर पारि लेब।”

सोनमाकाका बाहर निकलि फुलवाड़ीमे घूमि-घामि फूल देखए लगल। रंग-बिरंगक फूल फुलवाड़ीमे। कोनो-कोनो सुगंधित आ कोनो-कोनो बिना सुगंधेक। किआरी बनल। पतियानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैले पनिबट बनल। टहलै-बुलैले दू हाथ चाकर रस्ता। रस्तापर गदगर दुभि। पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमाकाका तमाकुल चुनबए लगल। चून झाड़ि तमाकुल मुँहमे लऽ आगू तकलक आकि दस-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौगैत देखलक। कोनो उज्जर, कोनो कारी, कोनो भटरंग देखि दुनू परानी सोनमाकाका देखए लगल। हवा सिहकैत। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमाकाका पड़ि रहल। थोड़े-काल पछाति कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोटे डाक्टर लग पहुँचल। रूपनीकेँ ब्रेन्चपर बैसा डाक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बिमारीक भाँज नै बूझि डाक्टर साहैब सोनमाकाकाकेँ पुछलखिन-

> “केते दिनसँ बिमार छथि। की सभ होइ छन्हि?”

मिरमिरा कऽ सोनमाकाका बाजल-

“पौरूँका साल गाममे हैजा भेलै। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझिली बेटी मरि गेल। तहिएसँ बिमारीक परबेस भऽ गेलै।”

''केतेक बाल-बच्चा अछि?''

''आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।''

डाक्टर साहैब एकटा टाँनिक लिखि कागत दऽ देलखिन। कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पच्छिम दबाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमाकाकाकेँ देखा देलक। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देखि सोनमाकाका पुछलक-

''भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?''

माथ कुरियबैत ओ बाजल-

''की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। आँगनमे दुनू सौतिन झगड़ा करए लागलि। छोटकी बुफगर। ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटकि देलक आ मुकियाबए लगल। मुकियबैत-मुकियबैत बेहोश कऽ देलक। जाबे भैयाकेँ खबरि होइ आ आबै ताबे थारी-लोटा-नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा गेल। हमहूँ गामपर नै रही। जखनि एलौं तँ देखलिऐ। लगले एक सए रूपैआ पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।''

दबाइ-फीस लगा सोनमाकाकाकेँ सए रूपैआ खर्च भऽ गेल। रूपैआ गनि देखलक तँ पचास रूपैआ बँचल। मने-मन सोनमाकाका सोचलक जे कहिया बाजार आएब कहिया नँइ। बिछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीनि लेलक। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सियनि उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सूखत आ सुतबो करब। जखनि बाजारसँ बहराएल आकि धक् दऽ सोनमाककाकाकेँ मन पड़ल जे बाजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घूमि कऽ कनी आगू बढ़ल आकि मुरही-कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलक। पाँच रूपैआक मुरही-कचड़ी मिला सोनमाकाका किनलक। अदहा अपने गमछाक खोचड़ि बना लेलक अदहा धरवाली रूपनीकेँ देलक। रूपनी खोंइछामे लऽ लेलक। दुनू गोटे रस्तो चलै आ खेबो करै। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमाकाका मिला देने रहए। थोड़े दूर आगू बढ़ल तँ मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़लै। कड़ू मिरचाइ रहने सोनमाकाकाकेँ हुचकी उठलै। दुनू आँखिसँ नोर सेहो गिरए लगलै। जहाँ हाथसँ नोर पोछलक आकि आँखिओमे लागि गेलै। पानिक केतौ पता नै। सोनमाकाका सुसुएबो करै, आँखिसँ नोरो चुबै आ हुचकबो करै। मील भरि

जखनि बढ़ल तँ रस्ताक बगलेमे उतरबारि भाग इनार देखलक। इनार देखिते सोनमाकाकाकेँ हूबा भेल। इनारक चारू कात सिमटीक लहरा बनल। चारि-पाँच गोटेकेँ पानि भरैत देखि हिचकैत सोनमाकाका कहलक-

"बुच्ची, कनी पानि पिआबह, कड़ू लगल अछि।" बिच्चेमे हुचकी उठलै। हुचकैत आ सुसुआइत सोनमाकाकाकेँ देखि पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसबो करए। करिया डोलमे पानि भरि सोनमाकाकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमाकाका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहरिमे बैस खाए लगल। करिया भूल्लीकेँ कहलक-

"हे गै पितरिया आँखिवाली बाबाकेँ देखि-देखि हँसै छीही?"

आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक-

"हे गै जरसी गाए, अनके टेटर देखै छीही। रूपनीदादी अखनो दुनू गोटे हाट-बाजार घूमैले जाइत अछि।"

बिच्चेमे नेंगरी बहिरीकेँ कहलक-

"अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठियाए दही। नहेबो ने केलौं हेन।"

सोनमाकाका पानि पीब तमाकुल चुनबए लगल। रूपनी बीड़ी नेसि पीबए लागलि। दुनू गोटे रस्ता धेलक। अपना गामसँ कोस भरि पाछूए दुनू परानी सोनमाकाका रौदमे गरमा गेल। रस्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देखि सुसताए लगल। भोलबाकेँ पहिनेसँ सुसताइ देखि सोनमाकाका पुछलक-

"तूँ केतएसँ अबैत छँ भोला?"

उठि कऽ बैसैत भोलबा उत्तर देलक-

"तेल पेरबैले गेल छेलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ केतए लऽ गेल छेलहक?"

"की कहबौ भोला। तीन सालसँ विपतिए-विपतिमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुचिया माए तरे-तर खियाइत जाइत अछि। पहिने होइ छेलए जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै। मुदा डाक्टर लग गेलौं तँ बिमारी ठहरल।"

“देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे पराण रहै छै ताबे तक सेवा करैक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह तेतबे काल ई दुनियाँ। स्वर्ग-नर्क सभ एतै छै।”

“बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहै छै।”

“काका, हमर विचार अछि जे दोसर बिआह कऽ लैह। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छै।”

“भोला तूँ चौल करै छँ। बुढ़ाड़ीमे दोसर बिआह कऽ गरदनिमे ढोल बान्हब। जाबे थेहगर छी कहुना-कहुना दिन कटिए जाएत। बादमे बूझल जेतै।”

तीनू गोटे गाम दिस चलल। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलक। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ सुनै जे हल्ला कथीक होइ छै। ओना गामे छिऐ, कोनो-ने-कोनो हल्ला होइते रहै छै। हल्ला सुनि डेगो नम्हर दैत बढ़ल। गाममे प्रवेश केलक तँ हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलै। कियो कहै ‘नीक भेलै’ तँ कियो कहै ‘अधला भेलै।’ तीनू गोटेकेँ कोनो भाँजे ने लगै। रस्ताक दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देखलक। तीनू गोटे रस्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पुछलक। मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि तीनू गोटेकेँ बैसैले कहि कहए लगलै-

“बजैत लाज होइए। मुदा जब पुछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचनकाका छल। कहयो केकरो अधला नै केलक आ ने केकरोसँ कहियो मुहाँ-ठुठी भेलै। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौआँकेँ खुआबै छला। कोनो चीजक कमी नै। वेचारे मरला आकि तेहेन चालि-चलनि बेटा धेलक जे सभ सम्पति बोहा देलक। धैला-धैले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियबै। घराड़ीओ नै बँचलै। बापक रखल नाओं रामकिसुन रहै जेकरा सभ बतहा कहए लगलै। वएह मुइल तँए कोइ नीक कोइ अधला कहै छै।”

सोनमाकाका मुनेसरसँ पुछलक-

“परिवारमे के सभ छै?”

“एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छै। ओहो मइटुग्गर अछि। समदौआ बहु जे छेलै ओ मास दिन पहिने भागि गेलै। अन्न-अन्नकेँ बतहा मुइल।

अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत, ने कपड़ा छै। लगमे बैस बेटा कनै छै।''

मइटुग्गर सुनि रूपनीक आँखिमे नोर आबि गेलै। सोनमाकक्काक हृदए पसीज गेलै। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेलै। सोनमाकाका मुनेसरकेँ कहलक-

''भाय साहैब, मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ, चरबाहिओ करि कऽ जीबे करतै।''

सोनमाकक्काक विचार सुनि मुनेसरक मन बदलि गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल-

''सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जौं कोनो जोगार हेतै तँ अँगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबै।''

रामकिसुन बतहाक बेटाक नाओं भुखना। जहिना पूब मुहेँ बतहा सूतल तहिना अछि। भुखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। केते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलै। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सूखि जाइ छै तहिना मुनेसरक क्रोध भुखनाक दशा देखि सूखि गेल। हृदए पिघलि गेलै। डेन पकड़ि मुनेसर भुखनाकेँ उठा कहलक-

''बच्चा, अखनिसँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।''

मुनेसरकेँ देखि टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमाकाकाकेँ जे बीस रूपैआ बँचल छल ओ डाड़सँ निकालि कपड़ा लेल देलकै। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जारनि आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिलि बतहाकेँ जरौलक। समाज समुद्र होइ छै। अधला-सँ-अधला आ नीक-सँ-नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइ छै।

गरमी मास रहने सोनमाकाका भोरे हाँसू-छिट्टा लऽ घास लेल विदा भेल। कनी आगू बढ़ल तँ मोनमे एलै जे भुखनाकेँ ऐठाम आनि बेटीक संग बिआहो कऽ देबै आ रखिओ लेब। घुरि कऽ आबि हाँसू-छिट्टा रखि छाता लेलक आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकेँ कहलक-

''भाय, हमरो बेटा नै अछि, एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे

भुखनाकेँ बेटीसँ बिआह कऽ जमाए बना रखी। ओहू बच्चाकेँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकेँ।''

हँसैत मुनेसर बाजल-

''तेलोसँ चिक्कन। अखने भुखनाकेँ नेने जाउ।''

सोनमाकाका भुखनाकेँ संग केने अपना ऐठाम आएल। गाममे जेते घरहटिया अछि सभकेँ सोनमेकाका सिखौने अछि स्कूल जकाँ सोनमाकाका घर बन्हैक एक-एकटा काज करैक लूरि सभकेँ सिखौने तँइ सभ काका कहैत।

❍❍

१८. दोती बिआह

पचास वर्षीए प्रोफेसर उमाकान्त दोहरा कऽ बिआह कइए लेलनि। केना नै करितथि? संयमी रहने पचास बर्खक चेहरा पैंतीस-चालीससँ ऊपर नै बूझि पड़ै छन्हि। पत्नीक मुइने घर सुनसान लागए लगलनि। चौघारा कोठरी सभ ढन-ढन करैत। अपना छोड़ि ने दोसर भैयारी आ ने कियो आन परिवारमे रहनि। दुइएटा सन्तानो। जेठ बेटी प्रोफेसर पतिक संग बनारसेमे रहै छथिन। दुरागमन पछाति आइ धरि मात्र तीन बेर माए-बापसँ भेँट करए एली। बेटो तहिना। डाक्टरीक अंतिम साल, बंगलोर मेडिकल कौलेजमे पढ़ै छथिन। सालक दुर्गापूजाटा मे गाम अबै छथि।

किरिण फुटिते तीनू बकरी घरसँ निकालि बाहरक खुट्टीमे बान्हि, कटहरक पात आगूमे दऽ बगलमे बैस अपने फुड़ने असकरे बैसल बहिरी बाजए लगली-

"घोर कलयुग! घोर कलयुग आबि गेल। जेते दिन ई दुनियाँ चलैए, चलैए, नै तँ धरती फाटत। सभ ओइमे चलि जाएत। सुआइत लोक कहै छै जे मनुख तेते पपीयाह भऽ गेल अछि जे खिआइत-खिआइत चुट्टी-पिपरी जकाँ भऽ गेल। हमरा सभकेँ भगवान पार लगौलनि जे एतेटा मनुख भेलौं। आबक लोक थोड़े एते-एतेटा हएत। तेहेन हएत जे लग्गी लगा-लगा भट्टा तोड़त।"

ओना बिआहसँ दू दिन पहिनहिसँ स्त्रीगणक बीच गुन-गुनी शुरू भऽ गेल छेलै मुदा कियो खुलि कऽ नै बजै छेली। मुदा आइ सबहक मुँह खुजि गेलनि। टोलक बीच सरकारीक तीनेटा चापाकल अछि। बाँकी पाँचो अपन-अपन अँगनेमे गड़ौने छथि, जैपर आन-आन नै जाइत। तीनूमे सँ एकटाक हेडे खोलि तड़िपीबा सभ बेचि कऽ ताड़ी पीब गेल। दोसराक फील्टरे फुटि गेल छै, जइमे पानिसँ बेसी गादिए अबैए। खाली चौराहा परहक कल बँचल अछि। मुदा ओहो कोन जन्मक पाप केने अछि जे भरि दिनमे कखनो आराम नै भेटै छै। चारू दिससँ पनिभरनी बाल्टीन-घैल लऽ आबि-आबि चारू दिससँ घेरि बेरा-बेरी पानि भरैत रहै छै। तँए गप-सप्प करैक नीक अवसरो आ जगहो फइल।

चिक्कारी मारैत मझौरावाली सोनरेवाली दिस देखि कऽ बजली-

“सौनक लगनक गीत अबै छन्हि, दीदी?”

मुस्की दैत सोनरेवाली उत्तर देलखिन-

“जहिना एक्के लोढ़ीसँ सिलौटपर मिरचाइओ पीसल जाइत अछि आ मिसरीओ तहिना ने डहकनो फागुनोक लगनमे गौल जाइत अछि आ सौनोमे।”

दुनू गोटेक चिकारीमे गप्प सुनि बेलौंचावाली बजली-

“अपना भैंसुरकेँ नै देखै छहुन जे काठपर जाइ बिना दुइर भेल जाइ छथुन आ तैपर पुट्ठा खलीफा घर लऽ अनलखुन, से बड़बढ़ियाँ बड़ चिक्कन आ प्रोफेसर भैयाकेँ अखनि की भेलनि हेन। मारे दरमहो कमाइ छथि आ उमेरे केते हेतनि। तीस-पैंतीस बर्खसँ बेसी थोड़े भेल हेतनि।”

मझौरावालीक पच्छ लैत मुँह चमकबैत मोहनावाली बाजलि-

“जानिऐ कऽ तँ पुरुख छुद्दर होइए। तइमे उमाकान्ते जौं छुद्दरपना केलनि तँ कोन जुलुम भऽ गेलै।”

मोहनावालीक करुआएल गप सुनि बेलौंचावालीक मन जरए लगलनि। तुरुछि कऽ बजली-

“सभ पुरुख तँ छुद्दरे होइए मुदा मौगी तँ सभटा गिरथाइने होइए, सएह ने। सत-सतटा मुनसा देखैए मौगी आ छुद्दर होइए पुरुख। हिनके पुछै छियनि जे प्रोफेसर भैयासँ नीक अपन घरबला छन्हि?”

घरबलाक नाओं सुनि मोहनावाली काँख तरक घैल निच्चाँमे रखि आगू बढ़ए लगली। मुदा तैबीच साठि बर्खक झबरीदादी जोरसँ बजली-

“मरदक कमाएल खाइ जाइ छह आ गरमी चढ़ै छह तँ कलपर झाड़ैले अबै छह। एक्को दिन कोइ उमा बौआकेँ भानसो कऽ दइ छहुन आकि एक लोटा पानिओ भरि कऽ दए अबै छहुन। मुदा उल्लू जकाँ मुँह दुसल सभकेँ होइ छह। वेचारा नोकरीपर सँ अबै छथि, अपने हाथे वर्तन-बासन धोइ, पानि भरि भानस करै छथि से बड़बढ़ियाँ, मुदा बिआह कऽ लेलनि से बड़ अधला।”

झबरीदादीक गप ओते मोहनावाली नै सुनथि जेते तरे-तर बेलौंचावाली जरैत रहथि।

छह मास पूर्व प्रोफेसर उमाकान्तक पत्नी स्वर्गवास भऽ गेलनि। जाधरि जीबै छेलखिन ताधरि घरक कोनो भार प्रोफेसर साहैबकेँ नै बूझि पड़ै छेलनि। जहिना कोसीक धार अनवरत बोहैत रहैए तहिना उमाकान्तोक परिवार अपना गतिसँ छह मास पछाति धरि चलै छेलनि। ओना दस बरख पूर्व धरि माए-पिताक नजरिमे उमाकान्त बच्चे आ पत्नी कनियेँ छेलखिन। घरक भार दुनूमे सँ किनकोपर नै छेलनि। सोलहो आना माइए-बाबू सम्हारै छेलखिन। पढ़नाइ-पढ़ौनाइ उमाकान्तक आ दुनू साँझ भानस केनाइ पत्नीक काज छेलनि।

पत्नी मुलाक पछाति उमाकान्तकेँ घर-आँगन सून-मशान बूझि पड़ए लगलनि। चौघारा घरक आँगन, नम्हर दरबज्जा, तैबीच असकरे उमाकान्त रहै छथि। परिवारकेँ डगैत देखि उमाकान्तक मनमे बेचैनी बढ़ए लगलनि। जहिना भुमकमक समए धरतीक संग-संग ऊपरक सभ किछु काँपए लगैए तहिना मनक संग-संग उमाकान्तक बुधि-विवेक डोलए लगलनि। हृदए चहकए, मन मसकए लगलनि। मसकैत-मसकैत एहेन चिरक्का भऽ गेलनि जे उपयोग करै जोकर नै रहल। अनासुरती धैर्यक सीमा बालुक मेड़ि जकाँ ढहए लगलनि। ढहैत-ढहैत सहीट भऽ गेलनि। सहीट होइते बर्खा-पानि जकाँ रस्ता बनबए लगलनि, जइसँ नव-नव विचार जनमए लगलनि। नव-नव विचारकेँ जनमिते आँखि उठा आगू तकलनि तँ मेला-जकाँ दुनियाँ बूझि पड़लनि। सभ रंगक देखिनिहार। सभ तरहक वस्तुक दोकानपर एका-एकी एबो करैत आ जेबो करैत। अपन-अपन धुनिमे सभ बेहाल। दोसर दिस देखैक केकरो समए नै। अपने ताले सभ बेताल, जइसँ केकरो-केकरो आँखिसँ नोरो खसैत आ कियो-कियो ठहक्को मारैत। अनका दिससँ नजरि हटा उमाकान्त अपना दिस मोड़लनि तँ जिनगी लेल संगीक जरूरति पड़लनि। मन पड़लनि पत्नीक मृत्यु। मृत्युक उपरान्त सोग परगट करैले तँ बहुतो एला मुदा की सबहक नोरमे एक्के रंगक वेदना रहनि? एक घटना रहितो एक रंगक विचार आ वेदना कहाँ छेलनि? भरिसक सभ भाँज पुरबैले आएल छला। मुदा प्रोफेसर हरिनारायणक नोर किछु आरो बजै छेलनि। की हुनकर नोर पत्नीक प्रति छेलनि आकि पढ़ैत बच्चाक प्रति छेलनि आकि हमर विधुर जिनगीक प्रति छेलनि? मनपर भार पड़लनि। भारक तर मन दबेलनि, जइसँ सोचै-विचारैक

रस्तो अवरुद्ध हुअ लगलनि। मुदा तरमे दबल मन कहलकनि-

“समाजक लोक की कहत?” फेर मनमे उठलनि, की कहत समाजक लोक! जेते लोक तेते विचार। जहिना ताड़ीक गंधसँ केकरो उल्टी होइ छै तँ कियो सुगंध बूझि आत्म-तुष्टि करैए। बूढ़-बुढ़ानुस परम्परानुसार कहता जे संयुक्त परिवारमे बेकती-विशेषक वेदना परिवारक बीच हरा, फुलाएल फूल जकाँ हँसैए, जइसँ अभाव कोनो वस्तु नै रहि जाइत अछि। फेर मनमे एलनि, जइ कौलेजमे शिक्षक रूपमे छी, बेटातुल्य विद्यार्थीकेँ जिनगीक बाट देखबै छी, ओ की कहत? मुदा कोनो घटनो तँ अनिवार्य नै होइत आकस्मिको होइ छै। जे सबहक संग घटबे करत? घटिओ सकैए, नहियोँ घटि सकैए। मन ओझड़ेलनि। किछु काल पछाति मनमे एलनि, जे मनुख ऐ धरतीपर जनम लैत अछि ओ मृत्युपर्यन्त हँसैत जीबए जाहैए। से कहाँ भऽ रहल छै। पहुलका जकाँ परिवारो नै रहल। असकर जीअबो कठिन अछि। दोसराक जरूरति सदति काल पड़ैए। भलहिं जिनगीक क्रिया निमाहि लेब मुदा मनक बेथा के सुनत। सभठाम ने तँ लोक कानि सकैए आ ने हँसि सकैए। परिवार तँ हँसै-कनैक जगहे छी। जौं से नै भेटए तँ गुड़-घा जकाँ तरे-तर सड़नि करैत रहत। जेते सड़नि करत तेते शरीरसँ गंध निकलबे करत, जइसँ कष्टो हएत आ औरुदा घटत। जखने औरुदा घटत तखने जिनगी सिकुड़त। जेते जिनगी सिकुड़त तेते मृत्यु करीब औत। फेर मन ओझरा गेलनि। मन ओझराइते नजरि घुमौलनि तँ कौलेजक इतिहास विभागक प्रोफेसर हरिनारायणपर पड़लनि। हरिनारायणे बाबूटा एहेन जिज्ञासु रहथि जिनका आँखिसँ हृदैक वेदना, पहाड़पर सँ खसैत झड़नाक पानि जकाँ अनघोल करैत रहनि जे ‘बाप रे, अन्याय भऽ गेल।’ उमाकान्त ठूठ गाछ सदृश भऽ गेला। जइमे फूल-फड़क संग छाहरिओ अलोपित भऽ जेतनि। अपने जानटा लऽ कऽ पत्नी नै गेलखिन। असीम वेदनाक पहाड़ सेहो माथापर पटकि गेलखिन। सभ किछु छिड़िया जेतनि। केना समेटि पौता उमा भाय! की एकरे जिनगी कहबै?”

चेतना शून्य उमाकान्त दुनियाँक बाजारमे हरा गेला। चारू दिसक बाट बन्न बूझि पड़ए लगलनि। केम्हर जाएब? रस्ते नै। की ओ खरहोरिक ओहन गाड़ल कड़ची सदृश भऽ गेला जइसँ कोनो क्रिया नै भेनौं आन

ओगरवाह बुझैए। अनासुरती मनमे जगलनि जे दुनियाँमे कियो अप्पन नै। जाधरि आँखि तकै छी ताधरि दुनियाँ अछि, नै तँ ओहो नै अछि। अपनहि करनीसँ कियो दुनियाँकेँ सुन्दर बनबैए आ कियो अधला। आगू जीबैले संगीक जरूरति सभकेँ होइ छै। आनक अपेक्षा हरिनारायणबाबू, लग बूझि पड़ै छथि। अखने हुनका ऐठाम जा अपन मनक बात कहबनि।

उमाकान्तकेँ देखिते दुनू हाथसँ दुनू बाँहि पकड़ि हरिनारायण अरियाति कऽ अपन कोठरीमे बैसा पत्नीकेँ पानि नेने आबए कहलखिन। बामा हाथमे लोटा दहिना हाथमे पानिसँ भरल चमकैत स्टीलक गिलास उमाकान्त दिस बढ़ौलखिन। पत्नी विहिन उमाकान्त नजरि निच्चाँ केने हरिनारायणक पत्नी-शोभाक हाथसँ गिलास लऽ पानि पीबए लगला। मुदा दू घोंट पछाति पानि कंठसँ निच्चाँ धसबे ने करनि। दोसर गिलास भरैले शोभा बामा हाथक लोटा दहिना हाथमे लैत उमाकान्तपर नजरि गाड़ने। ने उमाकान्त मुहसँ गिलास हटबैत आ ने पानि पीऐत। उमाकान्तक बेथा हरिनारायण बूझि गेलखिन। शोभा हाथक लोटा अपना हाथमे लैत कहलखिन-

“अहाँ चाह बनौने आउ। भायकेँ हम पानि पिआ दइ छियनि।” चाह बनबैले शोभा कीचेन रूम चलि गेली।

मुँहमे गिलास सटल उमाकान्तक मनमे आबए लगलनि। जौं कहियो हरिबाबू हमरा ऐठाम जेता तँ किनका चाह बनबैले कहबनि। उमाकान्तकेँ विचारमे डुमल देखि हरिनारायण कहलखिन-

“भाय, अपनेसँ हम छोट छी मुदा एकरा धृष्टता नै बूझि दिलक धड़कन बुझू। अपने बेसी दुनियाँ देखलिऐ मुदा...।”

चैंकि कऽ उमाकान्त पुछलखिन-

“मुदा की?”

आइसँ पहिने मनुख जेते असुरक्षित जिनगी बितबै छल ओइमे बहुत कमी आएल अछि। सोलहन्नी सुरक्षित तँ नै मुदा पहुलका अपेक्षा सुरक्षित भेल अछि। ओना खतरा पहिनेसँ अधिक भऽ गेल अछि। मुदा बदलल रूपमे। पहुलका रूपमे सुरक्षित भेल अछि। जइसँ जिनगीक नमती सेहो बढ़ि रहल अछि। ओना पूर्वज शतायुकेँ सही औरुदा बुझै छथिन। मुदा ईहो बुझिनिहार तँ छथि जे चालीसकेँ घपचालीस बुझै छथि। ओहो ओहिना नै बुझै

छथि। अखनो चालीस बर्खसँ ऊपर केते गोटे छथि जे पूर्ण स्वस्थ छथि? मुदा किछु बरख पूर्व धरि अस्सी बर्खसँ ऊपर गोटि-पंगरा पहुँचै छला। से आब अदहासँ बेसी पहुँचए लगल छथि। तँए, मोटा-मोटी नब्बेकेँ आधार बना पुछलखिन-

"अपनेक आयु केतेक अछि?"

आयु सुनि उमाकान्त विस्मित भऽ गेला। हृदए बमकैत रहनि मुदा मुहसँ बोली निकलबे नै करनि। किछु काल बिलमि कहलखिन-

"पचास बरख।"

पचास बरख सुनि हरिनारायण उछलि कऽ बजला-

"अदहासँ किछु अधिक भेल अछि मुदा अदहा तँ बाँकीए अछि। अदहा लेल...।"

नम्हर साँस छोड़ि, उमाकान्त आँखि उठा कखनो हरिनारायणपर देथि तँ लगले नजरि निच्चाँ कऽ धरती देखए लगथि। मुस्कीआइत हरिनारायण कहलखिन-

"अपने दोसर बिआह कऽ लेल जाउ। जरूरी नै जे सभ औरत कुल्टे होइए। एहनो औरतक कमी नै जिनकामे मानवीय संवेदना गंगाक धार जकाँ सदिखन उमड़ैत रहै छन्हि। नारीक पहिल गुण मातृत्व छी, जेकरा प्रबल बनेबैले पुरुखक सहयोग जरूरी अछि। जखने अनुकूल परिस्थिति नारीक प्रति बनत तखने दुनियाँक रंग-रूप बदलल-बदलल बूझि पड़त।"

चाह पीब, विदा होइत उमाकान्त कहलखिन-

"अहाँक विचारसँ सहमत छी मुदा काजक भार अहाँपर।"

दुनू गोटे -उमाकान्त आ हरिनारायण- दू गामक। मुदा कोसे भरिक दूरी दुनूक बीच छन्हि। अपने गामक पच्चीस बर्खक यशोदियाक संतप्त जिनगी हरिनारायणक सोझहामे छन्हि। सोलह बर्खक देहरिपर जखनि यशोदिया पहुँचलि, अट्ठारह बर्खक गुणेश्वर, फूलक सुगंधकेँ भौरा जकाँ झपटि लेलक। जिनगीक हरिअर-हरिअर प्रलोभन देबाक संकल्प करैत, लोक-लाजसँ बँचैले, गाम छोड़ि दिल्ली चलि गेल। मुदा दिल्लीक सड़कपर जखनि दिन-राति बितए लगलै तखनि यशोदियाकेँ छोड़ि गुणेश्वर निपत्ता भऽ गेल। असकर यशोदिया बौआए लगली। हारि-थाकि यशोदिया एकटा कोठीक शरणमे गेलि।

आठ बर्खक पशुवत् जिनगी यशोदियाकेँ बदलैले बाध्य केलक। नव बाट ताकए लागलि। अपनाकेँ मृत बूझि एक राति सभ किछु छोड़ि पड़ा कऽ गाम आबि गेलि। गाम आबि हरिनारायणक पएर पकड़ि ताधरि कनैत रहलि जाधरि ओ बाँहि पकड़ि मनुखक जिनगी जीबैक भरोस नै देलखिन।

हरिनारायण परिवारमे यशोदिया रहए लगली। यशोदियाक मनमे तँ चैन आबि गेल मुदा हरिनारायणक बेचैनी बढ़ए लगलनि। समए पाबि, बिलटैत दू जिनगीकेँ जोड़ि एक परिवारकेँ लहलहाइत देखलनि। मनमे खुशी एलनि।

अखनि धरि उमाकान्त यशोदियाकेँ प्रोफेसर हरिनारायणक बहिन बुझै छला। यशोदियाक असली परिचए नै छेलनि तँए मनमे खुशी रहनि जे सभ्य परिवारक लड़की घरमे औती, जइसँ पहुलके जकाँ फेर परिवार अपन पटरीपर आबि आगू मुहेँ ससरए लगत।

दिन -लग्न- बेरागन छोड़ि हरिनारायण उमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“अखनि तँ बिआहक समए नै अछि तखनि...।”

“एक-एक दिन पहाड़ लगि रहल अछि। बिआहक जे कोनो बंधन अछि से काँच सूतसँ बान्हल जाइत अछि। जइसँ सदिखन टुट-फाट होइत रहैए। तँए दुनूक -पुरुख-नारी- हृदैक योग हेबाक चाही?”

हरिनारायणक प्रश्नसँ उमाकान्त गुम्म भऽ कहलखिन-

“समए आ परिस्थितिकेँ देखैत...।”

उमाकान्त यशोदियाक बीच सौने मासमे बिआह भऽ गेल।

❍❍

१९. पड़ाइन

पछुलका बाढ़िमे खेतक फसिल तँ धुआइए गेल जे मालो-जाल गामसँ उपटि गेल। अपनो दुनू बरदो आ महिंसो मरि गेल। जहिना जंगलक जानवरकँ मेघसँ खसैत पाथरक चोट छटपटबैत तहिना ऐ साल आन-आन किसानक संग अपनो भेल। बाधसँ लऽ कऽ घर धरिक दशा सहाज करै जोकर नै रहल। बाढ़ि अबिते खेतक धान डूमि गेल। मोटाइत-मोटाइत पानि आँगन-घरमे सलाढ़ लगि गेल। नारक टाल पानिक बेगमे भसि गेल। भुसकाँर खसि पड़ल जइसँ गहुमक भूसी भँसिआ गेल। आश्रमक घरक संग-संग मालो घरमे पानि पहुँच गेल। जहिना लाठीपर लाठी खाइत दशा होइत तहिना भेल।

चढ़िते कातिक आगिला खेतीले सभ सूर-सार करए लगल। मुदा खेतीक तँ प्रमुख अंग बरद छी। बिनु बरदे खेत जोताएत केना। अपनेटा गामक एहेन दशा नै, परोपट्टाक एक्के रंग दशा। किसानक बीच एक्के रंग समस्या पसरि गेल, जइसँ बँचल-खूचल माल-जालक दाममे आगि लगि गेल। बरदक दाम दोबर-तेबर भऽ गेल। एक तँ भेटैबला नै दोसर पैकार सभ जे बाहरसँ आनि-आनि बेचै ओकरो वएह हवा।

अपन इलाका छोड़ि दोसर इलाकासँ बरद कीनि अनैक विचार भेल। मुदा असगर-दुसगर आननाइओ भारी बूझि पड़ल। गाममे गप्प चलेलौं। एक्के-दुइए आठ-नअ गोटेक विचार भेल। जोड़ा किननिहार तीन गोटे भेलौं। बाँकी छबो- गोटे पल्ले-पल्ला किननिहार। हुनका सबहक विचार जे एकटा बरदसँ हर नै जोतल जाएत मुदा जोड़ा लगा लेलासँ भजैती नीक रहत। बेजोड़ बरद रहने एकटाकेँ बेसी भीड़ होइ छै आ एकटाकेँ कम, जइसँ साले भरिमे बरद टूटि दाम बुड़ा दइ छै।

तेसर दिन नअ गोटे लौकहावाली गाड़ी झंझारपुर हॉल्टपर पकड़लौं। साढ़े बारह बजे लौकहा स्टेशन उतरि मेन रोड छोड़ि धनबदहेक उत्तर मुहेँ रस्ता पकड़लौं। कखनि सीमा टपलौं से बुझबे ने केलिऐ। एक्के रंग बाध आ बाधक उपजा। नम्हर-नम्हर बाध, खेतमे लहलाहइत धान। दुधाएल धानक सीस जइसँ जहिना धानक गाछक रंग तहिना सीसोक। ऊँचगर-चौड़गर

खेतक आड़ि, जैपर फुलाइतो आ छीमीओ भेल राहड़ि। टाट जकाँ राहड़िक गाछ खेत सबहक परिचए करबैत। अपन सभ जकाँ चनकी राहड़िक गाछ नै, मझोलका गाछ। खेसारी छिटैत एक गोरेकेँ पुछलिऐ तँ कहलक जे ऐ दिगारमे बेसी पये (पाया) राहड़ि होइ छै। धानोक संग-संग अगहनेमे कटाइ छै। सोहरी लगल घुरछा-घुरछे फड़ल। छीमीओ नम्हर। कोला-कोली गिरहस्त खेसारी, मसुरी छिटैत। आड़ि सभपर जेरक-जेर ढेरबा-सँ-सिआन धरि घसवाहिनी घास छिलैत। उपजा देखि माटि निहारलौं तँ सोलहन्नी खसिआइ माटि (कारी माटि) बूझि पड़ल। माटि देखि मन गद्‌गद् भऽ गेल। मुदा अपन इलाका मन पड़िते मन तिता गेल। कमला-कोसीपर खौंझ उठल। दुनू तेहेन हेहर अछि जे इलाकाक माटिकेँ बिगाड़ि देलक। बालु भरि खेतकेँ बलुआह बना देलक। रस्ताक पछबारि भाग एकटा नमगर-चौड़गर परतीपर पचासो महिंस चरैत देखि मन खुशी भऽ गेल। चरवाह सभ महिंसकेँ अनेर चरैले छोड़ि अपने सभ खेलाइत। खेलो अजगुत, ठेंगा-ठेंगा। कनी अँटकि देखए लगलौं। एकटा सीमा -चेन्ह- देने। ओइ सीमापर सँ रागक तर देने उनटि कऽ दुनू हाथे ठेंगा फेकैत। जेकर ठेंगा जेते दूर जाए ओ ओते सुरक्षित। जेकर लग रहै ओ हारै। जे हारै ओकरा घुघुआ -पीठ- पर चढ़ि ठेंगा लग तक जाए। फेर दोहरा कऽ खेल शुरू होइ। गोबरबिछनी सेहो बैस कऽ खेल देखैत। कोनो औगताइ रहबे ने करै। तीनिए चारि गोरे रहए, पथियामे केते अँटितै। जहिना एकाधिकार पूजीपतिक कारोबार निचेनसँ चलैत, कोनो प्रतियोगिता रहबे ने करैत, तहिना पचास महिंसक गोबरक बीच तीनू-चारू गोबरबिछनी। मुदा एकटा देखलिऐ जे एकबेर एकटा महिंस धानक खेत दिस बढ़ए लगलै तँ एक गोरे माने एकटा ढेरबा गोबरबिछनी उठि कऽ महिंस घुमा देलकै।

कोसक अन्दाज आगू बढ़लौं तँ हाट लगल देखलिऐ। समैओ चाइरिक करीब भऽ गेल। मनमे भेल जे कोनो ठेकानल जगहपर थोड़े जाइक अछि जे अबेर हएत। जखनि एलौं तँ देखैत-सुनैत जाएब। हाट देखए बढ़लौं। गमैया हाट। कट्ठा डेरहेक परतीपर लगल। तीन-चारि पल्लाबला दू-तीनटा अन्न-पानिक दोकानदार, दस-बारहटा तीनम-तरकारीक, एक-एकटा माछ-मासुक दूटा झिल्ली-कचड़ी-मुरहीवाली, एकटा मनिहारा, एकटा माटिक बर्त्तन, एकटा

छिट्टा-पथियाक, एकटा चाहक दोकान आ एकटा पान-बीड़ीक। मुदा खरीदारी बढ़ियाँ होइत। अन्दाज केलौं तँ बूझि पड़ल जे जेते किननिहार अछि ओतबे समानो आ बेचिनिहारो। चाहक दोकानपर बैस चाह दइले दोकानदारकेँ कहलिऐ। चूल्हिक छाउर झाड़ि, डोमौआ बीअनिसँ हौंकि, चूल्हिपर केटली चढ़ौलक। दोकानदारसँ पुछलिऐ-

"हाट सभ दिन लगैए?"

दोकानदार कहलक-

"ऐ पँचकोसीमे चारिटा हाट लगै छै। सोम आ शुक्रकेँ ई हाट लगैए। रवि आ बुधकेँ बिस्टौल लगै छै, मंगल आ वरसपतिकेँ चिकना आ शनि-मंगलकेँ परसा।"

चाह बनल। सभ कियो पीब दोकानदारकेँ पाइ दऽ विदा भेलौं। अपने गाम जकाँ गामो, अपना सबहक तँ पोखरि-इनार या तँ बालुमे भोथा गेल वा मरने भऽ गेल अछि, ओइ सभमे अखनो अछिए। गोटि-पंगरा ईंटाक घर। रस्ता-पेरा कच्चीए। उत्तरे-दछिने गाम सभ। जइसँ आगि-छाइसँ सुरक्षित। जौं केतौ पुरबा-पछबामे आगि लगबो कएल तँ कम घर जरल। जहिना गाम उत्तरे-दछिने तहिना अँगनो सभ। अपने सभ जकाँ लोकोक बगए-बानि आ बोलीओ। जइसँ अनभुआर जकाँ बूझिऐ ने पड़ए। गोसाँइ लूक-झूका गेला। जहिना पछबा सबेर-सकाल अपन बोरा-बिस्तर समेटि लैत तहिना ने परदेसीओकेँ सबेर-सकाल ठौर पकड़ि लेबाक चाही। मनमे उठिते अँटकैक गर लगबए लगलौं। एक गोटेसँ पुछलिऐ-

"कोन गाम छी?"

"रोहितपुर।"

मुदा कोनो निश्चित गाम तँ जेबाके नै छल जे दोहरा कऽ पूछितिऐ। तैकाल एक गोरेकेँ दोसर गोरे सोर पाड़लक-

"मधेपुरबला हौ, हौ मधेपुरबला। कनी एम्हर आबह।"

मधेपुर सुनि मन चौंकल। मुदा लगले असथिर भऽ गेल। नाम-गामक कोनो ठेकान अछि। एक-एक नामक केतेक लोको आ केतेक गामो होइए।

मुदा मनमे तैयो घुरियाइते रहि गेल। मधेपुरबलाक घर पुबारि भाग रस्ताकातेमे। घास झाड़िते मधेपुरबला उत्तर देलक-

“हाथ लगल अछि, लगले अबै छी।” कहि घास झाड़ब छोड़ि मधेपुरबला उत्तर मुहेँ विदा भेल। लगमे अबिते पुछलिऐ-

“कोन मधेपुर रहै छी?”

गामक नाओं सुनि बाजल-

“अहाँ सभ केतए रहै छी?”

कहलिऐ-

“हमहूँ मधेपुरे रहै छी। तँए पुछलौं।”

मधेपुर सुनि ओ चौंक गेल। जेना किछु भेट गेल होइ तहिना। मुस्कीआइत बाजल-

“झंझारपुरसँ पूब-दछिनक जे मधेपुर छै, ओही मधेपुर रहै छी।”

अपन मधेपुर सुनि हमहूँ हँसैत बजलौं-

“हमरो सबहक घर तँ ओही मधेपुर अछि।”

हमरा सबहकेँ दरबज्जापर बैसबैत बाजल-

“लगले अबै छी। ओइ वेचारा ऐठाम पाहुन सभ औत डेढ़िया परहक टाट लगौत ओकरे गर धरौने अबै छी। हमर भाग जे गौआँ-घरूआ सभ एला।”

अपन भेटैत ठौर देखि कहलियनि-

“हँ, हँ भेल, आउ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छै।”

काजक बोझसँ अपनाकेँ लदल देखि चेथरू रस्तेपर सँ सोर पाड़ि पत्नीकेँ कहलक-

“लगले अबै छी। ताबे अहाँ एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा आनि पएर धोइले दियनु।” कहि चेथरू आगू बढ़ल। भरि बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा नेने चमेली दरबज्जापर आबि पुछलनि-

“बौआ, अहाँ सबहक घर केतए अछि?”

कहलियनि-

“मधेपुर।”

जहिना अनचोकमे देहपर खढ़ो गिरिते लोक चौंक जाइए तहिना मधेपुर

सुनि चमेली चौंक गेली। अदहा मुँह झँपैत बजली-

“औक्सी महादेव मंदिरसँ थोड़बे हटि कऽ हमरो नैहर अछि।”

चमेलीक बात सुनि दूभिक मुहसँ छोड़ैत नव पत्ती (पात) जकाँ हृदैमे भेल। अपन तीस बरख पहुलका जिनगीमे ओ -चमेली- डूमि गेली। मुँह शिथिल भऽ गेलनि, जइसँ किछु आगूक बकार नै निकललनि। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथि लेल घरवारीक रहब अनिवार्य बूझि खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहली। बेरा-बेरी हमहूँ सभ पएर धोइ-धोइ चौकीपर बैसए लगलौं। जहिना देवालयमे दर्शकक नजरि एकाएकी मुरती सभपर पड़ैत तहिना चमेलीक आँखि हमरा सभपर नाचए लगलनि।

घूमि कऽ अबिते चेथरू पत्नीकेँ कहलखिन-

“जलखै नेने आउ। रस्ताक झमाड़ल सभ छथि। भूख लगल हेतनि।”

हमहूँ सभ बेरा-बेरी कुर्रा कऽ बैसलौं। चंगेरा भरि मुरही, नोन-मिरचाइ आँगनसँ आनि चमेली बीचमे रखि देलनि। जलखै देखि चेथरू बजला-

“अहाँ सभ जाबे जलखै करब ताबे छिड़िएलहा काज सभ समेटि लइ छी।” कहि एकटा छिट्टा आ हँसुआ नेने वाड़ी दिस चेथरू आ आँगन दिस चमेली बढ़ली। कातिक मास रंग-बिरंगक तरकारीसँ सजल चौमास। बिना तजबीज केनहि चेथरू आठो-नओ रंगक तरकारीक छिट्टा आँगनमे रखि, लगमे आबि बैसला। बैसिते कहलियनि-

“अपन इलाकाक जहिना खेती-पथारी उपटि गेल तहिना मालो-जाल। मुदा बिना बरदे खेती केना करितौं। तँए एलौं। सुनै छी जे ऐ इलाकाक लोक अपना इलाकाबलाकेँ कहै छथि जे अपन कमाएल रूपैआ लऽ कऽ एलौं आकि बाप-दादाक, से ठीके छिऐ?”

हमर बात सुनि चेथरू तरे-तर हँसए लगला। मुदा अपनाकेँ दुनूठामक पाबि कनीकाल गुम रहि बजला-

“खिस्सा-पिहानी अहिना लोक जोड़ती-जोड़ि बना लइए। एहनो-एहनो बात हुअए। कोनो धरती कर्मभूमिसँ धर्मभूमि बनैए। देखै छी जे गामोमे दिल्ली-बम्बइसँ घूमि कऽ आएल कनियाँ सभ अतिथि-अभ्यागतकेँ ओतुक्के चालि-ढालिसँ स्वागत करै छथि तँ एहनो सभ छथि जे केरल-मद्रासमे रहितो

गाम-घर जकाँ स्वागत करै छथि। हम-अहाँ भैयारी भेलौं। तँए भैयारी जकाँ दुख-धंधाक गप-सप्प करू।''

चेथरूक विचारसँ मन खनहन भऽ गेल। हृदए बाजि उठल जे सहारा भेटल। अखनि तँ धान फुटबे कएल, जखनि पाकत तँ बीओ-बालि लऽ जाएब। ऐठामक बरदो अपना ऐठामक बरद तँ सक्कतो होइ छै आ बेसी दिन जीबो करै छै। अपना ऐठामक माल गदियाह भऽ गेल। ऐठामक जमीनक माल निरोग अछि। चुप्पा-चुप्पी देखि पुछलियनि-

''अहाँ केना ऐठाम आबि गेलौं?''

हमर बात सुनि चेथरूक मन पसीज गेलनि। गपकेँ आगू नै बढ़ा बजला-

''भानसो भऽ गेल हएत। अहूँ सभ थाकल छी। जखनि बरद किनए एलौं तँ हेबे करत। कोनो की अनतए एलौं। अपन घर छी। पाँच दिनमे इलक्को घुमा कऽ देखा देब। मन मोताबिक बरदो कीनि देब।''

चेथरूक बात सुनि हुँहकारी भरैत बजलौं-

''हँ, हँ, से तँ ठीके। देस-कोस ने बदलैए। मनुख तँ मनुक्खे रहैए किने।''

खेला-पीला पछाति संगी सभ नीनसँ सुति रहला। मुदा अपना नीने ने हुअए। अदहा घंटा बाद चेथरू खा-पी, मालक घरक घूर सेरिया, खाइले दऽ बरका बाटीमे शुद्ध तोड़ीक तेल नेने आबि बजला-

''सुति रहलौं।''

आरो गोटेक साँसे कहैत जे सूतल छी। बजलौं-

''नै, जगले छी।''

हमरा लग आबि चेथरू तेलक बाटी बढ़बैत कहलनि-

''थाकल-ठेहियाएल छी, पएरमे तेल औंसि लिअ।''

दहिना हाथ तेलमे डूमा बजलौं-

''भऽ गेल। एकरे मिला लइ छी। रखि दियौ।''

एकेठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलियनि-

''ऐठाम एला केते दिन भेल?''

कनीकाल चुप रहि चेथरू बजला-

“जहिना बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक (टिप्पणि दुआरे) बेटा-बेटीक जनमोक ठेकान नै रहैत तहिना हमहूँ छी। अंदाज पच्चीस बर्खसँ ऊपरे भेल हएत?”

“ऐठाम बेसी नीक लगैए आकि ओइठाम, मधेपुरमे?”

“प्रश्न सुनि चुप भऽ गेला। जहिना दुबट्टी-तिनबट्टीपर पहुँच अपन रस्ता लोक हियाबए लगैत तहिना चेथरूओ हियाबए लगला। उठि कऽ तमाकुल थुकड़ि आबि बैस बाजए लगला-

“जेतए बसी वएह सुन्दर। भने अखनि दुइए भाँइ जागल छी। अपन गाम मन पड़ैए तँ छाती दहलि जाइए। बाबाक रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। बाबाक कहल सभ बात तँ मन नै अछि मुदा गोटे-गोटे मन अछि। कहने छला जे केना अपन गाम बसल आ अखनि धरि केना परिवार चलैत रहल। दैवी चक्र एहेन चलल जे बिगड़ैत-बिगड़ैत एते बिगड़ि गेल जे बास होइ जोकर नै रहल।”

कहैत-कहैत हुचकी उठए लगलनि। गरा -कंठ- बाझए लगलनि। चुप होइत देखि पुछलियनि-

“से की? से की?”

आँगुरसँ अपन मौसाक घर दिस देखबैत बजला-

“हमरा अबैसँ पहिने ऐठाम मौसा एला।”

मौसाक नाओं सुनि पुछलियनि-

“ओ किए एला?”

चेथरू-

“आब तँ अपने नै छथि, बेटा छन्हि। वएह ऐठामक गाम-परधान छी। ओकरा दुआरपर पाँचटा धरम बखारी (धान रखैबला) छै। सौंसे गौआँ बेर-बेगरता लेल धान जमा केलक। साले-साले बढ़बैत गेल। अखनि तेते जमा भऽ गेल अछि जे जेकरा (गामक लोककेँ) जेते बेगरता होइ छै ओ ओते लइए आ पीठक-पीठ आपस करैए।”

मुहसँ निकलि गेल-

"वाह! अच्छा, ओ किए एला?"

चेथरू-

"मौसाकेँ अनटेटल गप आ अन्ट-सन्ट काज पसिन्न नै छेलनि। सोभावे ओहने छेलनि। जेकरा चलैत चारि-पाँच बेर गौआँ सभ मारलकनि। अंतिम मारिमे बेसी चोट लगलनि। मन टूटि गेलनि। जहिना एक घटनासँ कियो वैरागी बनि जाइत तँ कियो अपराधी, कियो निरमोही बनि घर-परिवार छोड़ि दैत तँ कियो सिंह सदृश गर्जन करैत रहैए, तहिना गामक मोह छोड़ि खेत-पथार बेचि चलि एला।"

"अहाँकेँ की भेल?"

"कोनो एक्के गाम ओहन अछि। हमर गाम तँ आरो बेसी बिगड़ि गेल। एक दिस महाजनक अतियाचार तँ दोसर दिस खेत-पथारक बेइमानी-शैतानी। बलजोरी अपन नम्हर खेतमे छोटका खेतक आड़ि तोड़ि जोइत लैत। तहिना चोराइओ आ देखाइओ कऽ खेतक जजात गाए-महिंससँ चरा लैत। आम तोड़ि लैत, दोसराक माए-बहिनक इज्जत-आबरूपर हाथ बढ़बैत तँ आगि-पानि ढाठि भागैले उड़ी-बिड़ी लगबैत। सेन्ह काटि-काटि घरक वस्तु-जात लऽ भागैत तँ बिना किछु बजनौं दसटा बात-कथा कहि दैत।"

चेथरूक बात सुनि, जहिना भुम्हुर आगिक धुआँ निकलैए तहिना लहरल हृदैक गर्म सांस निकलल। पुछलियनि-

"शुरूमे (एलापर) तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?"

"नै। अपना तीन कट्ठा खेत रहए। दू सए रूपैए कट्ठा बेचि लेलौं। घरो बेचि लेलौं। खाली अपन देहक कपड़ा आ रूपैआ लऽ कऽ मौसे ऐठाम एलौं। वएह दस कट्ठा खेतो कीनि देलनि, एकटा घरो बना देलनि आ कहलनि जे जइ चीजक बेगरता हुअ, से लिहऽ। घरक बिचला खुट्टा जकाँ ठाढ़ भऽ गेला। आब तँ अपने सभ किछु भऽ गेल। जाबे सासु-ससुर जीबै छला ताबे सासुर जाइ छेलौं, मामा-मामी धरि मात्रिक। बहिन-बहनोइ ऐठाम जाइते छी। ओहो सभ अबिते अछि।"

चेथरूक बात सुनि मन औनाए लगल। कछ-मछी आबि गेल। कहलियनि-

“नीनसँ देह भँसियाइए। बड़ राति भऽ गेल। अहूँ सुतैले जाउ।”

“एतै ने हमहूँ सूतब।”

पाँच दिन मेहमानी केलौं। छठम दिन बरद नेने गामक रस्ता धेलौं।

❍❍

२० केतौ ने

चारि-पाँच बर्खसँ जनकपुरक बिआह पंचमी देखैक विचार मनमे उठैत रहल मुदा माए कहै छेली, 'अखनि बाल-बोध छह केतौ हरा-तरा जेबह।'

माएक बात नीक नै लागए। हुअए जे जहिना गाम-घरमे लोक नै हराइए तहिना ओतौ किए हराएत? ई नै बुझिऐ जे ओइठीम दूर-दूरक लोक देखए अबैए, जइसँ भीड़-भाड़ बढ़ि जाइ छै। भीड़े-भाड़मे बालो-बोध आ चेतनो हराइए। चौदहम बर्ख टपिते पनरहमक शुरूएमे अगहन इजोरियाक पंचमी आएल। गामक लोकमे मेला देखैक सुन-गुनी शुरू भेल एक्के-दुइए सौंसे गाम पसरि गेल। एक गामक कोन बात सगतरि भेल। हमहूँ सुनलौं। माएक बात मन पड़ल। भलहिं भोँट खसबै जोकर नै भेलौं मुदा बालो मजदूर जोकर तँ नै रहलौं। हराइओ जाएब तँ की हेतै? अपन खेबा-खरचा ने तीने दिनमे सधि जाएत मुदा तैयो तँ कमाइत-खटाइत, खाइत पीऐत दस दिन पछातिओ तँ आबिए जाएब। आशा जगल। बिसवास बढ़ल। माएकेँ कहलियनि-

> "गामक लोक उनटि कऽ जा रहल छथि, हुनके सभ सेने हमहूँ जाएब।"

माए किछु बजली नै। एतबे बजली-

> "नुआ-बस्तर खीच लिहऽ।"

माएक बात सुनि बिसवास भऽ गेल। मनमे उठल, टिकुला बीआ जकाँ थोड़े खिच्चा छी, भलहिं पाकल जकाँ सक्कत आँठी नै भेलौं मुदा कोशाएल जकाँ तँ जरूर सकता गेल छी।

अगुआएल-पछुआएल दुआरे गामक बीच यात्रीक गिनती नै भेल। ओना गिनतीक महत बुझबो ने करिऐ। गामक सिमानपर पहुँचिते अगिला यात्री रूकि कऽ पछिला सभकेँ हाथक इशारासँ शोरो पाड़थिन आ आँखि उठा-उठा देखबो करथिन। हमहूँ पहुँचलौं। पतराइत रस्ता देखि गिनती हुअ लगल। मर्द-औरत मिला सताइस गोरे भेलौं। गिनतीमे सभसँ उमेरगर सुचितादादी

रहथि। बजली-

"सभ कियो सुनि कऽ कान धरब। तीर्थ-वीर्त करए जाइ छी तँए रस्ता-पेरामे केकरो कोनो चीज-बौस नै छुबै, झूठ-फूस बाजि केकरो ठकबै नै। भाए-बहिन जकाँ सभकेँ बुझबै आ कियो अगुआ-पछुआ जाएब तँ ठाढ़ भऽ कऽ संग करैत चलब।"

दादी गप्पक असरि भेल। सभसँ कम उमेरक रही। बिना कहने-सुनने कफलाक टहलू बनि गेलौं। दादीकेँ कहलियनि-

"दादी, अपना कम्मे समान एक अढ़ैया चूड़ा आ कपड़ा झोरामे अछि, अहाँकेँ भारी लगैत हएत, लाउ नेने चलै छी।"

बात सुनि दादी छिट्टा भरि असिरवाद दैत अपन मोटरी देलनि। मोटरीक संग दादी अपन पुरना खेरहा सभ कहैत चलए लगली-

"बौआ, अहिना कुशेसर जाइत रही। तीन बर्खसँ नियारैत रही घरमे गाएक घीउ पड़ल रहए। केना चौदह कोस डेरहे दिनमे चलि गेलौं से बुझबे ने केलिऐ। तइ दिनमे समरथाइओ रहए।"

"केतए-केतए गेल छिऐ दादी?" पुछलियनि।

कनीकाल गुम रहि मन पाड़ि बाजए लगली-

"अपन गामक तीनू स्थान- दछिनमे कुशेसर, पूबमे सिंहेसर आ उत्तर-पच्छिम जनकपुर बीचमे पड़ैए। कनीए रस्ताक तरपट हेतै। हँ, तँ कहए लगलिअ, अहिना आठ-नअ गोटेक कफलामे सिंहेसर स्थान विदा भेलौं। अखनि तँ चढ़न्त जाड़ अछि मुदा शिवरातिक समए जाड़ फटए लगै छै। सबहक विचार भेल जे घोघरडीहा तक टेनसँ जाएब, फेर सुपौल तक पएरे जाएब आ सुपौलसँ बस पकड़ि जाएब।"

बिच्चेमे पुछलियनि-

"कोसी धार सेहो टपए पड़ल हएत किने?"

"हँ, हँ। पहिने टेनक बात सुनि लैह। जखनि गाड़ीमे चढ़लौं तँ खाली सीट सभ देखलिऐ। दुनू कातक सीट मिला कऽ तीन-चारि गोरे बैसल रहै। हमरो सभकेँ जगह भऽ जाएत। मुदा तेहेन ऐंठल सभ रहए जे नहियेँ बैसए देलक। पुरुख सभसँ मुँह केना लगबितौं। सभ स्त्रीगणे रही।"

"किए ने बैसए देलक?"

“तेहेन-तेहेन छुद्दर पुरुख सभ भऽ गेल अछि जे केकरोमे पुरुखपाना छइहे नै। अपना एठीनक पुरुख अनको माए- बहिनकेँ अपन बुझैए। ओइ इलाकाक थोड़ै बुझै छै। ठाढ़े भेल घोघरडीहा तक गेलौं। निच्चाँमे बैसबो करितौं से तेते सिकरेट-बीड़ीक अधजरुआ टुकड़ी आ चिनियाँ बदामक खोंइचा रहै जे बैसैक परपन नै भेल।”

“मोटरी की केलिऐ?”

“मथेपर रखने गेलौं। ऊपरका सीटपर गेंड़ा जकाँ दूटा मुनसा सूतल रहै किन्नो नै मोटरी रखए देलक। जखनि कोसी धारमे नवपर चढ़लौं तखनि फेर घटवारक संगे कहा-कही हुअ लगल। मुदा बाबापर सुरैत लगा कहुना पहुँच गेलौं।”

स्टेशन पहुँचिते गप-सप्प बन्न भेल। गाड़ी आएल। सभ कियो चढ़ि गिनती कऽ जयनगर पहुँचलौं। जयनगर प्लेटफार्म यात्रीसँ भरल। तिल रखैक जगह नै। मुदा एते बिसवास भऽ गेल जे एते दूर देखलो भइए गेल। आब तँ बालो-बोध नहियेँ छी जे बिसरि जाएब। जौं कहीं छूटिओ जाएब आकि हराइओ जाएब तैयो घूमि कऽ गाम चलिए जाएब।

नेपालक गाड़ीओ छोट आ इंजिनो कमजोर मुदा तैयो निच्चाँ-ऊपर लादि यात्रीकेँ पहुँचाइए दैत अछि। गाड़ीमे चढ़ै-दुआरे केते यात्री एक स्टेशन पएरे चलि उनटामे चढ़ि पहुँचै छथि। मुदा सीमा कखनि टपलौं से बुझबे ने केलौं। लोको एक्के रंग आ बोलीओ तहिना। जनकपुर पहुँच गेलौं।
यात्री देखि मन उधिया गेल। मन मानि गेल जे ऐ भीड़मे केतौ जरूर हराइए जाएब। मुदा लोकक भीड़मे लोक अपनाकेँ हराएल केना बूझत। सभ तँ लोके छी। सबहक मुँहमे बोलो अछिए। सभ तीर्थे करए आएल छथि तखनि हराइक प्रश्न केतए? मुदा तैयो मन थरथराइते रहए। फेर भेल जे हराएब तखनि ने, आ जौं नै हराइ। तइले अनेरे चिन्ता किए करै छी। खाइत-पिऐत एक फेरा लगबैत तीन बजि गेल। बिआहक प्रकरण तँ रातिमे हएत मुदा बिआह होइक कारण तँ धनुष टुटब अछि। तँए पहिने धनुखा जेनाइ उचित हएत। घुमैत-फिरैत एकठीम बैस सभ विचारए लगलौं। बिआह प्रकरण देखए एलौं अखनि धरि बरियातीओ पछुआएले अछि। पछुलके धरमशल्लामे अँटकल अछि। ऐठाम अबैमे चारि-पाँच घंटा लगत। से नै तँ अपनो सभ ताबे

धनुखासँ भऽ आबी। एक स्वरमे विचार भेल। बसक भाँजमे विदा भेलौं। सभ आगू-आगू हम आ दादी पाछू-पाछू। यात्रीकेँ देखबैत दादी बजली-

"बौआ, तूँ ने अखनि तक दोसर कोनो स्थान (तीर्थ) नै गेल छह। मुदा हम तँ बहुत ने देखने छिऐ।"

एते बात सुनिते मनमे भेल जे दादी कोनो ठेकनगर बात कहए चाहै छथि। हुँहकारी दैत कहलियनि-

"हँ से तँ ठीके। अखनि हमरा भेबे की कएल, जनमि कऽ ठाढ़ भेलौं हेन।"

आगू दादी बजली-

> "देखहक ई स्थान भगवान राम आ सीताक छियनि। अयोध्यावासी राम आ मिथिलाक जनकक कन्या सीता तँए दुनूक मिलन स्थल छी। तँए देखै छहक जे सभ रंगक यात्रीओ अछि आ स्त्रीगण-पुरुखमे बेरौल हेतह जे पुरुख बेसी अछि आकि स्त्रीगण। तहिना देखै छहक जे सभ रंगक मुँह-कानबला यात्री अछि। केकरो मान-अपमानक बात अछि। मुदा आन-आन स्थानमे से कहाँ देखबहक। जहिना एकचलिया लोक तहिना एकचलिया चालि।"

मैक्सीपर बैस सभ धनुखा विदा भेलौं। घंटा भरि लगैत-लगैत धनुखा पहुँच गेलौं। गाड़ीक ड्राइवर आ खलासी उतरि देखबए विदा भेल। मंदिरक हाताक भीतर पहुँचिते ड्राइवर बाजल-

> "भगवान राम जे धनुष तोड़लनि ओ तीन टुकड़ी भऽ गेल। एक टुकड़ी एतै खसल। सएह स्थान छी। देखै छिऐ धनुषेक टुकड़ी छिऐ किने?"

दर्शन केलौं। सबहक विचार भेल जे बिना किछु खेने-पीने आ सनेस नेने केना जाएब। हमहूँ चाह पीब पान खेलौं आ हनुमानी बद्धी कीनि कऽ गरदनिमे पहिरि लेलौं। किरिन डूमि गेल। मुदा केकरो औगताइ नै। किएक तँ घंटा भरि जाइमे लागत आ आठ बजेमे बरियाती दुआर लागत।

गाड़ी चलल। करीब चारि माइल आगू बढ़ल आकि अपने ठाढ़ भऽ

गेल। पंचमीक चान, ओसेसँ घेराएल। झल-अन्हार। गाम-घर केतौ ने देखिऐ। बीच पाँतरमे गाड़ी रूकल। ड्राइवरो आ खलासीओ रिन्च-हथौरी निकालि ठोक-ठाक शुरू केलक। हमहूँ सभ गाड़ीसँ उतरि देखए लगलिऐ। ठोकि-ठाकि ड्राइवर गाड़ीमे बैस चलबए चाहै तँ चलबे ने करए। फेर उतरि कऽ ठोकै मुदा फेर ओहिना होइ। समए बितल जाए। मोबाइल देखि ड्राइवर बाजल-

"आठ बजल।"

दुआर लागबक समए बूझि सुचितादादी बजली-

"केतए एलौं, तँ केतौ ने?"

मन हुअए जे कहिऐ- पाइ घुमा दए। दोसर गाड़ीसँ चलि जाएब। इजोरीओ डूमि गेल। दिसम्बरक अंतिम समए तँए जाड़ो बढ़ैत जाए। मुदा सभकेँ ओढ़ना रहबे करै, ओढ़ि लेलौं। होइत-हबाइत भोरमे गाड़ी ठीक भेल। घूमि कऽ जनकपुर एलौं। ताबे बिआहक सभ प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल छल। रतुका जगरनासँ यात्रीओ सभ ओंघाएल। हमहूँ सभ तहिना रही।

यात्री सभ ट्रेन पकड़ि घुमए लगला। हमहूँ सभ नहा कऽ एकबेर सौंसे मेला घूमि, डोरि-सिनुर आ सनेस कीनि आबि खेनाइ खेलौं आ गाड़ी पकड़ैले विदा भेलौं। भरि बाट दादी रटैत रहली-

"केतए एलौं तँ केतौ ने। केतए एलौं तँ केतौ ने। केतए एलौं तँ केतौ ने।"

❍❍